RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अगस्त 2024
डाक प्रेषण तिथि : 29 अगस्त-01 सितंबर 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 10
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

टारें पाप अठारह का घेरा,
तभी मिटे जन्म-मरण का फेरा।
पर्व पर्युषण पर अभयदान दें,
मैं बनूँ 'राम' और सब साथ चलें।।

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

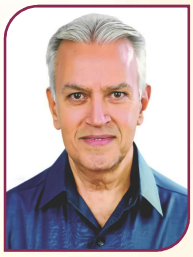

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

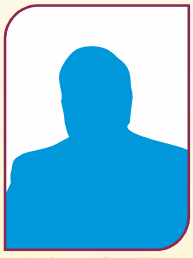

स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

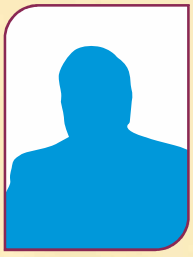

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

स्व. श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732

श्री अनिलजी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. 127002

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

श्रीमती संतोषदेवी मोदी
भिलाई
MID No. 135692

श्री कमलजी बैद
मुंबई
MID No. 141022

श्री विजयजी (कमलादेवी)
गोलछा–बीकानेर
MID No. 127729

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

श्रीमती मनोरमादेवी बैद
रायपुर
MID No. 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. 160383

चतुर्थ चरण

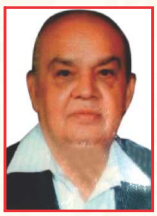

श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. 129491

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर * श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा-डोंगरगाँव * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़ - इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा - भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा * श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई * श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * गुप्त-बंगईगाँव * श्री सुंदरलाल जी पींचा-गुवाहाटी * श्री अमरचंद जी बैद-नोखा * श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन * श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई * श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर * श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर * श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला * श्री लीला देवी बंब-चेन्नई * श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़

आत्मीय अनुरोध : दानपेटी योजना

समस्त स्थानीय संघों के अध्यक्ष, मंत्री, प्रतिनिधि एवं दानपेटी योजना के स्थानीय प्रभारियों से निवेदन है कि आपके क्षेत्र में आयोजित होने वाले विभिन्न अवसरों पर दानपेटी में नियमित दान डालने की प्रभावना अवश्य करें।

दानपेटी योजना का बैनर PDF फाइल के रूप में सभी संघों को भेज दिया गया है। इस PDF फाइल से 3×4 फीट साइज का बैनर मुद्रित करवाकर इसे ऐसे स्थानों पर लगाएँ, जहाँ सभी को दृष्टिगोचर हो सके। महत्तम शिखर महोत्सव वर्ष में पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर सितंबर माह में दान पेटी से प्राप्त राशि संग्रहित कर केंद्रीय श्रीसंघ को समर्पित करें। केंद्रीय संघ का बैंक खाता विवरण साथ ही अंकित है। राशि जमा करवाने के पश्चात् जमा की सूचना बैंक विवरण के साथ में दिए गए केंद्रीय कार्यालय के मो.नं. पर अवश्य देवें।

बैनर हेतु QR कोड स्कैन कर सकते हैं। इस संबंध में अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु दानपेटी योजना के संयोजक के मो.नं. 9414115164 पर संपर्क करें।

–दानपेटी योजना टीम

Scan the QR Code for Banner

SCAN & PAY

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh
State Bank of India
A/c No. : **31264126681**
IFSC Code. : **SBIN0003401**
Branch : **GS Road, BKN**
Mob. No. : **7073311108**
Email : **accounts@sadhumargi.com**

राम चमकते भानु समाना

हार्दिक क्षमायाचना

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ।।

रत्नत्रय के महान आराधक **परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, **उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.** के चरणों में वंदना। महान पुण्यवानी के उदय और आचार्य भगवन् की महत्ती कृपा से संघ सेवा का अनुपम अवसर मिला है। विगत वर्ष में हमारे द्वारा संघ का कार्य करते हुए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जाने-अनजाने में किसी कार्यप्रणाली, शब्द या व्यवहार से किसी भी सदस्य के निर्मल मन को ठेस पहुँची हो, आहत हुआ हो तो हम मन, वचन, काया से आप सभी से क्षमायाचना के भावों के साथ निवेदन करते हैं कि आप सरल हृदय व उदार मन से क्षमा प्रदान करने का कष्ट करें।

मिच्छा मि दुक्कडं

क्षमा करना और क्षमा माँगना, सरल हृदय के भाव हैं,
अपना-पराया, जीव-अजीव सभी मेरे समान हैं।

वैरभाव नहीं रखूँ किसी से, ना ही कोई मुझसे रखे,
हाथ जोड़कर माँगू क्षमा, सभी वीर क्षमादान करें।।

:: क्षमाप्रार्थी ::

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
श्रमणोपासक टीम

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ. भा. सा. जैन संघ)

कर्मों का क्षमन - करे शुद्ध प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण

प्रथम चरण	1 अगस्त - 20 अगस्त (पूर्ण)	इच्छामि णं भंते - 18 पापस्थान
द्वितीय चरण	21 अगस्त - 10 सितम्बर	इच्छामि खमासमणो - 6 अणुव्रत
तृतीय चरण	11 सितम्बर - 30 सितम्बर	7 अणुव्रत - तस्स धम्मस्स
चतुर्थ चरण	1 अक्टूबर - 20 अक्टूबर	5 पदों की भाव वंदना - अंतिम पाठ
पंचम चरण	21 अक्टूबर - 10 नवंबर	संपूर्ण प्रतिक्रमण विधि सहित

SCAN ME

घर घर प्रतिक्रमण
हर घर प्रतिक्रमण

महिला समिति पुन: लेकर आ रही है
आपके लिए प्रतिक्रमण प्रतियोगिता

Helpline Number -
9303208800, 8770813715

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह....... 08
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला....... 12
भक्ति रस : क्षमा धर्म का प्राण है....... 14
श्रमणोपासक हेडलाइंस....... 15
भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार....... 16
अपने आचार्यदेव को जानें....... 31
विविध समाचार....... 35
विविध भेंट मार्फत....... 43
विनम्र श्रद्धांजलि....... 49
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति....... 55
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ....... 62
सज्झायं : प्रश्न-पत्र....... 65

सुविचार

मनुष्य जन्म

मनुष्य जनम, सब भवों में बताया श्रेष्ठ।
देवता भी तरसते, नर भव पाने को।।
भव कई बीत जाते, तब नर भव पाते।
सोचो कुछ भव्यों, अब सफल बनाने को।।
कल्पवृक्ष कामदुहा, चिंतामणि है सुलभ।
मिला है अलभ्य भव, भव ये मिटाने को।।
वीर कहे गौतम से, लाभ अविलंब ले लो।
मिसरी का हीरा यह, अंत गल जाने को।।

साभार – वीर कहे गौतम से

चिंतन

मन को पहले माँज लें

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

सामायिक साधना शुद्ध रूप से संपन्न हो, उसके लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की शुद्धि आवश्यक है। सामायिक में इच्छाकारेणं का पाठ बोलते समय मन अत्यंत भावनाशील हो जाना चाहिए ताकि प्राणी वर्ग के प्रति संवेदनशीलता का अनुभव किया जा सके। प्राणी जगत के प्रति संवेदनशीलता ही नष्ट हो जाए तो साधना में लोच आ ही कैसे पाएगा!

धर्म रूपी पेड़ की जड़ें सदाचार हैं एवं फल मोक्ष है। पेड़ खड़ा भर नहीं रहना चाहिए, वह हरा-भरा रहे एवं फले-फूले तभी रमणीय लगता है। धर्म वृक्ष भी हरा-भरा व फलता-फूलता ही सुंदर लगेगा।

पानी पीने के लिए ग्लास या लोटा माँजा हुआ, साफ किया हुआ उपयोग में लिया जाता है। धर्म कार्य के पहले भी देखो कि मन रूपी लोटा-ग्लास माँजा हुआ है या नहीं। बर्तन यदि पूरा साफ किया हुआ नहीं हो तो उसमें डाला जाने वाला पदार्थ विकृत हो सकता है। उसी प्रकार बिना माँजे हुए मन से की गई साधना सुंदर कैसे होगी? इच्छाकारेणं-तस्स उत्तरी का पाठ मन को माँजने का बहुत सुंदर साधन है, उपक्रम है।

तन मैला होता है तो साबुन आदि के प्रयोग से उसकी धुलाई कर ली जाती है। मन के मैल की भी धुलाई होनी चाहिए। मन का मैल ईर्ष्या, डाह, खिन्नता, चिड़चिड़ापन, घुटन, छल-कपट, दंभ आदि है। इनसे मन अस्वस्थ हो जाता है। ये रोग दूर हो जाएँ तो मन चंगा-अरुज हो जाएगा। मन की स्वस्थता ही आत्म-शांति, समाधि व सुख है।

ध्यान रखें कीचड़ का कीड़ा कभी अच्छे स्थान की चाह नहीं कर सकता और न ही कीचड़ को छोड़ अन्यत्र जाना ही चाहेगा। वैसे ही भौतिक धन-वैभव में रमा मन उसी में लीन रहता है। वह उससे उपरत नहीं हो पाता। मन को कीचड़ से तभी निकाला जा सकता है, जब कीचड़ से अन्य स्थान की सुंदरता-श्रेष्ठता को वह वस्तुतः जान सके। विधि से किया गया कार्य आत्मतोष देता है। सुखद और सुंदर होता है।

फाल्गुन शुक्ल 9, गुरुवार, 17.03.2016

साभार- आरोह

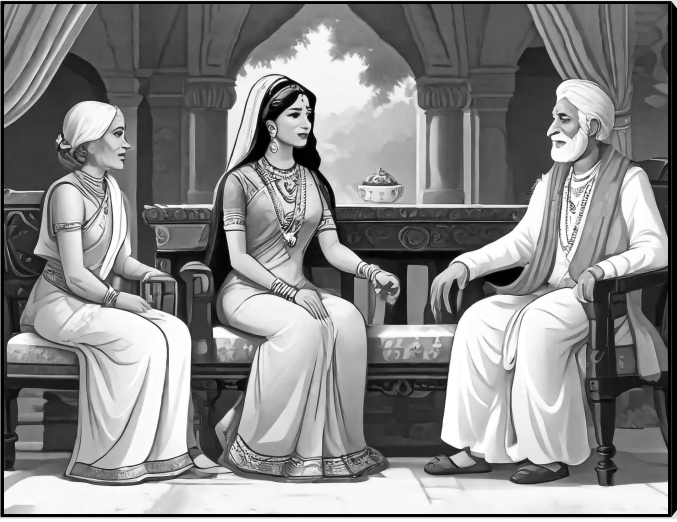

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

पत्र लेखन

29-30 जुलाई 2024 अंक से आगे...

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

सत्य की दृढ़ता में विचित्र शक्ति होती है। वह शक्ति निराशा के बादलों में सूर्य की तरह आशा चमका देती है। शत्रुओं के मध्य मित्र खड़ा कर देती है। अग्नि की शीतलता उत्पन्न कर देती है अथवा समुद्र को उथला बना देती है। मतलब यह कि वह शक्ति सत्य पर दृढ़ रहने वाले की सहायता किसी न किसी रूप में करती ही है। इसके अनेक उदाहरण भी हैं। लंका में रावण का राज्य था। वहाँ सीता को आश्वासन देने वाला कौन मिल सकता था, परंतु सत्य की शक्ति से विभीषण मिल ही गया। वन में राम व लक्ष्मण दो ही भाई थे, तीसरा कोई सहायक नहीं था, परंतु यहाँ भी वानर उनके अनुयायी बन गए। अर्जुन माली के मुद्गर से सुदर्शन सेठ की रक्षा करने वाला कौन था? लेकिन रक्षा हुई ही। वस्त्र हरण के समय द्रौपदी सब ओर से असहाय थी, फिर भी कोई उसे नग्न नहीं कर सका। उग्रसेन को बंधनमुक्त होने की आशा नहीं थी, परंतु बंधनमुक्त हो गए। वन में वधिक से दमयंती की रक्षा करने वाला कोई नहीं था, लेकिन सत्य की दृढ़ता के कारण साँप द्वारा उसकी रक्षा हुई। रुक्मिणी पर भी संकट है। उसे उसकी सहायता करने वाला, उसका पत्र ले जाना वाला कोई नहीं दिखता, लेकिन सत्य को रुक्मिणी की रक्षा करना स्वीकार है। इसलिए उसने कुशल पुरोहित के हृदय में रुक्मिणी की सहायता करने की प्रेरणा की है।

कुण्डिनपुर में कुशल नाम का एक वृद्ध ब्राह्मण रहता था। वह कुण्डिनपुर के राजपरिवार का पुरोहित व शुभचिंतक था। वयोवृद्ध होने के साथ ही वह अनुभवी वृद्ध चतुर व बुद्धिमान भी था। उसे रुक्मिणी के विवाह संबंधी सब हाल मालूम थे। वह जानता था कि रुक्मिणी श्रीकृष्ण को ही चाहती है, दुष्ट शिशुपाल को नहीं, लेकिन रुक्म की सहायता से शिशुपाल रुक्मिणी को बलात् अपनी पत्नी बनाना चाहता है। सेना द्वारा सारे नगर व राजमहल को घेरने का कारण भी यही है, यह उसे ज्ञात था। वह समझता था कि यह रुक्मिणी के प्रति अत्याचार हो रहा है, परंतु जब महाराज भीम जैसे भी तटस्थ हैं, तब मैं क्या कर सकता हूँ? यह विचारकर वह तटस्थ रीति से सब कुछ देख-सुन रहा था।

कुशल अपने घर में सो रहा था। आधी रात के समय सहसा उसकी नींद उचट गई। जैसे रुक्मिणी के पत्र ने स्वयं समाप्त होने के साथ ही कुशल की नींद भी समाप्त कर दी हो। कुशल ने फिर नींद लेने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन फिर नींद नहीं आई, सो नहीं आई। रुक्मिणी विषयक घटनाओं को वह कई दिनों से देख-सुन रहा था, लेकिन उसके हृदय में कोई विशेष विचार नहीं हुआ था। नींद उचट जाने के पश्चात् न मालूम किसकी प्रेरणा से कुशल विचार करने लगा कि आजकल रुक्मिणी पर बड़ी विपत्ति है। उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं है। उसने कृष्ण को अपना पति मान लिया है और उसकी

प्रतिज्ञा है कि मैं प्राण भले ही दे दूँ, परंतु कृष्ण के सिवाय दूसरे पुरुष की पत्नी नहीं बनूँगी। इधर रुक्म व शिशुपाल की ओर से उस पर आपत्तियों की वर्षा हो रही है। कहीं रुक्मिणी को अपनी प्रतिज्ञा निभाने के लिए प्राण नहीं त्याग देना पड़े। यदि ऐसा हुआ तो बड़ा अनर्थ होगा। मैंने इस राजपरिवार का अन्न खाया है, इसलिए मेरा कर्तव्य है कि मैं रुक्मिणी की हत्या रोकने का उपाय करूँ, परंतु रुक्म व शिशुपाल की तामसी शक्ति के सामने मेरा क्या वश चल सकता है? मैं क्या कर सकता हूँ? कुछ कर सकूँ या न कर सकूँ, कम से कम रुक्मिणी से मिलकर उसकी कुशलता तो पूछनी चाहिए। उसे सांत्वना तो देनी चाहिए। इतना ही नहीं, किंतु यदि वह मुझसे किसी प्रकार की सहायता चाहे तो मुझे अपने प्राणों का मोह त्यागकर उसकी सहायता भी करनी चाहिए। राजपरिवार के अन्न से पला हुआ यह वृद्ध शरीर राजकन्या की सत्य व न्यायानुमोदित सहायता में काम भी आ जाए, तो इससे अधिक सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है?

इस प्रकार विचारकर कुशल ने रुक्मिणी से मिलने का निश्चय किया। सवेरा होते ही वह राजमहल में आया। राजपरिवार के वृद्ध पुरोहित पर संदेह करने या उसे रोकने का तो कोई कारण था ही नहीं, इसलिए वह सरलता से राजमहल में चला गया। राजपरिवार की स्त्रियों को आशीर्वाद देता हुआ और उनकी कुशलता पूछता हुआ कुशल रुक्मिणी के समीप आ गया। रुक्मिणी ने सदा की भाँति कुशल को प्रणाम किया। शुभाशीर्वाद देकर कुशल ने रुक्मिणी से पूछा– ''राजकुमारी! आप इतनी दुर्बल व चिंतित क्यों दिखाई देती हैं? शीघ्र ही आपका विवाह है, इसलिए प्रसन्नता होनी चाहिए थी तथा शरीर संपदा भी समृद्ध होनी चाहिए थी, परंतु मैं तो इसके विपरीत देख रहा हूँ।''

रुक्मिणी— ''महाराज! इसका कारण मुझसे पूछ रहे हैं? क्या मुझ पर आई हुई विपत्ति को आप नहीं जानते हैं? इस शरीर में अब तक प्राण ही नहीं मालूम क्यों ठहरे हुए हैं? आश्चर्य नहीं कि आप कुछ दिन पश्चात् इस शरीर को प्राणहीन ही देखें।''

कुशल— ''मैं सब बातों से परिचित हूँ, परंतु आत्महत्या तो कदापि नहीं करनी चाहिए।''

रुक्मिणी— ''इसके सिवाय धर्मरक्षा का कोई उपाय भी तो नहीं है।''

कुशल— ''धैर्य रखिए। आप जिस धर्म की रक्षा चाहती हैं, वह धर्म भी आपकी रक्षा करेगा। यदि कोई ऐसा कार्य हो जो मैं कर सकता हूँ तो आप कहिए। मैं उसे करने के लिए तैयार हूँ।''

रुक्मिणी— ''वृद्ध पिता! मेरे वास्ते आप अपने प्राण संकट में डालने को तैयार मत होइए। इस समय मेरी सहायता करना रुक्म व शिशुपाल की क्रोधाग्नि में अपने प्राण समर्पण करना है।''

कुशल— ''आप इसकी चिंता मत करिए। सत्य व न्याय के लिए प्राणों का ममत्व त्याग देना ही धर्म है। इस शरीर का बलिदान ऐसे शुभ कार्य में हो जाए, इससे बढ़कर सौभाग्य की बात क्या होगी? नीति में कहा है—

जातस्य नदी तीरे तस्यापि तृणस्य जन्मसाफल्यम्।
यत् सलिलमज्जनाकुलेजनहस्तावलम्बनं भवति।।

अर्थात् नदी किनारे पैदा हुए उस तिनके का भी जन्म सफल है, जो जल में डूबने से घबराए हुए को अवलंबन देता है।

धनानि जीवितं चैव, परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।
सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशे नियते सति।।

अर्थात् बुद्धिमान को चाहिए कि धन व प्राण दूसरे के हित में उत्सर्ग कर दे, क्योंकि धन व शरीर का नाश तो अवश्य ही होगा। इसलिए इन्हें दूसरे के हित में त्याग देना अच्छा है।

राजकुमारी! मुझे यदि ऐसा सुयोग प्राप्त हो तो मैं उसे ठुकराने की मूर्खता कदापि नहीं करूँगा। आप

निःसंकोच होकर मेरे योग्य कार्य कहिए।''

कुशल की बात सुनकर रुक्मिणी के मुख पर प्रसन्नता झलक उठी। वह कहने लगी—''प्रभो! आप धन्य हैं। आप जैसे धर्म के नाम पर प्राणों को तुच्छ समझने वाले लोग भी संसार में हैं। सत्य की शक्ति प्रत्यक्ष है। सत्य अपने पर विश्वास करने वाले की सहायता करता ही है। इस समय मुझे कोई आश्वासन देने वाला तक नहीं था, परंतु सत्य की शक्ति को समझकर ये वृद्ध पुरोहित अपने प्राणों का मोह त्याग मेरी सहायता के लिए आ खड़े हुए। सत्य, तुझे धन्य है। तेरे में अपार शक्ति है।''

रुक्मिणी की बुआ वहीं खड़ी हुई रुक्मिणी व कुशल की बातचीत सुन रही थी। उसने रुक्मिणी से कहा—''रुक्मिणी! इन महाराज के द्वारा अपना प्रार्थना-पत्र द्वारका क्यों नहीं भेज देती?''

रुक्मिणी—''बुआ, जरा विचार तो करो, ये वृद्ध महाराज सेना के बीच से कैसे निकल सकेंगे और द्वारका कितने दिन में पहुँचेंगे? विवाह का दिन समीप ही है। इतने थोड़े समय में न तो ये महाराज द्वारका पहुँच सकते हैं, न ही द्वारका से श्रीकृष्ण यहाँ पहुँच सकते हैं। ऐसी दशा में इन्हें व्यर्थ ही संकट में डालने से क्या लाभ?''

बुआ—''रुक्मिणी, तू सत्य का प्रत्यक्ष प्रभाव देखकर भी उसके विषय में संदेह कर रही है। तू इन्हें पत्र तो दे। संभव है कि तेरा पत्र समय पर श्रीकृष्ण के पास पहुँच जाए और वे भी समय पर ही आ जाएँ।''

रुक्मिणी से यह कहकर बुआ कुशल से कहने लगी—''कुशल महाराज! यदि आप रुक्मिणी की सहायता करना ही चाहते हैं तो इसका एक पत्र द्वारकानाथ के पास शीघ्र से शीघ्र पहुँचा दीजिए, परंतु यह विचार कर लीजिए कि महल व नगर के आस-पास सैनिक पहरा है। यदि पत्र ले जाते हुए पकड़ लिए गए तो शिशुपाल व रुक्म आपको मृत्यु से कम दंड नहीं देंगे।''

कुशल—''राजभगिनी! इसकी किंचित् भी चिंता न करिए। सत्य अपने भक्त की सहायता के लिए सदा उद्यत रहता है। इस पर भी यदि मैं पकड़ा गया और मुझे प्राणदंड मिला तो यह भी प्रसन्नता की बात होगी। मैं कुछ समय पश्चात् नष्ट होने वाले वृद्ध शरीर को सत्य की सेवा में अर्पण कर सकूँगा।''

कुशल की दृढ़ता देखकर रुक्मिणी के हृदय पर आशांकुर लहलहा उठा। उसने कुशल को वह पत्र दिया, जो रात के समय श्रीकृष्ण के नाम लिखा था। कुशल को पत्र देकर रुक्मिणी कहने लगी—''वृद्ध पुरोहित जी! आपका नाम ही कुशल है। इसलिए आपको कुछ सिखाना अनावश्यक है। आप सब बातों से परिचित ही हैं। मुझे जो-कुछ कहना है, वह मैं पत्र में लिख चुकी हूँ। आपसे केवल यह और कहती हूँ कि समय देखकर यह पत्र देना तथा कहना कि विवाह दिन के पश्चात् मुझे जीवित न पा सकेंगे। इसलिए विवाह के दिन तक मेरी खबर ले ही लें। यह अंतिम अवधि है। मैं आशा की डोरी के सहारे ही जीवित हूँ। आशा टूटते ही मेरे प्राण-पखेरू भी उड़ जाएँगे।''

बुआ ने भी श्रीकृष्ण को कहने के लिए कुशल से कुछ समाचार कहे।

रुक्मिणी व बुआ के कहे हुए समाचार सुनकर एवं पत्र लेकर कुशल राजमहल से अपने घर आया और वहाँ से द्वारका के लिए चल पड़ा।

कुण्डिनपुर के चारों ओर सशस्त्र सेना का पहरा लगा हुआ था। नगर से बाहर जाना या बाहर से नगर में आना असंभव-सा था। सैनिकों के उस घेरे में से वृद्ध ब्राह्मण का निकल पाना बहुत कठिन कार्य था, परंतु कुशल ने उस कठिन कार्य को भी सरल कर दिखाया। वह न मालूम किस तरह सैनिकों के पहरे में से बाहर निकल गया। सैनिकों में से किसी को भी कुशल के निकलने का पता नहीं लगा।

इतिहास में भी ऐसे कई उदाहरण पाए जाते हैं।

गुजरात का बादशाह सेना द्वारा चित्तौड़ का किला घेरे पड़ा था। कोई व्यक्ति न तो किले में जा ही सकता था, न किले के बाहर ही आ सकता था। चित्तौड़ की रानी किले की रक्षा कर रही थी, परंतु कब तक? अपनी असमर्थता अनुभव करके रानी ने मुगल बादशाह हुमायूँ के पास राखी भेजकर सहायता माँगनी चाही, परंतु गुजराती सेना के पहरे में से किसी का राखी लेकर निकल जाना बहुत कठिन था। फिर भी राखी लेकर एक राजपूत उस घेरे में से निकल गया और हुमायूँ के पास राखी पहुँचा ही दी। राखी पाकर हुमायूँ भी रानी की सहायता को आया और उसने गुजरात के बादशाह को मार भगाया। नागौर के लिए भी एक इतिहास प्रसिद्ध घटना ऐसी ही है। गुजरात के बादशाह गयासुद्दीन ने नागौर को घेर रखा था। नागौर के राजा दिलीप सिंह की लड़की पन्ना ने रुद्र सिंह नाम के एक वीर राजपूत के पास राखी भेजकर उससे सहायता मँगवानी चाही थी। उस समय भी किसी का घेरे में से निकल पाना कठिन था, लेकिन एक राजपूत राखी लेकर निकल ही गया। इतिहास की इन घटनाओं के सिवाय कृष्ण जन्म की घटना तो संसार प्रसिद्ध ही है। कंस ने वसुदेव व देवकी को कारागार में डाल रखा था और ऊपर से कड़ा पहरा लगा रखा था। वसुदेव के लिए कृष्ण को गोकुल लेकर जाने का कोई मार्ग नहीं था। फिर भी वसुदेव कृष्ण को लेकर निकल ही गए। कुशल के लिए भी यही बात हुई। वह भी उस सैनिक घेरे में से द्वारका जाने के लिए सकुशल निकल गया।

साभार– श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

–क्रमशः

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

जून 2024, परीक्षा परिणाम

प्रारंभिक जैन सिद्धांत भूषण

रोल नं. (भूषण 1/2/3/4 - प्राप्तांक) 100 (1-87, 4-81), 754 (3-98), 770 (1-51, 3-64), 777 (1-84), 787 (1-79, 2-82), 789 (1-67, 2-85, 3-75, 4-65), 790 (2-66, 3-64, 4-70), 791 (2-76, 3-66, 4-56), 793 (2-92)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत विभाकर

रोल नं. (विभाकर 1/2/3/4 - प्राप्तांक) 761 (2-95, 3-75)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत विशारद

रोल नं. (मनीषी 1/2/3/4 - प्राप्तांक) 206 (4-85), 590 (2-56), 745 (2-78, 3-88, 4-88)

वैकल्पिक जैन राष्ट्रभाषा

रोल नं. (मनीषी - प्राप्तांक) 146 (51)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत कोविद

रोल नं. (कोविद 1/2/3/4 - प्राप्तांक) 374 (1-66, 2-73, 3-80, 4-69), 521 (4-76)

प्रारंभिक जैन सिद्धांत मनीषी

रोल नं. (मनीषी 1/2/3/4 - प्राप्तांक) 206 (3-66), 745 (1-76), 761 (1-83, 4-53)

वैकल्पिक जैन आगम कंठस्थ

रोल नं. (विभाकर/मनीषी - प्राप्तांक) विभाकर 206 (96), मनीषी 523 (99),

वैकल्पिक जैन संस्कृत प्राकृत

रोल नं. (विभाकर/मनीषी - प्राप्तांक) विभाकर 146 (58), मनीषी 206 (45)

वैकल्पिक जैन स्तोक

रोल नं. (विभाकर - प्राप्तांक) विभाकर 146 (96)

नोट :– परीक्षा परिणाम व रोल नं. संबंधी सहायता हेतु 7231933008 पर संपर्क कर सकते हैं।

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

29-30 जुलाई 2024 अंक से आगे...

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

श्रुतज्ञान

प्र.2523 श्रुतज्ञान की अनंत पर्यायें किस अपेक्षा से कही गई हैं?

उत्तर यद्यपि अक्षर संख्यात है, किंतु **'अणंता गमा, अणंता पज्जवा'** अर्थात् अक्षरों में अनंत अर्थ व अनंत आशय समाए हुए हैं। इस अपेक्षा से श्रुतज्ञान की अनंत पर्यायें कही गई हैं।

प्र.2524 श्रुतज्ञान के सामर्थ्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर श्रुतज्ञानी विश्वविजेता आस्रव को संग्राम भूमि में अंतर्मुहूर्त में हराकर केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है।

प्र.2525 क्या गृहस्थ को पूर्वों का ज्ञान होता है?

उत्तर श्रीमद् ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र में वर्णन है कि तेतली पुत्र को दीक्षा के पूर्व जातिस्मरण ज्ञान हुआ और दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् 14 पूर्व का ज्ञान स्मरण में आया। अतः यह प्रमाणित होता है कि पूर्वों का ज्ञान साधु को ही होता है, गृहस्थ को नहीं।

प्र.2526 गणधरों को पूर्वों का ज्ञान कब होता है?

उत्तर प्रथम समवसरण में तीर्थंकर भगवान सम्यक्त्व, देशविरति और सर्वविरति रूप अहिंसा, संयम, तप का उपदेश देते हैं। उनकी राग-रागिनी युक्त, अमृत समान मीठी वाणी को सुनकर भव्य प्राणी मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं। उनमें से कई एक जीव अपनी-अपनी क्षमतानुसार सम्यक्त्व, श्रावकधर्म अथवा साधुधर्म अंगीकार करते हैं। तीर्थंकर भगवान के प्रथम समवसरण में हजारों व्यक्ति दीक्षा लेते हैं। भगवान के अतिशय से **'कुत्रिकापण'** की स्थापना होती है। वहाँ से रजोहरणादि की सारी व्यवस्थाएँ हो जाने की संभावना है। तदंतर भगवान त्रिपदी का उपदेश देते हैं, जिसे सुनकर मात्र गणधरों को ही 14 पूर्वों (12 अंगशास्त्रों) का ज्ञान होता है।

प्र.2527 क्या सभी गणधरों में श्रुतज्ञान समान होता है?

उत्तर बृहत्कल्प भाष्य भा. 1 गा. 965 में वर्णन है कि द्रव्य श्रुत (अक्षर ज्ञान) समान होने पर भी भाव श्रुत में भिन्नता हो सकती है। भाव श्रुत (सूत्र का अर्थ) मतिज्ञान के अंतर्गत है। मति ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम भिन्न-भिन्न होने के कारण, गणधरों के श्रुतज्ञान में षट्स्थान पतित अर्थात् अनंतवाँ भाग हीनाधिक यावत् अनंतगुणा हीनाधिक अंतर हो सकता है। शेष तीन ज्ञानों में भी षट्स्थान पतित अंतर हो सकता है। श्री प्रज्ञापनासूत्र पद 5 में

भी तत्संबंधी उल्लेख है।

प्र.2528 क्या सभी गणधर उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य रूप मातृका पदों से द्वादशांगी (12 अंग शास्त्र) की रचना करते हैं?

उत्तर आवश्यक निर्युक्ति ले. हरिभद्रसूरी गाथा वृत्ति 735 में वर्णन है कि इंद्रभूति गौतम ने **'उप्पण्णेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा'** इन तीन निषद्या में 14 पूर्वों को ग्रहण कर लिया था। शेष गणधरों की निषद्या अनियत थी।

आवश्यक चूर्णि पृष्ठ 337 व 370 में उल्लेख है कि गौतम स्वामी ने तीन निषद्या में 14 पूर्वों को ग्रहण कर लिया था। किंतु 11 अंगशास्त्रों के लिए उन्होंने भगवान से प्रश्न पूछे या नहीं, यह वर्णन उपलब्ध नहीं है अथवा तीन निषद्या के आधार पर ही द्वादशांगी का निर्माण कर लिया। शेष गणधरों ने 15 निषद्या में द्वादशांगी को ग्रहण किया था। एक निषद्या से 11 अंगशास्त्र एवं 14 निषद्या से 14 पूर्वों का प्रणयन (रचना) किया।

प्र.2529 बारह अंगशास्त्रों के नाम लिखिए।

उत्तर 1. आचारांग, 2. सूत्रकृतांग,
3. स्थानांग, 4. समवायांग,
5. व्याख्याप्रज्ञप्ति, 6. ज्ञाताधर्मकथा,
7. उपासकदशा, 8. अंतकृतद्दशा,
9. अनुत्तरौपपातिकदशा,
10. प्रश्नव्याकरण,
11. विपाकसूत्र और 12. दृष्टिवाद।

प्र.2530 देवों को जातिस्मरण ज्ञान से कितना श्रुतज्ञान स्मरण में आता है?

उत्तर विशेषावश्यक भाष्य में वर्णन है कि देवों को जातिस्मरण ज्ञान से आचारांग आदि 11 अंग शास्त्रों का और पूर्वों का अंश यानी 4 छेद सूत्र आदि याद आ जाते हैं।

ज्ञान लब्धि का थोकड़ा शतक 8 उद्देशक 2

प्र.2531 ज्ञान लब्धि (प्राप्ति, लाभ) किसे कहते हैं?

उत्तर प्रथम चार ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से चार ज्ञान की प्राप्ति एवं केवलज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से केवलज्ञान प्राप्त होना, ज्ञान लब्धि है।

प्र.2532 ज्ञान लब्धि के थोकड़े में ज्ञान-अज्ञान की प्ररूपणा कितने बोलों में की गई है?

उत्तर इस थोकड़े में समुच्चय जीव, 24 दंडक और सिद्ध भगवान, इन 26 बोलों में ज्ञान-अज्ञान की प्ररूपणा की गई है।

प्र.2533 ज्ञानी और अज्ञानी का लक्षण क्या है?

उत्तर जिनका ज्ञान सम्यक्त्व सहित है, वे ही ज्ञानी कहलाते हैं। मिथ्यादृष्टि जीवों का ज्ञान भी अज्ञान कहलाता है।

गति

प्र.2534 नरकगतिक यावत् सिद्धगतिक में कितने ज्ञान-अज्ञान पाए जाते हैं? (नरकगतिक-नरक गति में जाता हुआ, बाटे बहते में)

उत्तर (1) नरकगतिक व देवगतिक में 3 ज्ञान की नियमा 3 अज्ञान की भजना।
(2) तिर्यंचगतिक में 2 ज्ञान 2 अज्ञान की नियमा।
(3) मनुष्यगतिक में 3 ज्ञान की भजना 2 अज्ञान की नियमा।
(4) सिद्धगतिक में केवलज्ञान की नियमा (सिद्ध विग्रहगति में जीव नियमा केवलज्ञानी होते हैं, केवलदर्शनी नहीं)।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

भक्ति रस

क्षमा धर्म का प्राण है, आराधना है विवेक

-प्रतिभा तिलकराज सहलोत, निम्बाहेड़ा

मन की ग्रंथियाँ खुले, वैर-विरोध मिट जाए।
स्नेह, प्रेम के सुमनों से, अंतर्घट सज जाए।।

क्रोध, मान का परिशोधन कर, मन का बोझ घटाएँ।
जिससे हृदय आहत होता, वह छोटी बातें भूल जाएँ।।

जो मिला भाग्य से, उसे संतोष से अपनाएँ।
राग-द्वेष को स्वल्प कर, मैत्रीभाव सरसाएँ।।

तुच्छ बातों में उलझकर, दूरियाँ ना बढ़ाएँ।
विशाल हृदय के स्वामी बन, क्षमादान कर पाएँ।।

बिखर जाए अहं, चित्त सरल-स्वच्छ बन जाए।
आत्म-उन्नति हित, कषाय रहित निःशल्य बन जाएँ।।

मृगावती, चंदनबाला के जीवन का, अनुशीलन कर पाएँ।
क्षमा देकर क्षमा माँगकर, समभावों में रम जाएँ।।

रहे नियंत्रित योग हमारे, कल्मषता धुल जाए।
स्वदोषों को देख, आत्म-आलोचना कर पाएँ।।

अपनी-अपनी भूल सुधारें, सच्चे मन से खमे-खमाएँ।
हाथ जोड़ मिच्छा मि दुक्कडं, सब जीवों से कर पाएँ।।

जिनवाणी श्रवण से, अज्ञान का अँधेरा मिट जाए।
'प्रतिभा' प्रशस्त भावों से, विवेक जगा क्षमा अपनाएँ।।

"सुख के शोध की अंतर्यात्रा हमें आरंभ करनी होगी अपने ही मन से, क्योंकि यह मन बाह्य व आभ्यंतर जगत के मध्य की कड़ी है। आज यह मन बाहर के विषयों में ही भटक रहा है। इसको साधना पड़ेगा और एकाग्र बनाकर भीतर गहराई में उतारना होगा। मन की ऐसी साधना ही अंतर्यात्रा की साधना बन सकेगी। इसमें चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण की क्षमता बढ़ानी होगी तो उनके संशोधन के विविध प्रयोग भी कार्यान्वित करने होंगे।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

श्रमणोपासक हेडलाइंस

हुक्मि उचौ श्रीजगनाना ©

राम चमकते भानु समाना

- परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में भीलवाड़ा में चातुर्मास का अद्भुत ठाठ। त्याग-तपस्याओं की लग रही होड़।
- मुमुक्षु भाई नीरज जी पोखरना, मुमुक्षु बहन बसंती देवी पोखरना एवं मुमुक्षु बहन दर्शना जी नाहटा की भव्य जैन भागवती दीक्षा सोल्लास संपन्न। नवदीक्षित संत श्री रामनंदन मुनि जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामबिंदु श्री जी म.सा. एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदीपिका श्री जी म.सा. हुआ नवीन नामकरण। दीक्षा से एक दिवस पूर्व आयोजित वरघोड़ा व अभिनंदन कार्यक्रम में मुमुक्षु भाई-बहनों एवं वीर परिजनों का केंद्रीय व स्थानीय संघ सहित अनेक संस्थाओं द्वारा स्वागत-अभिनंदन हुआ।
- श्री गगन मुनि जी म.सा. के मासखमण पूर्ण। यह उनके जीवन का नौवाँ मासखमण तप। श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने आठ की तपस्या के दिन मासखमण का प्रत्याख्यान ग्रहण कर आत्मबल का परिचय दिया। अन्य कई चारित्रात्माओं के भी तप गतिमान।
- कायाक्लेश तप के अंतर्गत अब तक 112 लोच संपन्न।
- मोक्षार्थी शिविर में गुरुशरण पाने का सौभाग्य जगा।
- मुमुक्षु बहन काजल जी नाहटा सुपुत्री प्रमिला देवी-दिलीप जी नाहटा, अतरिया रोड की जैन भागवती दीक्षा 7 अक्टूबर 2024 के लिए तथा मुमुक्षु बहन हर्षाली जी कोठारी सुपुत्री ऊषा देवी-अशोक जी कोठारी, ब्यावर की जैन भागवती दीक्षा 3 दिसंबर 2024 के लिए घोषित।
- संथारा साधिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. का 9 अगस्त को तथा संथारा साधिका साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. का 15 अगस्त को पंडितमरण। देशभर में श्रद्धांजलियों का दौर जारी।
- दो दिवसीय प्रोफेशनल शिविर में आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर सहित चारित्रात्माओं का विशेष सान्निध्य प्राप्त।
- 95 वर्षीय धरमचंद जी देरासरिया-देवगढ़ के छह उपवास के प्रत्याख्यान।
- आगामी वर्ष 2025 के वर्षावास तथा अन्य प्रसंगों हेतु विनतियों का दौर अनेक संघों द्वारा जारी।
- 12 से 18 अक्टूबर तक भीलवाड़ा में द्वितीय मोक्षार्थी शिविर हेतु आगारों सहित स्वीकृति। इस शिविर हेतु देश के अनेक क्षेत्रों के लोग जिज्ञासु।
- चातुर्मासिक स्थापना दिवस पर आह्वानित वैश्विक सामायिक दिवस पर देशभर में 96,259 सामायिक संपन्न।
- पर्युषण पर्व के प्रथम, द्वितीय व तृतीय दिवस पर एक तेला तप करने का आह्वान, 1008 तेला करने का लक्ष्य दिया।

भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार

तप, संयम की छाई बहार। राम गुरु की जय-जयकार।।

युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में भीलवाड़ा बना तीर्थधाम

मुमुक्षु भाई नीरज जी पोखरना,
मुमुक्षु बहन बसंती देवी पोखरना व
मुमुक्षु बहन दर्शना जी नाहटा की जैन
भागवती दीक्षा सोल्लास संपन्न,

नवीन नामकरण क्रमशः
नवदीक्षित संत श्री रामनंदन मुनि जी म.सा.,
नवदीक्षिता साध्वी श्री रामबिंदु श्री जी म.सा. व
नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदीपिका श्री जी म.सा. घोषित

श्री गगन मुनि जी म.सा. के मासखमण तप पूर्ण

संथारा साधिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. व साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. के पंडितमरण पर भावांजलि अर्पित

अरिहंत भवन, आर.के. व्यास कॉलोनी एवं प्रवचन पांडाल, प्राथमिक विद्यालय, धांधोलाई, भीलवाड़ा।

हे गुरुवर! वाणी तुम्हारी मंगलकारी, दर्शन तुम्हारे प्रियकारी।
शिक्षा तुम्हारी हितकारी, हम सबके तुम हो उपकारी।।

जिनकी संयम साधना की गूँज देश-विदेश में नाद कर रही है ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान व क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर,

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के शिखर महोत्सव चातुर्मास में आध्यात्मिक चेतना के साथ चतुर्विध संघ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना में लीन है। जीवन परिवर्तनकारी हृदयस्पर्शी आगमोक्त प्रवचनों, ज्ञानवर्द्धक शिविरों व कठोर संयम साधना से जन-जन प्रभावित हो रहे हैं। दर्शनार्थियों का ताँता लग रहा है। नई-नई जानकारी व प्रेरणा से ओत-प्रोत ज्ञानवर्द्धक शिविरों का क्रम जारी है। उपवास, बेला, तेला, एकासना, आयंबिल की लड़ी चल रही है।

ईर्ष्या, द्वेष व नफरत के भावों से दूर रहें - आचार्य भगवन्

हमारा आनंद हमारे भीतर है - उपाध्याय प्रवर

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने अपना नौवाँ मासखमण तप गुरुकृपा से पूर्ण कर लिया है। अन्य कई चारित्रात्माओं की तपस्याएँ निरंतर चल रही हैं। '**लोच में क्या सोच**' कार्यक्रम के तहत अब तक 112 लोच संपन्न हो चुके हैं। उभय गुरु-भगवंतों की महत्ती कृपा से **मुमुक्षु नीरज जी पोखरना**, मायावरम्/ब्यावर, **मुमुक्षु बसंती जी पोखरना**, मायावरम्/ब्यावर एवं **मुमुक्षु दर्शना जी नाहटा**, नगरी की जैन भागवती दीक्षा सानंद संपन्न हुई। अनेक मुमुक्षु आत्माएँ श्रीचरणों में समर्पित होने तथा अपने नाम के आगे '**राम**' लगवाने को आतुर व लालायित हैं। साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. के संथारापूर्वक पंडितमरण पर भीलवाड़ा सहित देशभर में श्रद्धांजलि सभाओं के माध्यम से संथारा की अनुमोदना तथा श्रद्धांजलि देने का क्रम जारी है।

मोक्षार्थी स्वाध्याय के लिए लालायित रहता है

1 अगस्त 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना से दिन के शुभारंभ पश्चात् आयोजित धर्मसभा में चतुर्विध संघ के मध्य उच्च पाट पर विराजित शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने अपनी ओज से भरपूर वाणी में उपस्थित अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए फरमाया कि ''मोक्षार्थी धर्म-ध्यान के लिए अग्रसर रहता है। यदि उसे भगवान की वाणी सुनने का अवसर मिला है तो वह चूकता नहीं है। उसकी ललक रहती है या भावना रहती है कि तीर्थंकर देव की वाणी श्रवण करे। तीर्थंकर देवों की वाणी सुनना बहुत दुर्लभ है। दूसरे अनेक कार्य हैं, पर जिनवाणी सुनना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। जो वाणी हृदय से सुनी जाती है वह जीवन में परिवर्तन लाती है। मोक्षार्थी स्वाध्याय के लिए लालायित रहता है। '**मानव का तन अनमोल मिला है मोक्षार्थी बनो, मोक्षार्थी बनो**' की स्वरलहरी से संयम भाव हिलोरे लेने लग जाता है। मोक्ष मार्ग स्वीकार करने से जीवन में शांति, सुख, सुकून मिलता है। सौभाग्य जागृत हो गया तो इसके अलावा और क्या चाहिए! जो चीजें कहीं नहीं मिलती वे चीजें साधुओं की संगत से मिलती है। धन मिलना एक बात है, किंतु चित्त को समाधि मिलना बहुत ही दुर्लभ बात है। श्री गगन मुनि जी म.सा. के आज मासखमण की तपस्या है। वे अपना कार्य अपने आप करते हैं। मौका लगे तो दूसरों की सेवा के लिए तैयार रहते हैं। ये उनका नौवाँ मासखमण है। तपस्या आत्मशुद्धि व कर्मनिर्जरा के लिए होनी चाहिए, दिखावे के लिए नहीं। मेरा समभाव, शांति व समाधि अभिवृद्धित हों, यह उच्च भावना ही संयम मार्ग की ओर बढ़ाती है।'' आचार्य भगवन् के मुखारविंद से 100 से

अधिक लोगों ने तेले तप के पच्चक्खाण लिए।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि तपस्या कर्मनिर्जरा के लिए की जाती है। श्री गगन मुनि जी म.सा. ने मासखमण तप कर अपूर्व आत्मशक्ति का परिचय दिया है।

श्री गगन मुनि जी म.सा. के आज 30 उपवास (मासखमण) तप गुरुकृपा से पूर्ण हुआ। आपने पूर्व में 1 से 21 तक की लड़ी, 4 अठाई, 9 की तपस्या 2 बार, 6 की तपस्या 7 बार, 7 की तपस्या दो बार, 100 तेले, 250 प्रत्याख्यान आदि अन्य कई तपस्याएँ आचार्य भगवन् की कृपा से पूर्ण की हैं। अन्य अनेक तप-प्रत्याख्यान हुए।

मोक्षार्थी गुणग्राही होना चाहिए

2 अगस्त 2024। प्रभु व गुरु चरणों में समर्पित प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को भगवान महावीर की अमृतदेशना से पावन करते हुए परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. ने अपनी दिव्यवाणी में मोक्ष भावों के जागरण हेतु '***मानव का तन अनमोल मिला, मोक्षार्थी बनो, मोक्षार्थी बनो***' गीत के साथ फरमाया कि ''यदि हमारा दृष्टिकोण गुणोत्कीर्तन का होगा तो हम आगे बढ़ने में समर्थ होंगे। हर व्यक्ति में गुण-अवगुण होते हैं, क्योंकि हम छद्मस्थ हैं। किसी में बहुत अच्छा गुण होगा तो किसी में दुर्गुण होगा। अच्छे गुण सभी दुर्गुणों को ढँकने वाले होते हैं। असत्य भाषण, झूठ बोलना, असत्य आचरण करना सबसे बड़ा दुर्गुण है। असत्यवादी का कोई भरोसा नहीं करता। हमारी भारतीय संस्कृति का परिचायक '**सत्यमेव जयते**' स्लोगन है, जिसका अर्थ है **सत्य की सदैव जीत होती है**। सत्य में बहुत ताकत है। मोक्षार्थी गुणों को देखने वाला होता है। उसकी दृष्टि गुणों की तरफ होती है। हमें यदि मोक्षार्थी बनना है तो वैसा अभ्यास करना चाहिए। मैं एक सप्ताह तक किसी के अवगुण, दुर्गुण नहीं देखूँगा। कई लोगों की आदत होती है कि वे छिद्रान्वेषण करते रहते हैं कि क्या हो रहा है या क्या नहीं हो रहा है। ये आदत गर्त में ले जाने वाली है।''

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बड़े-बड़े लोगों के पास बहुत सारी सुविधाएँ होती हैं, किंतु वे सुविधाएँ आत्मिक सुख देने वाली नहीं है। मन की एकाग्रता बहुत जरूरी है। जितने हम एकाग्र होंगे, उतने ही हम ग्रहण करने वाले बनेंगे।

मोक्षार्थी ज्ञाता-द्रष्टा भाव में जीता है

3 अगस्त 2024। भोर का शुभारंभ मंगलमय प्रार्थना में उच्च भक्ति भावों से तीर्थंकरों के गुणोत्कीर्तन के साथ हुआ। प्रार्थना पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''मोक्षार्थी ज्ञाता-द्रष्टा भाव में जीता है। ज्ञाता-द्रष्टा भाव यानी जानना-देखना। कोई प्रतिक्रिया नहीं करना कि ऐसा क्यों हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए। जो हो रहा है उसको जान रहा हूँ। आत्मा का एक गुण ज्ञाता-द्रष्टा भाव वीतराग अवस्था में भी रहता है। वीतराग भगवान जानते, देखते हैं, किंतु कोई प्रतिक्रिया नहीं करते हैं। मोक्षार्थी बनने के लिए ये उत्तम गुण हमें स्वीकार करने चाहिए। बहुत सारी समस्याओं का समाधान ज्ञाता-द्रष्टा भाव में है। हमारी गहरी निष्ठा हो जाए कि शरीर व आत्मा भिन्न-भिन्न हैं। अभी हम सुन रहे हैं, किंतु गहरी निष्ठा नहीं है। रोग से शरीर थोड़ा-सा आक्रांत होते ही हमारा सारा ध्यान शरीर

पर चला जाएगा। हम व्यापार और धन को बढ़ाने के लिए कई बार सोचते हैं, किंतु धर्म, वैराग्य, ज्ञान, त्याग, पच्चक्खाण को बढ़ाने के लिए हमारी सोच कितनी अग्रसर होती है। मोक्षार्थी सारी कठिनाइयों को पार कर लेता है।'' '**वैराग्य जोत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से**' चारित्र भाग की सुंदर व्याख्या आचार्य भगवन् ने फरमाई।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हर कार्य करने से पहले उसकी जानकारी कर लेंगे तो उस कार्य को करने में सफल होंगे। धार्मिक क्रियाएँ जानकारी पूर्वक करेंगे तो विशुद्ध भाव से कर पाएँगे।

प्रतिष्ठा, प्रशंसा, मान-सम्मान मीठा जहर हैं

4 अगस्त 2024। प्रात:काल की मंगलमय बेला में सैकड़ों गुरुभक्त रविवारीय समता शाखा की आराधना हेतु उपस्थित हुए। आचार्य भगवन् के सान्निध्य में सभी ने समता आराधना कर अपना जीवन धन्य बनाया।

प्रवचन स्थल राजकीय विद्यालय में आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी तेजोमय वाणी में '***मानव का तन अनमोल मिला, मोक्षार्थी बनो, मोक्षार्थी बनो***' गीत के पश्चात् फरमाया कि ''एकमात्र मनुष्य जीवन में संयम की आराधना कर पाते हैं। अन्य किसी गति में त्याग, नियम, प्रत्याख्यान कुछ हो सकते हैं, किंतु शुद्ध साधुत्व का पालन नहीं हो पाता है। हमें जीवन को सार्थक करने में जो समय मिला, उसको हमने व्यर्थ में निकाल दिया है। हम ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाए। आत्मा-परमात्मा का ज्ञान हमने कुछ अंशों में प्राप्त किया है। जड़-चेतन का बोध हमें प्राप्त हुआ है। जड़ का संयोग हमारी आत्मा को भुलावे में डालता रहा है। एकमात्र चेतना का बोध यानी शरीर और आत्मा की भिन्नता का बोध हमें पुद्गलों के धक्कों से बचाने में समर्थ है। जिस दिन आसक्ति समाप्त हो जाएगी, उस दिन हम आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा की दिशा में बढ़ने वाले बनेंगे। पूजा, प्रतिष्ठा, प्रशंसा, मान-सम्मान मीठा जहर है। इससे हमारी आत्मा का कल्याण होने वाला नहीं है। संयम से ही आत्मा का कल्याण होगा। एक नियम ग्रहण करें कि हम सदा दीक्षा की अनुमति में खड़े रहेंगे। चाहे घर की, गाँव की, परगाँव की दीक्षा हो, हम दीक्षा में अंतराय नहीं देंगे। सदैव हम दीक्षा में सहायक बनेंगे। हमारी भावना निरंतर आगे बढ़ेगी।''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम ही श्रेष्ठ है और यह जीवन संयम के बिना गया तो ये जीवन रीता ही रह गया। जिसके मन में सच्ची लगन होती है वह कार्य सिद्ध करने में सफल होता है।

मोक्षार्थी शिविर में कई भाई-बहनों ने अपनी सुंदर भावाभिव्यक्ति में कहा कि गुरु शरण पाने से हमारा सौभाग्य, पुण्य जाग गया है। गुरुवर के उपकार हम कभी नहीं भूलेंगे। हमें भी इस भव से तिरना है। समता युवा संघ के अध्यक्ष ने महापुरुषों के सान्निध्य का अधिकाधिक लाभ लेने की अपील की।

मेरा कुछ भी बुरा होने वाला नहीं है

5 अगस्त 2024। प्रात:काल पक्षियों के मधुर कलरव के मध्य सामूहिक प्रार्थना में भक्ति भावों के साथ जीवन उत्कर्ष की ओर आरोहित करने के पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**भगवान ने हमें दु:ख से मुक्त होने का यह अमूल्य सूत्र दिया है कि मेरा कुछ भी बुरा होने वाला नहीं है। चाहे दुनिया में कुछ भी हो जाए, मेरा बुरा नहीं होगा। यह सूत्र चमत्कार करने वाला है। यह पूरे जीवन को सुख देने वाला है। भय एक ऐसी चीज है जो आदमी को ऊँचाई से नीचे ला देती है। अगर**

दु:ख से मुक्त होना चाहते हो तो भय पर विजय प्राप्त करो। हमारे भीतर प्रकाश फैलाने वाले सद्गुरु के शब्द होते हैं।''

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बोल याद रहें या न रहें, किंतु भगवान की वाणी याद रहनी चाहिए। गुरु-भगवंतों की वाणी सुनने से कान धन्य हो जाते हैं। दर्शन करने से आँखें धन्य हो जाती हैं। जितने भी भोग-विलास हैं वे सब दु:ख के कारण हैं। थोड़ा-सा सुख, दु:ख को बढ़ाने वाला होता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

समझ बढ़ेगी तो अभिमान घटेगा

6 अगस्त 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में ***'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'*** की मधुर ध्वनि से गुणोत्कीर्तन पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को धर्म की राह दिखाते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**गुरु को हमेशा हृदय कमल पर विराजमान रखना चाहिए, क्योंकि गुरु में वो शक्ति है, जो हमारे दु:खों को सुखों में बदल सकती है। हमारी वेदनाओं को शांत कर सकती है। हमारे संसार को मुक्ति में बदल सकती है। हमारे जीवन का कायापलट करने की शक्ति यदि किसी के भीतर है तो वो गुरु के भीतर है। अगर तुम्हें विकसित होना है तो अपने अस्तित्व को मिटा देना चाहिए। अभिमान बढ़ेगा तो समझ घटेगी और समझ बढ़ेगी तो अभिमान घटेगा। अभिमान जीवनभर दु:ख देने वाला है।**''

हमने आज तक औपचारिकता से नमन किए हैं, इस कारण वे नमन निर्वाण तक पहुँचाने में सहयोगी नहीं बन पाए।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इंद्रियों को जीतने वाला ही सच्चा विजेता होता है। संसार असार है, फिर भी आपको संसार में सार लग रहा है, जो सुख देने वाला नहीं है।

सुनने के लिए एकाग्र भाव जरूरी

7 अगस्त 2024। मंगलमय प्रार्थना प्रभु व गुरुभक्ति के साथ भोर की अगवानी के पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित हजारों गुरुभक्तों में धर्म की अलख जगाने हेतु उत्क्रांति प्रणेता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''दिन उगता है, कल भी उगा था, आज भी उगा है और रोज उगता है। हमारे जीवन की भोर कब खिलेगी, ये विचार करने की बात है। एक बार यदि जीवन का प्रभात खिल जाए तो मनुष्य जीवन सार्थक हो जाएगा और वैराग्य ज्योति का जागरण हो जाएगा। एकाग्र भाव से सुनना जरूरी होता है। चित्त कहीं होगा तथा कान कहीं और लगाए होंगे तो ऐसी स्थिति में व्याख्यान में बैठे जरूर हैं, परंतु मन कहीं लगा होगा तो व्याख्यान सुना नहीं जाएगा। सुनने के लिए एकाग्र भाव जरूरी है। जो कार्य करो उसी में तुम्हारा उपयोग लगा रहना चाहिए। '**तुझ में मुझ में भेद ना पाऊँ।**' हमारे यहाँ पाँच अभिगम बताए हैं - (1) सचित्त का त्याग (2) अचित्त का विवेक (3) दृष्टिवंदन (4) उत्तरासन (5) मन, वचन, काया की एकाग्रता का प्रयत्न करना।

जिसकी हम उपासना कर रहे हैं उसी में एकमेव बना रहना चाहिए, दूसरा कोई कुछ भी ध्यान न रहे। हमें दूसरों का नहीं, स्वयं का निरीक्षण करना है। जब हृदय से एक उपदेश भी सुना जाता है तो वह बड़ा सार्थक हो जाया

करता है।'' **'वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से'** चरित्र भाग का सुंदर विवेचन आचार्य भगवन् ने फरमाया।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जितनी चीजें जा रही हैं वे अपनी नहीं हैं और जो अपनी होंगी वे जाएँगी नहीं। जितने भी बाहरी संबंध हैं वे सब झूठे हैं। अपनी आत्मा का संबंध सच्चा संबंध है।

नमन से निर्वाण

8 अगस्त 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में ***'हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला'*** के मधुर संगान के साथ भक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में तीर्थंकरों का गुणगान बताते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य-ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**एक नमन हमें निर्वाण दिलाने वाला बन सकता है। किसी एक तीर्थंकर भगवान (ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक) को किया गया नमस्कार जीव को निर्वाण तक पहुँचा देता है। हमने आज तक औपचारिकता से नमन किए हैं, इस कारण वे नमन निर्वाण तक पहुँचाने में सहयोगी नहीं बन पाए। 'सव्व पावप्पणासणो'** ऐसे पाँच पदों को किया गया नमस्कार सारे पाप कर्मों को नष्ट करने वाला होता है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय एवं अंतराय कर्म, ये चारों कर्म पाप की प्रकृतियाँ हैं। मोह सबसे भारी होता है, जो ज्ञान-दर्शन को अवरोध करने वाला होता है। नमन से वैराग्य बोध सुगम बनता है। वैराग्य, ज्ञानगर्भित, दु:खगर्भित, रोगगर्भित भी होता है। एवंता कुमार का वैराग्य ज्ञानगर्भित था। अनाथी मुनि को रोगगर्भित ज्ञान हुआ। वैराग्य भाव जब होता है तो उसे रोकना कठिन होता है। **'वैरागी हूँ, वैरागी को न धन चाहिए। एक वीर प्रभु की शरण चाहिए।'** संसार को हिंसा, झूठ, अब्रह्मचर्य, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष का दोष लगता रहता है। संसार में रहते हुए कितने पाप कर लेते हैं! पापकर्म का उपार्जन गृहस्थ अवस्था में होता ही रहता है। दीक्षा लेने वाला पापकर्म को रोकने में समर्थ होता है। यदि संक्लेश में रहेगा तो पापकर्म को रोकने में समर्थ नहीं होगा। कपड़ा बदला और मन नहीं बदला तो साधु जीवन की आराधना नहीं हो पाएगी।'' संयति राजा चारित्र भाग **'वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से'** की सुंदर व्याख्या आचार्य भगवन् ने फरमाई।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि यह संसार कषाय रूपी अग्नि में धूँ-धूँ कर जल रहा है। हमारे भीतर अभी तक वैराग्य प्रकट नहीं हो पा रहा है। जिस दिन वैराग्य ज्ञान प्रकट होगा उस दिन हम संसार में रहने वाले नहीं बनेंगे।

आचार्य भगवन् ने **मुमुक्षु कु. काजल जी नाहटा** सुपुत्री प्रमिला देवी-दिलीप जी नाहटा, अतरिया रोड (छ.ग.) की जैन भागवती दीक्षा **7 अक्टूबर 2024** को **भीलवाड़ा** के लिए जैसे ही स्वीकृति प्रदान की, संपूर्ण पांडाल जय-जयकारों व जयवंता-जयवंता की मधुर ध्वनि से गूँज उठा। चारों ओर हर्ष की लहर छा गई।

आत्मा की सहज प्रवृत्ति है वीतरागता

9 अगस्त 2024। प्रार्थना में ***'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'*** की मधुर स्वर लहरी से जन-जन का मन पावन हो गया। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में आत्मतत्त्व का बोध कराते हुए व्यसनमुक्ति प्रणेता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतवर्षिणी वाणी में फरमाया कि ''**जगत् की रीत क्या है? जन्म लेना, संबंध स्थापित करना, कुछ वर्षों तक उलट-फेर करना और ढलती जीवन संध्या के समय में बीमारियों द्वारा घेर लिया जाना, फिर शरीर छोड़कर मृत्यु को प्राप्त कर लेना। यह जगत् की रीत है। इसी रीत में आदमी चलता जा रहा है। सहज प्रवृत्ति वाले लोग बहुत कम होते हैं और विपरीत प्रवृत्ति वाले लोग ज्यादा होते हैं। हमें वैराग्य उलटा लग रहा**

है और राग सुलटा लग रहा है। आत्मा के साथ राग का संबंध है या वैराग्य का? राग में चलना आत्मा का विरोध होता है। हमारी चर्चाएँ लगभग मोह को महत्त्व देने वाली होती हैं, जबकि आत्मा की सहज प्रवृत्ति वीतरागता है। गलत राह से निवृत्त हो जाना वीतरागता की दिशा है। हम राग को छोड़ने के लिए कदम आगे नहीं बढ़ा पा रहे हैं। दुःख, द्वंद्व, राग के मार्ग में ज्यादा हैं। वीतरागता में कोई दुःख-द्वंद्व नहीं है। वैराग्य पथ पर चलने के लिए जब दृढ़ता होती है तो सारी कठिनाइयाँ अपने आप दूर हो जाती हैं।'' आचार्य भगवन् ने अपूर्व कृपा करते हुए संयति राजा चारित्र भाग की सुंदर व्याख्या फरमाई।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने वाणी में संयम रखने एवं कटुवचनों का त्याग करने की प्रेरणा दी। मुमुक्षु बहनों ने *'संयम में धुन लागी रे'* गीत प्रस्तुत किया। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'मेरे तन में हैं राम, मेरे मन में हैं राम'* गुरुभक्ति से ओत-प्रोत भजन प्रस्तुत कर संपूर्ण माहौल को भक्तिमय बना दिया।

साध्वी श्री स्थितप्रज्ञा जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् के सान्निध्य में मन को निर्मल-पवित्र बनाएँ। उल्लास, उमंग के साथ कुछ नया करने का सुसंकल्प लेवें। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप का विकास करें।

संयोग का वियोग निश्चित है

संथारा साधिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. को भावांजलि

10 अगस्त 2024। प्रात:काल मंगलमय प्रार्थना से जन-जन के हृदय में धर्मराग भरने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को भगवान महावीर की दिव्यदेशना से पावन करते हुए विश्व की विरल विभूति, उत्कृष्ट क्रिया के धारी आचार्य भगवन् ने अपनी आगमोक्त वाणी में फरमाया कि ''कल प्रातः सूचना मिली कि जावरा में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. एवं रतलाम विराजित साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. ने संथारा ग्रहण कर लिया है। साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. का संथारा गत रात्रि में सीझ गया। आपका जन्म छतेरा, बालाघाट में गुलाब बाई-सूरजमल जी चोरड़िया की सुपुत्री के रूप में एवं विवाह रारवेचा परिवार, धमतरी में हुआ। आपने सन् 1977 में दुर्ग में दीक्षा ग्रहण की। आप में अनेकानेक विशेषताएँ थीं। आपने साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की उच्चतम परीक्षा जैन सिद्धांत रत्नाकर की परीक्षा उत्तीर्ण की। बहुत सारी सिद्धांतों की बातें उनकी स्मृति में मौजूद थीं। आज वे हमारे बीच नहीं रहे। जन्म लेने वालों की मृत्यु निश्चित है। संयोग का वियोग निश्चित है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने संलेखना स्वीकार कर पंडितमरण का वरण किया। प्रत्येक भवी आत्मा का यह लक्ष्य होता है कि मैं पंडितमरण का वरण करूँ। बहुत कम लोगों को पंडितमरण का सौभाग्य प्राप्त होता है। पंडितमरण का मतलब है संसार को सीमित कर दिया। संलेखना आत्म-साधना को ऊँचाई देने वाली होती है। यह संसार असार है। यहाँ जन्म लेने वालों को जाना ही पड़ता है। कोई भी अमर नहीं होगा। साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. ने जीवन की उत्कृष्ट साधना की। हमें भी विचार करना चाहिए कि अपने जीवन को संयमित बनाना है। दीक्षा ले सकें तो अतिउत्तम, नहीं तो अपनी इच्छाओं व आवश्यकताओं को सीमित करें। प्रतिदिन 14 नियम चितारने का लक्ष्य अवश्य रखें।''

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने *'आया कहाँ से, कहाँ है जाना'* भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि चातुर्मास

में कर्तव्य पालन के साथ ही आध्यात्मिक जीवन का विकास करें। तपस्या के माध्यम से तन-मन को पवित्र करें। श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने सुखविपाक सूत्र का सुंदर विवेचन किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता युवा संघ अध्यक्ष व महेश नाहटा ने साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. के जीवन पर प्रकाश डालते हुए इसे शासन की अपूरणीय क्षति बताया। सभी ने चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रोफेशनल शिविर में आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं अन्य चारित्रात्माओं का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कर्म सिद्धांत कक्षा में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने विशेष ज्ञानार्जन करवाया। 95 वर्षीय धरमचंद जी देरासरिया-देवगढ़ ने छह उपवास का प्रत्याख्यान लिया।

दुःख दिया दुःख होत है, सुख दिया सुख होत

11 अगस्त 2024। आज के पावन दिवस पर आयोजित रविवारीय समता शाखा में सैकड़ों गुरुभक्त आचार्य भगवन् के इस आयाम को साकार करने हेतु उपस्थित थे। प्रवचन सभा में धवल वेशधारी साधु-साध्वियों के समक्ष सामायिक वेशभूषा में विराजित श्रावकों तथा केसरिया गणवेश में श्राविकाओं की उपस्थिति अनुशासन को परिलक्षित कर रही थी। धर्मसभा को संबोधित करते हुए उत्कृष्ट क्रियाधारी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**भगवान महावीर के वचन अध्यात्म परख हैं। भौतिकवाद की चकाचौंध में नहीं उलझना है। भौतिकवाद की दौड़ हमें छठे आरे में ले जाने वाली होगी। अध्यात्म की दौड़, अध्यात्म का विचार हमें भगवान महावीर का युग प्रदान करने वाले हैं। सभी जीव चौथे आरे का सुख व समाधि चाहते हैं। यदि हमारे द्वारा दूसरे प्राणियों को दुःख दिए जाएँगे तो हमें सुख कहाँ से मिलेंगे! पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय जीवों की विराधना करते हैं। हमारे कर्मों के कारण ही दुःख व सुख हैं। छठे आरे का वर्णन सुनकर आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. को वैराग्य उत्पन्न हो गया था। छठे आरे का वर्णन सुनकर उन्होंने माँ का ममत्व भी त्याग दिया और चल पड़े संयम मार्ग पर। साधु की सच्ची आराधना हो जाए तो छठे आरे में जन्म नहीं लेना पड़ेगा। श्रावक की आराधना हो जाए तो भी उसे छठे आरे में जन्म लेना पड़ेगा। छठे आरे में लगभग साढ़े अठारह हजार वर्ष से थोड़ा कम समय बाकी है। जीवन में बदलाव जरूरी है।**'' आचार्य भगवन् ने '**वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञान ज्योत से**' के माध्यम से संयति राजा चारित्र भाग की सुंदर व्याख्या कर नवीन प्रेरणा उपस्थित श्रद्धालुओं को दी।

श्री राजन मुनि जी म.सा ने फरमाया कि भीलवाड़ा में नवाचार्यों में यह प्रथम चातुर्मास हो रहा है। अधिकाधिक धर्म-ध्यान व तप-त्याग का लाभ लेवें। बेले-तेले सहित अन्य तपस्याएँ करें। जीवन में समय का जो लाभ उठा लेता है वही जीत में रहता है। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '***म्हाने देशाणे रो लाल, प्यारो-प्यारो लागै***' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता युवा संघ अध्यक्ष ने तप-त्याग के लिए आह्वान किया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, देशनोक ने आगामी वर्ष 2025 के वर्षावास की भावभरी विनंती गुरुचरणों में अर्पित की। सवाई माधोपुर, टोंक क्षेत्र के 11 संघों व महासंघ पोरवाल एवं अन्य लोगों ने क्षेत्र स्पर्शने तथा अन्य प्रसंगों की विनती गुरुचरणों में रखी।

जावरा में साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. के संथारापूर्वक पंडितमरण पर चोरड़िया परिवार व संघ सदस्यों ने

गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदि ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

दो दिवसीय प्रोफेशनल शिविर का आयोजन गुरुचरणों में हुआ। श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने आठ की तपस्या के दिन मासखमण का प्रत्याख्यान ग्रहण कर अपूर्व आत्मबल व तप जोश का परिचय दिया। आपके इस साहस से भी आश्चर्यचकित रह गए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा व प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

भौतिकता से अध्यात्म की ओर

12 अगस्त 2024। प्रात:काल मंगलमय प्रार्थना में *'हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला'* की स्तुति के पश्चात् प्रवचन स्थल पर विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया। इस धर्मसभा को अध्यात्म से सराबोर करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**हम बहुत सुनते-पढ़ते हैं, किंतु हमारे जीवन में कोई बदलाव आया कि नहीं? क्रोधी मन को क्षमा से, अभिमानी मन को सरलता से एवं लोभ मन को संतोष से बदलें। हम कितना बदले हैं, जीवन कौनसी दिशा में जा रहा है इसका विश्लेषण प्रतिदिन करेंगे तो बहुत अच्छी बात है, वरना 15 दिन, महीने, चार महीने (पक्खी-चातुर्मासिक) में सोचना चाहिए कि मैं अपने अंदर जो बदलाव चाहता हूँ, मैं उसी दिशा में बढ़ रहा हूँ या मेरी दिशा उलटी है। हमारे कदम सही दिशा में हैं या नहीं, यह कैसे मालूम चलेगा? हमें चिंतन करना चाहिए। जिस माहौल में मैं लोभी, क्रोधी, मायावी, अभिमानी बन जाता हूँ, आज मेरे भीतर क्या बदलाव आया है? क्या विपरीत परिस्थितियों में मैं उग्र बन जाता हूँ? हमारी प्रगति का आकलन संसार की प्रगति का बढ़ना है। कैसे? कब? पैसा बढ़ा, साधन बढ़ा, मकान बन गए, पॉवर बढ़ गया, गाड़ी आ गई, परिवार बढ़ गया, बिजनेस बढ़ गया, क्या यह हमारी विकास यात्रा है? भौतिक चीजों के विश्लेषण से ज्ञात करें कि हमारे भीतर की गहराई में संसार बसा है या चेतनता बसी है। वहाँ भौतिकता है या आध्यात्मिकता का गुंजार हो रहा है। हमने अपनी शांति, समाधि व सुख को बढ़ाने के लिए समय निकाला है? हमें राग-द्वेष को जीतकर एवं कषायों को दूर कर वीतरागी बनना है।**''

धर्मसभा में एकासना, उपवास, आयंबिल, अठाई आदि के प्रत्याख्यान हुए। कर्म सिद्धांत की कक्षा में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने मार्गदर्शन प्रदान किया। दोपहर में आगम वाचनी, प्रश्नोत्तरी, ज्ञानचर्चा व जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम महापुरुषों के सान्निध्य में हुए।

दीक्षा रोकने से चिकने कर्मों का बंध होता है

13 अगस्त 2024। भोर की पावन बेला में *'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'* के स्वरों से प्रार्थना में उपस्थित गुरुभक्तों का मन भक्ति से सराबोर हो गया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित साधु-साध्वीवृंद व श्रावक-श्राविकाओं के ज्ञानपिपासु मन को तृप्त करते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने -

'नमन करूँ प्रभु वीर को, वैराग्य पथ सुगम बने।
खिले सुखद प्रभात।।'

वैराग्य चालीसा का सामूहिक पठन कराते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**दो प्रकार का वैराग्य होता है। एक निश्चय में एवं दूसरा व्यवहार में। निश्चय दृष्टि जग जाती है तो वहाँ कुछ भी समस्या नहीं रहती। *'इदं न मम'* यह मेरा नहीं है। प्रत्येक प्राणी अपना-अपना पुण्य व पाप कर्म लेकर आया है। हम केवल औपचारिकता निभाने**

वाले हैं। जिस समय यह निश्चय दृष्टि हमारे अंदर प्रकटित हो जाती है, उस समय सारी दुविधाएँ अपने आप दूर हो जाती हैं। वैराग्य के क्षेत्र में अनुमति की बात चलती है। अनुमति नहीं देते हैं तो कर्मों का बोझ बढ़ता है।

दीक्षा मत रोके थाने फरमायो भगवान।
जो अटकावे घणा चिकणा कर्म बँधावे।।

हम सभी जीव वैरागी की परीक्षा लेना चाहते हैं। वैराग की ए-बी-सी-डी भी नहीं जानते और उनकी परीक्षा की बात करते हैं। यह सोचनीय विषय है। परीक्षा लेना बुरी बात नहीं है, किंतु स्वयं का अवलोकन जरूरी है कि हम कितने गहरे पानी में हैं। हनुमान जी की तरह हमें हमारी शक्ति का अहसास नहीं है। हम अपनी शक्ति को भूल गए हैं। हमें अपनी सोई हुई शक्ति को जगाना है। आरंभ परिग्रह को घटाने की दिशा में हमारा कदम बढ़ना चाहिए।'' इस पर शांतिलाल जी लुणिया, दिल्ली ने तुरंत खड़े होकर दीक्षा लेने के भाव प्रकट किए एवं शीघ्र दीक्षा लेने की बात कही। आचार्य भगवन् ने संयति राजा चारित्र भाग की सुंदर-सरस व्याख्या फरमाई।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने *'संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमें जिनशासन मिला है, महान सद्गुरु का संयोग मिला है। अपने विषय विकारों को दूर करें और संयम की ओर अपने कदम बढ़ाएँ। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'राम गुरुवर मुखमंडल की ज्योति आज सवाई है'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। बड़ा स्नान त्याग करने एवं जितनी उम्र है उतने नवकार गिनने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। मायावरम्, ब्यावर व नगरी सहित देश के अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

रतलाम विराजित साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. के संथारे के पाँचवें दिन के उपलक्ष्य में विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। मुमुक्षु नीरज जी पोखरना, मुमुक्षु बसंती देवी पोखरना एवं मुमुक्षु दर्शना जी नाहटा का अद्भुत त्याग सभी के लिए विस्मयबोधक बना हुआ था।

मुमुक्षु भाई-बहनों का शानदार अभिनंदन व भव्य वरघोड़ा

दीक्षा राग से वीतराग की ओर बढ़ने की महायात्रा है। इसी कड़ी में उभय गुरु-भगवंतों के पावन चरणों में अपना सर्वस्व जीवन समर्पित करने वाले वीतराग पथ के पथिक 45 वर्षीय मुमुक्षु भाई नीरज जी पोखरना (मायावरम्/ब्यावर) , 44 वर्षीय मुमुक्षु बसंती देवी धर्मपत्नी नीरज जी पोखरना एवं 20 वर्षीय मुमुक्षु कु. दर्शना जी नाहटा (नगरी) का श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, बहू मंडल, बालिका मंडल, भीलवाड़ा एवं श्री अ.भा.सा. जैन संघ, आरुग्गबोहिलाभं, महावीर सेवा समिति, महावीर इंटरनेशनल, तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवा परिषद सहित अनेकानेक संस्थाओं द्वारा स्वागत व बहुमान किया गया। समारोह में दीक्षार्थी भाई-बहन व वीर परिजन मंचासीन हो कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे। कार्यक्रम में श्री अ.भा.सा. जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं अनेकानेक स्थानों से पधारे गुरुभक्तों सहित स्थानीय संघ व शाखाओं के पदाधिकारियों तथा सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के शुभारंभ में महिला मंडल एवं समता बहू मंडल द्वारा मंगलाचरण व स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। चातुर्मास संयोजक ने आगत सभी का स्वागत करते हुए कहा कि शिखर महोत्सव चातुर्मास में दीक्षाओं का ठाठ लग रहा है। दीक्षार्थी व परिजनों सहित आप सभी बधाई के पात्र हैं। मधुर भजन गायकों द्वारा प्रस्तुत प्रभु व गुरुभक्ति तथा

संयम से ओत-प्रोत भजनों से संपूर्ण माहौल वैराग्यमय बन गया। समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, अरिहंत महिला मंडल, सुभाष नगर महिला मंडल ने दीक्षा गीत प्रस्तुत किया।

संघ के ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपने भावोद्गार में कहा कि आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर की महत्ती कृपा से संयम शतक में अनेक भव्यात्माएँ श्रीचरणों में समर्पित होने को लालायित व उत्साहित हैं। अभिमोक्षम् शिविर, मोक्षार्थी शिविर, मुमुक्षु शिविर से अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। तीनों मुमुक्षु आत्माओं व परिजनों तथा भीलवाड़ा संघ को जिनशासन की अपूर्व प्रभावना हेतु साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

मुमुक्षु भाई नीरज जी पोखरना ने -

हे प्रभु! मेरी एक पुकार, मैं भी बन जाऊँ अणगार।
छोड़ के सारे पाप अठारह, मैं भी बन जाऊँ अणगार।।

प्रस्तुत करते हुए कहा कि संसार मोह-माया का जाल है। गुरु-भगवंतों की कृपा से शीघ्र ही मैं इस मोह-माया से मुक्त होकर मुक्तिपथ की ओर कदम बढ़ाऊँ, बस यही तमन्ना है।

मुमुक्षु बसंती देवी पोखरना ने कहा कि संयम लेकर आत्मकल्याण कर सकूँ, छह काय जीवों को अभयदान दे सकूँ, इन्हीं भावों के साथ वीतराग पथ की ओर आगे बढ़ रही हूँ। सभी के प्रति अहोभाव व्यक्त करती हूँ।

मुमुक्षु दर्शना जी नाहटा ने कहा कि संयम में सच्चा सुख व आनंद है। संसार के सुख मात्र सुखाभास है। महापुरुषों की कृपा व परिवारजनों के सहयोग से इस महान, श्रेष्ठ वीतराग मार्ग की ओर अग्रसर हो रही हूँ। भीलवाड़ा संघ सहित सभी को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

सभा का संयोजन करते हुए संघ के पूर्व मंत्री व महेश नाहटा ने दीक्षार्थी भाई-बहनों का आत्मिक परिचय दिया। संयम से ओत-प्रोत कई प्रस्तुतियाँ अनेक जनों द्वारा दी गईं। मुमुक्षु भाई-बहनों व वीर परिजनों का शॉल, माला, अभिनंदन-पत्र सहित तिलक लगाकर गणमान्यजनों द्वारा बहुमान किया गया।

मुमुक्षु भाई-बहनों का वरघोड़ा सुरेंद्र जी डूंगरवाल के सुभाष नगर स्थित निवास से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए अरिहंत भवन पहुँचा। रथ पर सवार मुमुक्षु भाई-बहन सभी का अभिवादन स्वीकार कर रहे थे। संपूर्ण मार्ग '**महावीर का दिव्य संदेश, जीओ और जीने दो**', '**जग में सुंदर है दो नाम, जय गुरु नाना, जय गुरु राम**', '**संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं**', '**संयम जीवन सार है, बाकी सब बेकार है**' आदि नारों से गुंजायमान हो रहा था। मार्ग में अनेक स्थानों पर मुमुक्षु भाई-बहनों का स्वागत-अभिनंदन किया गया। इनके आदर्श त्याग को देखकर जैन-जैनेतर जनता भावविभोर हो नतमस्तक हो रही थी।

संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे

युगनिर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. व उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु नीरज जी पोखरना, मुमुक्षु बसंती देवी पोखरना, मुमुक्षु दर्शना जी नाहटा की जैन भागवती दीक्षा अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न

दीक्षा मोह-माया का त्याग है, दीक्षा सिद्धत्व का अनुराग है।
सर्वोच्च है जग में दीक्षा की भूमिका, दीक्षा रत्नत्रय का सहभाग है।।

14 अगस्त 2024। प्रात:काल से ही गुरुभक्तों का हुजूम प्रवचन स्थल की ओर बढ़ रहा था। आज दीक्षा के पावन प्रसंग पर हर कोई साक्षी बन कर्मनिर्जरा करने के लक्ष्य के साथ-साथ आत्मोत्सर्ग की ओर बढ़ रहा था। भीलवाड़ा में दीक्षाओं का कीर्तिमान स्थापित होने जा रहा है। अनेक भव्यात्माएँ आचार्यदेव व उपाध्याय प्रवर के कठोर संयमी जीवन से प्रभावित हो गुरुचरणों में अहोभाव व्यक्त कर रहे हैं।

आज के पावन प्रसंग पर आयोजित विशाल धर्मसभा में धवल वेशधारी चारित्रात्माओं के मध्य उच्च पाट पर विराजित आचार्यदेव तारागणों के मध्य सूर्यसम प्रतीत हो रहे थे। उन पावन विभूति के दर्शनमात्र से भक्तों का मन पवित्र हो श्रीचरणों में बारंबार प्रणति कर रहा था। धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय, संयम सुमेरु आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**भौतिकता की चकाचौंध में संतप्त प्राणियों के लिए शांति व तनावमुक्त जीवन बहुत कठिन विषय है। यदि अपने मत को किनारे कर दिया जाए तो सारी अशांति दूर हो जाएगी। हमारे मन में अशांति भरी हुई है। एक ही बात को बार-बार रिपीट नहीं करेंगे तो मन अमन की दिशा में आगे बढ़ सकता है। एक निर्णय लिया और तत्काल फाइनल। अभय कुमार की बुद्धि पवित्र निर्मल थी, क्योंकि वे तत्काल किसी भी चीज का निर्णय ले लेते थे और किसी भी समस्या का समाधान ढूँढ़ लेते थे। बुद्धि की सक्रियता के साथ निर्मलता व पवित्रता जरूरी है। ईर्ष्या, डाह, नफरत में बुद्धि के दुर्गुण हैं, जो बुद्धि को मलिन बना देते हैं। मुझे किसी से भी ईर्ष्या, द्वेष नहीं करना है। मुझे मेरे मन में किसी के प्रति नफरत के भाव पैदा नहीं करने। सहनशीलता के गुण को आगे बढ़ाना है। कब तक सहना? जब तक जीवन है तब तक सहना है। मुमुक्षु नीरज जी बसंती जी पोरवरना ने अपने जीवन को मोड़ दिया और अपना लक्ष्य बना लिया कि अब साधु जीवन स्वीकार करना है। दर्शना नाहटा ने भी मन में संकल्प कर लिया तो कार्य संभव हो गया। यदि हम दीक्षा ले सकें तो बहुत ही अच्छी बात है और अगर नहीं ले पा रहे हैं तो कम से कम दीक्षा लेने वाले का समर्थन करें, अंतराय नहीं देवें। इस दीक्षा प्रसंग से प्रेरणा लें कि कोई हमारे साथ कैसा भी बर्ताव करे, हम पलटकर जवाब नहीं देंगे।**'' तुरंत कई भाई-बहनों ने खड़े होकर आचार्य भगवन् के श्रीमुख से संकल्प ग्रहण किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**ये मुमुक्षु आत्माएँ जीवन की महानतम यात्रा करने निकली हैं। यह परम आनंद की यात्रा है। संयम साधना हर क्षण आनंद के लिए है। हमारा आनंद हमारे भीतर है। यतना, उपयोग, संयम यही सुख देने वाले हैं। हम भी इस दीक्षा प्रसंग से प्रेरणा लें कि हम दुनिया के जंजाल से मुक्त बनें और अपनी आत्मशक्ति को जगाएँ।**'' उपाध्याय प्रवर ने असीम कृपा करके 12 से 18 अक्टूबर तक भीलवाड़ा में '**द्वितीय मोक्षार्थी शिविर**' के आयोजन हेतु आगारों सहित स्वीकृति प्रदान की। पश्चिम बंगाल सहित अनेक क्षेत्रों के लोगों में शिविर के प्रति जिज्ञासा है। धर्म को जानने-सीखने का एवं गुरुचरणों में कुछ पाने की अभिलाषा लोगों में प्रत्यक्ष देखने को मिल रही है।

उपाध्याय प्रवर ने दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए मुमुक्षु भाई-बहनों से दीक्षा की तैयारी के बारे में पूछा तो तीनों मुमुक्षुओं ने शीघ्रातिशीघ्र संयम पथ प्रदान करने का निवेदन किया। उपस्थित जनसमूह से दीक्षा की स्वीकृति हेतु पूछा तो राष्ट्रीय व स्थानीय संघ पदाधिकारियों, सदस्यों, मुमुक्षु परिजनों सहित उपस्थित हजारों गुरुभक्तों ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा की पूर्ण अनुमोदना करते हुए कर्मनिर्जरा का लाभ लिया। मुमुक्षु भाई-बहनों ने उपस्थित सभा व 84 लाख जीवयोनि से जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना की।

आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से संपूर्ण सावद्य योगों का त्याग करवाकर तीनों दीक्षार्थियों को नवकार महामंत्र के पाँचवें पद '**नमो लोए सव्वसाहूणं**' पर आरूढ़ किया। उपाध्याय प्रवर ने संपूर्ण दीक्षा विधि पूर्ण करवाकर नवीन नामकरण में क्रमश: **नवदीक्षित संत श्री रामनंदन मुनि जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामबिंदु श्री जी म.सा.** एवं **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदीपिका श्री जी म.सा.** के नाम की उद्घोषणा की। संपूर्ण सभा जय-जयकारों से गूँज उठी।

केशलुंचन का कार्य आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. के करकमलों से संपन्न हुआ।

दीक्षा के पावन प्रसंग पर श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने '***सुनते हैं दया तेरी, दिन-रात बरसती है***' गीत के साथ फरमाया कि जब त्रिखंड के अधिपति श्रीकृष्ण प्रतिदिन अपनी माता के चरणों में वंदन करते थे तो हम प्रणाम-वंदन क्यों नहीं करते? मेरे में क्या कमी है जो मैं दीक्षा नहीं ले पा रहा हूँ? जो भी दीक्षा लें उनका पूरा सहयोग करें। संयम में श्रद्धा, गुरु पर श्रद्धा रखते हुए संयम लेना है। मुनिश्री ने पर्युषण पर्व के प्रथम, द्वितीय व तृतीय दिवस पर एक तेला करने का आह्वान करते हुए 1008 तेला तप करने का लक्ष्य दिया।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने '***भाग्यशाली हैं हम पुण्यशाली***' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जो क्षण को जानता है वह पंडित होता है। कर्मों से वही लड़ता है जो समय को समझता है। समय अमूल्य है। जीवन अनमोल है। जीवन की शुरुआत और अंत गुरु से ही होता है। गुरुचरणों में ही शांति-समाधि मिलती है। हम गुरु आज्ञा की आराधना करें।

साध्वी श्री मृणाल कँवर जी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि गुरु के प्रति हमारी श्रद्धा अटूट होनी चाहिए। हर पल, हर क्षण गुरु का साथ बना रहता है। गुरु का वरदहस्त सदैव बना रहे। मुमुक्षु आत्माएँ संयम से सिद्धत्व की ओर बढ़े।

मुमुक्षु शिविरार्थी बहनों ने अपनी अभिव्यक्ति में कहा कि गुरु-भगवंतों की वाणी हमारे साथ सदा रहेगी। हम भी चैतन्य की यात्रा पर बढ़ें। '***तेरी भक्ति में है अर्पण, तुझको जीवन है समर्पण***' गीत के माध्यम से वैराग्य भाव प्रकट किए।

श्री राजन मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री रामयश मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा., श्री रामलक्ष्य मुनि जी म.सा. ने '***तोड़ें बंधन, रिश्ते-नाते***' सुंदर गीतिका प्रस्तुत की।

संघ के पूर्व मंत्री व महेश नाहटा ने आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं दीक्षार्थियों के जीवन से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। तपस्या के क्रम में प्रवीण जी संचेती (विजयनगर) ने 1077वाँ एकासना या आजीवन एकासना का प्रत्याख्यान लिया।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, विजयनगर द्वारा आगामी 7 फरवरी 2025 के दीक्षा व महत्तम शिखर महोत्सव प्रसंगों की पुरजोर विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा सहित देश-विदेश से आगत हजारों श्रद्धालुओं ने दीक्षा साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। विराट दीक्षा महोत्सव को सफल बनाने में श्री साधुमार्गी जैन संघ, सकल जैन समाज का सराहनीय योगदान रहा।

संथारा साधिका साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. को भावांजलि अर्पित

15 अगस्त 2024। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना में देव, गुरु, धर्म को समर्पित स्तुति से उपस्थित गुरुभक्तों का जीवन उल्लास से भर गया। रतलाम में चातुर्मासार्थ विराजित साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. के संथारापूर्वक महाप्रयाण पर आयोजित गुणानुवाद सभा में धीर, वीर, गंभीर आचार्य भगवन् ने शांत-गंभीर मुद्रा में फरमाया कि ''आज का प्रसंग आप सभी को विदित है। साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. ने संलेखना-संथारा स्वीकार किया। आहार के प्रति अरुचि हो गई। उनको बताया गया कि आपको अमुक बीमारी हो गई है। सुनकर उनके मन में कोई हड़कंप पैदा नहीं हुआ, अपितु चेहरे पर प्रसन्नता खिल गई और कहा कि मुझे संथारा करवा दो। उनके आग्रह को देखकर साध्वी श्री प्रीति श्री जी म.सा. ने संथारे के पच्चक्खाण करवा दिए। संलेखना का अर्थ कषायों को पतला करना होता है। साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. का जन्म बीकानेर के किशनलाल जी पुगलिया के घर-आँगन में हुआ था। 23 वर्ष की आयु में राणावास चातुर्मास में दीक्षा ग्रहण कर 44 वर्षों तक संयम का पालन किया। आप में सेवा करने की खूब ललक थी। आपने सरल व समाधि भावों में साधु जीवन की आराधना कर अंतिम क्षणों में संथारा स्वीकार कर लिया। साधना में धैर्य होता है। समाधि व साधना की निष्पत्ति है संलेखना। साध्वीजी ने अपने आप ही मन को भावित किया। हमारा भी लक्ष्य यही होना चाहिए। हमारी साधना की निष्पत्ति संलेखना से हो। हमारा भी पंडितमरण हो। आज 15 अगस्त है। पूरे भारत में जगह-जगह पर आजादी के गीत गुँजाए जा रहे हैं। हम देश के हिसाब से आजाद हो गए हैं, परंतु मानसिकता से अभी तक आजाद नहीं हुए हैं। कषाय हमारे पर बहुत ज्यादा हावी हैं। स्वार्थ, तृष्णा भी हावी हैं। जब पुद्गल की प्रीत खत्म हो जाती है, तब संथारा आता है। देश को आजाद करने के लिए कितनी ही कुर्बानियाँ देनी पड़ी थीं। हमें भी अपने कषाय, अहंकार, लोभ, लालच की कुर्बानियाँ देनी होंगी, तभी हमें आजादी मिल पाएगी।'' '***आजादी का समय सुहाना, मिलकर गाएँ गान, जय-जय भारत देश महान***' गीत की प्रस्तुति से सभी के दिल में देशभक्ति की भावना हिलोरे लेने लगी।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि समय मात्र का भी प्रमाद मत करो। यह समय हमारा है तो क्रोध आदि करने में इसे खराब क्यों कर रहे हैं। हम अपने जीवन में बदलाव नहीं करेंगे तो गुरु भी हमारा कल्याण नहीं करेंगे।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा, श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने '***जन-मन हर्ष सभा में, हो रही है घर-घर में जय-जयकार***' गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संथारा साधिका साध्वीश्रीजी ने अपने तीनों मनोरथ पूर्ण कर लिए। व्यक्ति को कषाय, ईर्ष्या से सदैव ही दूर रहना चाहिए। कर्म बंधन के रास्ते पर चलोगे तो आत्मकल्याण नहीं होगा।

पूर्व मंत्री ने साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. के त्यागमय जीवन को सभी के लिए आदर्श बताया। अंत में सभी ने चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। भीलवाड़ा शिखर महोत्सव चातुर्मास अपूर्व धर्माराधना के साथ गतिमान है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा.	13 उपवास (30 उपवास के प्रत्याख्यान)	श्री इभ्य मुनि जी म.सा.	8 उपवास
		श्री गगन मुनि जी म.सा.	8 उपवास

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	प्रेमचंद जी भंडारी–पारसोली, ताराचंद जी भूरा–देशनोक, कला जी बाफना–उदयपुर, सुरेंद्र जी, विजय कुमार जी भूरा–अहमदाबाद अशोक जी जैन–भीलवाड़ा, रामनिवास जी जैन–उखलाना, हरिकेश जी संता बाई जैन–उखलाना, महावीर जी अनोखी बाई जैन–उखलाना, सोहनलाल जी भाणावत, विजयराज जी मैना देवी कातेला–चंडीगढ़/देशनोक, ज्ञानचंद जी मुणोत–ब्यावर, राजकुमार जी इंद्रा देवी डोसी–जोधपुर, रमेश जी दोसी–बेंगलुरु, नीलमचंद जी आशा देवी मेहता–पीसांगन, जीवनलाल जी–देवी बाई नाहटा–नगरी, उदयराज जी–विमला देवी कोचर–खैरागढ़, नाहर सिंह जी–राजुल देवी खारोल, रोशनलाल जी पितलिया–कोटा
वर्षीतप	गुणमाला जी कुदाल–कानोड़, सुशीला देवी अब्बाणी–निम्बाहेड़ा, रामी देवी संचेती–रायपुर, रेखा जी बुरड़–भीलवाड़ा
	10वाँ – कुसुम जी नागौरी
उपवास	**31 –** अंजना देवी पोखरना–बेगूँ, नाथूलाल जी डूंगरवाल–भीलवाड़ा, प्रिया जी भूरा–भीलवाड़ा, दीपक जी मोगरा–उदयपुर
	30 – धर्मेंद्र जी छाजेड़
	22 – केसर बाई दुग्गड़–सोमेसर (जारी)
	17 – आशा जी कोटड़िया
	15 – अंकित जी नाहर–जाटगाँव
	14 – वचन जी मोगरा–उदयपुर
	11 – संजू जी बाँठिया, ललिता देवी दुग्गड़, रीता जी गोखरू, सुनीता जी मोगरा–भीलवाड़ा, सरोज जी पानगड़िया–सरेरी
	9 – हेमा जी मेहता–ब्यावर, सुरेंद्र जी पानगड़िया–सरेरी, कैलाश बाई बलाई–बाड़ी
	8 – रतन जी देसरड़ा, सिद्धार्थ जी कोठारी

अन्य कई गुप्त तपस्याएँ जारी...

-महेश नाहटा

"मन तो दर्पण है, स्फटिक के समान स्वच्छ, निर्मल। उसके सामने मनोवर्गणा की जिन वृत्तियों का प्रतिबिंब पड़ता है, वही हमें अनुभूत होता है और इसमें मारा जाता है 'मन'। चित्त उसके पीछे होता है। उस चित्त में जिन वृत्तियों का संयोग या निर्माण होता है, उनके कारण हम चित्तवृत्ति को जान नहीं पाते और उन चित्रों को देखकर सोच लेते हैं कि मन खराब है। किसी व्यक्ति का फोटो देखकर हम कहें कि व्यक्ति खराब है तो यह अनुचित होगा क्योंकि फोटो तो व्यक्ति नहीं है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

अपने आचार्यदेव को जानें

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष को '**महत्तम शिखर**' के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पाठकों को आचार्यश्री के जीवन से परिचित कराने के लिए उनका जीवन चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। यह चित्रण 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से प्रारंभ हुआ है, जो 12 माह तक श्रमणोपासक के समाचार अंकों में प्रकाशित किया जाएगा। इसके अंतर्गत आचार्यदेव का संपूर्ण जीवन- **बाल्यकाल, युवावस्था, मुनि प्रवर, युवाचार्य एवं आचार्य अवस्था** आदि विभिन्न पड़ावों का वर्णन किया जाएगा। इन पड़ावों के आधार पर पाठकों के समक्ष कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाएँगे, जिनके उत्तर पाठकों को भरकर भिजवाने होंगे। इस शृंखला के अंतिम पड़ाव के रूप में **फरवरी 2025** के अंक में वर्षभर में दिए गए संपूर्ण चित्रण पर एक मुख्य प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसमें वर्षभर में प्रकाशित विभिन्न पड़ावों पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। अत: पाठकों से आग्रह है कि 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाशित संपूर्ण सामग्री संग्रहित करके रखें।

परिवर्तन के लिए पात्रता

दृष्टिकोण – दृष्टिकोण का शाब्दिक अर्थ है किसी बात या विषय को किसी खास पहलू से देखने या विचारने का ढंग व नजरिया। हर व्यक्ति का अपना एक दृष्टिकोण होता है। आचार्य की दृष्टि कुछ विशेष की खोज में रहती है, जिसमें कुछ निरालापन हो। इस विशेष की खोज में तीन बिंदुओं का समावेश अतिआवश्यक है –

1. आप किसी परिस्थिति को कैसे देखते हैं।
2. जिसका उस परिस्थिति से संबंध है वह कैसे देखता है।
3. जिसका परिस्थिति से कोई संबंध नहीं है वह इसे कैसे देखता है।

इन तीनों परिस्थितियों को समाहित कर किसी भी निर्णय को लेने वाला व्यक्ति ही विशेष कहलाता है।

इसी विशिष्ट गुण को आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. ने मुनि राम के भीतर पनपते हुए देख लिया। इसका नतीजा था कि आचार्य प्रवर ने धीर, वीर, गंभीर व्यवस्थापन्न की पात्रता धारण किए हुए सरल, सहज स्वभावी मुनि राम को 22 सितंबर 1990, आसोज शुक्ल 2 को चित्तौड़गढ़ में '**मुनि प्रवर**' पद पर विभूषित करते हुए चातुर्मासिक विनतियाँ सुनने, चातुर्मास की घोषणा करने, विहार व संघों के विवाद का समाधान करने आदि अधिकार सौंप दिए। यद्यपि मुनि राम मुनि प्रवर का कार्य वर्षों से करते आ रहे थे, परंतु वैधानिक रूप से 22 सितंबर 1990 को अधिकार प्रदान कर मुनि प्रवर के गौरव को अभिवृद्धित किया।

मुनि राम अब मुनि प्रवर श्री राम बन चुके थे। मुनि प्रवर राम के नाम में ही एक अनोखा मिठास, शीतलता, सरलता समाई हुई थी। मुनि प्रवर ने आचार्य प्रवर को निवेदन किया। निवेदन के रूप में एक लंबा-सा पत्र गुरुदेव को लिखा गया। इसमें उन्होंने काफी आग्रहपूर्वक लिखा कि कृपया मुझे इन सभी अधिकारों से मुक्त रखें। मैं आपकी सेवा में सदैव तत्पर हूँ, परंतु मुझे इस पद से मुक्त रखें।

नाना गुरु की पारखी नजरों में तो मुनि प्रवर श्री राम की कोई विशिष्ट झलक ही परिलक्षित हो रही थी। गुरुआज्ञा को शिरोधार्य कर मुनि प्रवर श्री राम ने दिए गए सभी कर्तव्यों का निर्वाह भली प्रकार से किया।

मुनि प्रवर श्री राम द्वारा पदमुक्त रखने की बात 'पद लोलुपता' का खंडन करती है। आज संघ, समाज में प्राय: देखा जाता है कि व्यक्ति नाम व पद के पीछे अंधी दौड़ लगा रहा है और इस अंधी दौड़ में मार्ग से भटक रहा है। पद का अर्थ जिम्मेदारी से है, न कि नाम व प्रतिष्ठा से। जिम्मेदारी का अर्थ मात्र कार्य में रही भूलों, त्रुटियों, खामियों व कमियों की जिम्मेदारी स्वयं पर लेना है।

वर्तमान आचार्य भगवन् फरमाते हैं कि ***''जो कार्य का श्रेय दूसरों को देते हैं और गलतियों के लिए खुद को जिम्मेदार समझते हैं, वे व्यक्ति किसी महत्वपूर्ण दायित्व को दिए जाने के योग्य पात्र होते हैं।''***

मुनि प्रवर राम ने अपने भीतर छुपे महान लक्ष्य को पहचाना, उसे प्रगटाने के लिए निरंतर साधना की और उस साधना का साध्य बनाया स्वयं के शरीर को। उनकी निरंतर साधना का ही परिणाम है कि अल्पायु में ही उन्हें इतने बड़े पद पर सुशोभित किया गया। संघ संचालन में कौन से गुण परमावश्यक है तथा किन गुणों की आवश्यकता दूसरे, तीसरे नंबर पर है, इसका सही समाकलन करने वाला ही आचार्य पद के योग्य व्यक्ति को पहचान सकता है।

आचार्य पद जितना महत्तम है, उतनी ही इस पद की महत्तम गरिमा, महत्तम पुरुषार्थ, महत्तम सर्गपणा है। गहन चिंतन, मनन, अनुसंधान व परीक्षणों के उपरांत आचार्य श्री नानेश की पारखी निगाहें मुनि राम पर स्थिर हो गईं।

कहते हैं राम कि गुरुवर मुझे ना इतना भार दो।
तुम्हारा आशीष ही काफी, बस एक नजर से तार दो।।
मेरा नहीं यह फैसला, समय का है।
समर्थ हो तुम, दिया जो दायित्व संभाल लो।।
खूबियाँ हैं पाई, पूर्वाचार्यों की तुम हो परछाई।
आभास है मुझे, पूर्ण विश्वास भी।।
संघ को ऊँचाइयों पर पहुँचाओगे।
दिया जो दायित्व, बहुत खूब निभाओगे।।
पुरुषार्थ हमारा व्यर्थ ना होगा।
हु शि ऊ चौ श्री ज ग नाना, राम भी चमकेगा।।

मुनि प्रवर राम अपने दायित्वों का भली-भाँति निर्वहन कर आत्महित और संघहित में तालमेल बिठाकर अनवरत गतिमान थे।

वक्त ने अपनी रफ्तार पकड़ रखी थी तो मुनि प्रवर राम भी पीछे नहीं थे। 17 वर्षों बाद समय फा फेरा पूरा हुआ और राम नवदीक्षित मुनि राम से मुनि प्रवर राम बनकर अपनी जन्मस्थली पर पधारे। मुनि राम का स्वागत आबाल-वृद्ध के साथ-साथ प्रकृति स्वयं कर रही थी।

मरुभूमि बीकानेर के देशनोक ग्राम में 21 दीक्षाओं का भव्य महोत्सव। 100 साधु-साध्वियों का सान्निध्य। ऐसा अद्भुत नजारा पुण्यवानी से ही देखने को मिलता है। दीक्षा के बाद दो दिन तक आचार्यश्री जी की सन्निधि एवं प्राय: सभी साधु-साध्वियों की उपस्थिति में नवदीक्षितों के लिए शिक्षा सत्र चले। इन सत्रों में आचार्यश्री जी ने

साध्वाचार के संबंध में नवदीक्षितों को व्यापक जानकारी दी।

शिक्षा सत्रों के बाद काफी दिनों तक साधु समाचारी, संघीय व्यवस्थाओं के बारे में विचार-चर्चाएँ चलीं, जो अपने आप में अत्यंत महत्त्वपूर्ण थी। इन कार्यक्रमों में अन्य संतों के साथ मुनि प्रवर ने तत्परता से कार्य किया।

2 मार्च 1992 को प्रात: प्रतिक्रमण के समय आचार्यश्री जी ने आदेश दिया कि सभी संत आज प्रार्थना में पधारेंगे। महासतियाँ जी को भी यथासमय सूचना मिल गई।

आदेशानुसार साधु-साध्वियाँ प्रार्थना सभा में पहुँच गए। आचार्य प्रवर ने प्रार्थना के पश्चात् मुनि प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. को समग्र उत्तराधिकारों के साथ अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इस घोषणा का चतुर्विध संघ ने भारी उत्साह के साथ स्वागत किया। '**युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की जय**' के साथ नभ मंडल गूँज उठा। साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

एक-दो दिन बाद ही बीकानेर संघ के अत्याग्रह एवं साधु-साध्वियों के विनम्र निवेदन पर बीकानेर में ही फाल्गुन शुक्ल 3 को चादर प्रदान करने की घोषणा कर दी गई। फाल्गुन शुक्ल 3 के यथासमय शुभ मुहूर्त में चतुर्विध संघ की साक्षी व अनुमोदनापूर्वक समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने अपनी श्वेत, शुभ्र, धवल, निर्मल, पवित्र चादर युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. को ओढ़ाई। वह चादर प्रदान दृश्य बड़ा ही मनोहारी था। जय-जयकारों के नारों से काफी समय तक वातावरण गूँजता रहा।

आचार्यदेव ने फरमाया कि ***''जैसी आपकी मुझ पर आस्था है वैसी ही युवाचार्य श्री रामलाल जी म.सा. पर भी रखें। इन्हें मेरे जैसा ही समझें। इनकी आज्ञा को मेरी आज्ञा मानकर चलें।''***

युवाचार्य के रूप में मुनि प्रवर राम के मनोनयन की घोषणा पर आपश्री जी को कैसा लगा, आपश्री जी की क्या अनुभूति रही? इस संदर्भ में युवाचार्य श्री राम ने फरमाया कि ***''उक्त घोषणा के समय विराट चतुर्विध संघ के संचालन की परिकल्पना से मैं स्वयं में काफी भारीपन-सा अनुभव कर रहा था। आचार्य भगवन् की सन्निधि में रहते हुए संघ संचालन के अनुभवों के आधार पर मेरे मन-मस्तिष्क में एक ही प्रश्न घूम रहा था कि क्या इस विराट संघ का संचालन करने में मैं सक्षम हो सकूँगा?***

काफी सोच-विचार के पश्चात् भी मैं इसका समाधान नहीं ढूँढ़ पा रहा था। अंततोगत्वा संकल्प इस रूप में जागृत हुआ कि आचार्यदेव का आशीर्वाद ही इस गुरुत्तर कार्य के निर्वहन में सक्षमता प्रदान करेगा। इससे मुझे उस भारीपन से राहत की अनुभूति हुई, साथ ही कर्तव्य के प्रति दृढ़ संकल्प जागृत हुआ।''

प्रश्नावली

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्रश्न 1. मुनि राम ने अपनी साधना के लिए साध्य बनाया स्वयं के .....।

प्रश्न 2. मुनि राम ..... वर्षों बाद अपनी जन्मस्थली ..... पधारे, वो भी मुनि से ..... बनकर।

प्रश्न 3. मरुभूमि बीकानेर में ..... गाँव में ..... दीक्षाओं का भव्य महोत्सव ..... साधु-साध्वियों का सान्निध्य।

प्रश्न 4. शिक्षा सत्र में मुनि प्रवर ने ..... के बारे में जानकारी दी।

प्रश्न 5. ..... को प्रात: प्रतिक्रमण में सभी चारित्रात्माओं को ..... में आने का आदेश दिया।

प्रश्न 6. ..... में फाल्गुन शुक्ला ..... को ..... प्रदान करने की घोषणा की।

प्रश्न 7. ..... में मुनि प्रवर पद पर विभूषित किया गया।

प्रश्न 8. आचार्य प्रवर ने मुनि राम को ..... को मुनि प्रवर पद प्रदान किया।

संक्षिप्त में उत्तर दीजिए -

प्रश्न 9. 'दृष्टिकोण' को दी गए सामग्री के अनुसार समझाइए।

प्रश्न 10. उपरोक्त गद्यांश के अनुसार मुनि प्रवर राम का स्वभाव समझाइए।

प्रश्न 11. किसी भी दायित्व को दिए जाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण पात्रता क्या है?

प्रश्न 12. आचार्य प्रवर की दृष्टि से मुनि राम में क्या-क्या गुण सन्निहित थे?

प्रश्न 13. मुनि राम की 'पद लोलुपता' का खंडन कौन-सी बात करती है?

उत्तर भिजवाने हेतु WhatsApp No. : 9314055390
Email : shramanopasak @sadhumargi.com

अंतिम तिथि
25 सितंबर 2024

प्रतियोगिता

भगवन् का जीवन, हमारा आदर्श

देश के अनेक स्थानों में विचरण व चातुर्मास आदि विविध प्रसंगों पर परम पूज्य आचार्य भगवन् के सान्निध्य का लाभ प्राप्त हुआ है। इस दौरान अनेक सुश्रावक-सुश्राविकाओं को आचार्य भगवन् के जीवन को नजदीक से जानने-समझने का अवसर मिला है। यदि आपके ध्यान में आचार्य भगवन् के जीवन, जीवन चारित्र, संघीय व्यवस्था, श्रावक-श्राविकाओं संबंधी कुछ विशेष घटनाएँ या संस्मरण हों, जो आपने प्रत्यक्ष देखे हों तो उन्हें अपने शब्दों में पिरोकर हमें भिजवाने का कष्ट करें। साथ ही यह भी अंकित करें कि आप द्वारा लिखित संस्मरण से हमें क्या शिक्षा मिलती है एवं यह संस्मरण आचार्य भगवन् की कौनसी विशेषता को उजागर करता है। आप द्वारा भेजा गया विवरण यथाशीघ्र ही हमें प्राप्त हो सके यह लक्ष्य रखें।

सारगर्भित शब्दांकन, सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित एवं शब्द रचना में जिन श्रावक-श्राविकाओं की रचनाएँ सर्वश्रेष्ठ होंगी उन्हें विजेता के रूप में **प्रथम ₹1100/-**, **द्वितीय ₹700/-**, **तृतीय ₹500/-** एवं **सांत्वना (पाँच) ₹251/-** के पुरस्कार से सम्मानित किया गया जाएगा। आपका सार्थक प्रयास अन्यों के लिए प्रेरणीय होगा।

-श्रमणोपासक टीम

राम चमकते भानु समाना

विविध समाचार

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

भूपालपुरा, उदयपुर। शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश 15 जुलाई को जुहार जैन भवन में हुआ। इस अवसर पर भूपालपुरा सहित आस-पास के अनेक स्थानों से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। प्रवेश पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में शासन दीपिका साध्वीश्री जी ने चातुर्मास काल में अधिकाधिक तप-त्याग, ज्ञान-ध्यान करने तथा प्रतिदिन के 24 घंटों में से 96 मिनट अपनी आत्मा के लिए देने हेतु आह्वान किया। प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, धार्मिक कक्षा व ज्ञानचर्चा में अच्छी उपस्थिति रहती है। 17 जुलाई को आयोजित **'पावकम्मं न बंधई'** महिला शिविर में 130 महिलाओं ने भाग लिया। चातुर्मासिक स्थापना दिवस पर 15 तेला व 1021 सामायिक की आराधना हुई। 28 जुलाई को **'फुटप्रिंट पैरेंटिंग'** सेशन के आयोजन में 240 अभिभावकों ने भाग लेकर चारित्रात्माओं से मार्गदर्शन प्राप्त किया। धार्मिक कक्षा में 70 से अधिक महिलाओं की उपस्थिति रहती है। चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग का ठाठ लगा हुआ है।

–यशवंत कटारिया

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

बीकानेर। शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा., श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-8 सेठिया कोटड़ी में एवं पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-15 समता साधना भवन (मालू कोटड़ी) में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। प्रतिदिन प्रार्थना श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. फरमाते हैं। प्रवचन सभा में श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सम्यक् साधना ही हमारा संसार चक्र कम करने में सहयोगी बनेगी।

श्री रमेश मुनि जी म.सा. ने **'समता की साधना कैसे बने'** विषय पर फरमाया कि विषम परिस्थिति में समभावों पर अटल रहने से ही हमारी साधना का सही परिणाम होगा। मिथ्यात्व से बचने का प्रयास करते रहें। सुदेव, सुगुरु, सुधर्म पर अटूट श्रद्धा बनी रहे।

साध्वी श्री निष्ठा श्री जी म.सा. व साध्वी श्री भवपार श्री जी म.सा. ने गुरु पूर्णिमा पर **'हमारे जीवन में गुरु का महत्त्व'** विषय पर विशेष प्रवचन फरमाया।

–सुरेंद्र पारख

गंगाशहर-भीनासर। शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 का 12 जुलाई को श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में जय-जयकारों के साथ मंगलमय चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। प्रवेश पश्चात् श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने भगवान महावीर की श्रद्धा-भक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना करवाई। श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने **'मेरी झलक – सबसे अलग'** विषय की मीमांसा करते हुए फरमाया कि चातुर्मास में सभी अपने-अपने कर्तव्यों को समझते हुए अधिकाधिक धर्माराधना करके कर्मनिर्जरा का लक्ष्य रखें।

श्री विनय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इस पावन प्रवास में जीवन जीने की कला सीखनी है।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि चातुर्मास में सभी श्रावक-श्राविकाएँ अधिकाधिक धर्माराधना करते हुए जिनवाणी, प्रार्थना, तप-त्याग का लाभ लेने का लक्ष्य रखें।

शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 का 11 जुलाई को महिला समता भवन, शिवा बस्ती में मंगल प्रवेश हुआ। आपश्रीजी के सान्निध्य में धर्म-ध्यान का ठाठ लगा हुआ है। प्रत्येक रविवार को समता शाखा का आयोजन होता है।

चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ 1 जुलाई को मुमुक्षु बहन करुणा जी गुलेच्छा, जोधपुर एवं 29 जुलाई को मुमुक्षु दंपत्ति नीरज जी पोखरना व बसंती देवी पोखरना का आगमन हुआ। म.सा. के दर्शन-वंदन पश्चात् दोनों दिवस श्री जैन जवाहर विद्यापीठ पौषधशाला में अलग कार्यक्रम आयोजित कर मुमुक्षु भाई-बहनों का भावभीना अभिनंदन श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संस्थान के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। मुमुक्षु बहन ने त्याग व वैराग्य से ओत-प्रोत भाव रखे।

मुमुक्षु दंपत्ति का तिलक, माला से शानदार अभिनंदन संघ पदाधिकारियों द्वारा किया गया। द्वय अवसरों पर संघ अध्यक्ष ने आभार प्रकट किया। इस अवसर पर संघ, महिला मंडल, समता युवा संघ, बहू मंडल, बालिका मंडल के पदाधिकारियों व सदस्यों सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। जय-जयकारों की मंगल ध्वनि के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

चातुर्मास प्रारंभ से ही प्रातःकालीन प्रार्थना श्री विनय मुनि जी म.सा. करवा रहे हैं। प्रार्थना पश्चात् धार्मिक कक्षा चल रही है, जिसमें जैन तत्त्व निर्णय पुस्तक पर विवेचन चल रहा है। कक्षाओं में भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रहती है। प्रातःकालीन कक्षा में आयोजित परीक्षा में परीक्षार्थी उत्साह से भाग ले रहे हैं। प्रवचन में श्री विनय मुनि जी म.सा. श्रावक के 21 गुणों, वीर दमन राजा व पद्मावती रानी का जीवन चरित्र आदि समझाकर प्रेरणा दे रहे हैं। प्रतिदिन प्रतिक्रमण व संवर की आराधना निरंतर जारी है। प्रत्येक रविवार को दया व दयाभाव का कार्यक्रम चल रहा है। आयंबिल व एकासना की लगभग 17 लड़ियाँ चल रही हैं। बाहर से दर्शनार्थियों का आवागमन हो रहा है। तपस्याओं के क्रम में चातुर्मास प्रारंभ से ही 12 एकासना, तेला एवं आयंबिल की लड़ी चल रही है। लगभग 30 तेला, 4 उपवास की 1, 5 उपवास की 2, 6 उपवास की 1, अठाई 6, 9 उपवास की 1 तपस्याएँ हो चुकी हैं। अन्य अनेक तपस्याएँ गतिमान हैं।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में संथारा साधिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. के महाप्रयाण पर स्मृतिसभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साध्वीवर्या के जीवन में जबरदस्त सरलता थी। तत्पश्चात् श्री विनय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि महासती जी के जीवन में सरलता, सहजता, सौम्यता की त्रिवेणी विद्यमान थी। साधु नहीं, साधुता पूजी जाती है। चरण नहीं, आचरण पूजा जाता है।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. सहज भाव से जीने वाली साध्वी थीं। आपने संयम के साथ 47 वर्ष तक शासन की भव्य प्रभावना की और आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के शासन में सेवा करके जीवन को सार्थक बना लिया। अन्य अनेक वक्ताओं ने भी श्रद्धाभाव अर्पित किए। अंत में सभी ने 4-4 लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

महिला व बहू मंडल का '**आओ बनें विवेकशीला**' धार्मिक शिविर 12 अगस्त को प्रारंभ हुआ, जिसमें 182 महिलाओं को श्री मधुर मुनि जी म.सा. गोचरी संबंधी विषय पर विशेष मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

–चंचल कुमार बोथरा

नोखा। शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में समता संस्कार पाठशाला के बच्चों का 9 दिवसीय समर कैंप 3 से 12 जून तक ग्रीनलैंड स्कूल में आयोजित किया गया। दो आयु वर्गों में आयोजित इस कैंप में 127 बच्चों ने भाग लिया। शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. ने **'तीर्थंकर के पंचकल्याणक'**, **'समवसरण'**, **'गर्भ का दुःख'**, **'आओ जीवन सजाएँ'** आदि प्रेरणादायक विषयों पर ज्ञानार्जन करवाया। साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. ने ऋषभदेव भगवान का जीवन चारित्र फरमाया। कैंप के माध्यम से कुछ नए बच्चे भी पाठशाला से जुड़े। कैंप समापन कार्यक्रम में बच्चों ने कैंप के अनुभव साझा किए। स्थानीय प्रभारी, अध्यापिकाओं व पाठशाला संयोजक का सराहनीय सहयोग रहा।

-संयोजक, समता संस्कार पाठशाला

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। पर्याय ज्येष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा., पर्याय ज्येष्ठ श्री प्राणेश मुनि जी म.सा., शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-6 के सान्निध्य मे चातुर्मासिक स्थापना दिवस तेला तप व सामायिक दिवस के रूप में तप-त्याग के साथ मनाया गया। इससे पूर्व आपश्रीजी के दर्शनार्थ मुमुक्षु बहन दर्शना जी नाहटा, नगरी का 18 जुलाई को पधारना हुआ। श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्त्वावधान में आनंद भवन में मुमुक्षु बहन व वीर माता-पिता किरण जी जितेंद्र जी नाहटा सहित परिजनों का संघ पदाधिकारियों द्वारा शॉल, माला व तिलक लगाकर अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष, महामंत्री, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित महिला मंडल व युवा संघ सदस्यों की उपस्थिति रही।

चातुर्मासिक स्थापना दिवस पर आयोजित धर्मसभा में साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा में ही मोक्ष है, बाहर कुछ नहीं है। आत्मा की पहचान करने पर ही जन्म-मरण से मुक्त हो पाएँगे।

साध्वी श्री प्रखर श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हमारा संकल्प इतना मजबूत हो, जिसे कोई तोड़ न सके। संकल्प के साथ पुरुषार्थ करने से आत्मशक्ति मजबूत होगी।

शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार दुःखों में उलझ रहा है। यह संसार झूठ का मेला है।

-नोरतमल बाबेल

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

नीमच। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में चातुर्मासिक धर्माराधना अविरल गतिमान है। जावरा में शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. के चौविहार संथारा सहित महाप्रयाण का समाचार ज्ञात होने पर 10 अगस्त को रामेश समता भवन में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। सभा में साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. ने संथारा साधिका साध्वीश्री जी के संयमी जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रावक व साधु के चार मनोरथों की महत्ता पर मार्गदर्शन प्रदान कर श्रावक-श्राविकाओं को चार मनोरथ अंगीकार करने की प्रेरणा दी। वक्ताओं के क्रम में स्थानीय संघ अध्यक्ष व मंत्री ने भी अपने भावसुमन अर्पित किए। अंत में सभी ने 4-4 लोगस्स का ध्यान किया।

-अशोक मोगरा

✧✧✧✧ छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल ✧✧✧✧

धमतरी। शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 का 16 जुलाई को जय-जयकारों के साथ जमनालाल दुग्गड़ जैन स्थानक भवन में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर वीर पिता इंदरचंद जी लोढ़ा, डोंगरगाँव सहित अनेक वक्ताओं ने विचार व्यक्त

किए। धर्मसभा में श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सभी श्रावक-श्राविकाओं को चातुर्मास में दर्शन, प्रवचन, प्रतिक्रमण व ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग का भरपूर लाभ उठाना चाहिए। अपना अधिकाधिक समय धर्माराधना में लगाएँ।

चातुर्मासिक स्थापना दिवस पर 12 तेले, 4 उपवास की तपस्या के साथ सामूहिक सामायिक कार्यक्रम हुआ। मुमुक्षु बहन दर्शना जी नाहटा का वीर माता-पिता सहित चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ 3 अगस्त को आगमन हुआ। प्रवचन पश्चात् एक अलग कार्यक्रम में श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ के पदाधिकारियों सहित अनेक संस्थाओं द्वारा मुमुक्षु बहन व वीर परिजनों का स्वागत-अभिनंदन किया गया। मुमुक्षु बहन ने यह अभिनंदन परम पूज्य आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में समर्पित करते हुए 14 अगस्त को दीक्षा साक्षी बनने का निवेदन किया।

चातुर्मास में अब तक 23 उपवास– महेश जी कोटड़िया, कमलेश जी कोटड़िया, दिनेश जी लोढ़ा, 22– स्वरूपचंद जी कोटड़िया, पूजा जी लुणिया, 20– स्वीटी जी कोटड़िया, 18– हर्ष जी पारख, कु. आस्था लुणिया, 15– प्रियेश जी बाफना, मनीष जी पींचा, 12– बबीता जी बुरड़, सुप्रिया जी छाजेड़, 11– लीलम जी सुराणा, कु. परी कोटड़िया, कु. भूमि बोहरा, चंदा बाई ललवाणी, अठाई– प्रियेश जी बाफना, लीलमचंद जी सुराना, मनीष जी पींचा, कीर्ति जी सांखला, आशा जी सांखला, आशीष जी मिन्नी, पुष्पा जी ओस्तवाल सहित अन्य अनेक तपस्याएँ संपन्न हो चुकी हैं। एकासना, बियासना, नींवी, आयंबिल, तेले की लड़ी आदि तपस्याएँ जारी हैं। श्रावक-श्राविकाओं में प्रतिदिन संवर का क्रम जारी है। धार्मिक कक्षा में श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. जैन तत्त्व निर्णय सरल भाषा में समझा रहे हैं। दोपहर में महिलाओं की कक्षा एवं सायंकालीन प्रतिक्रमण पश्चात् धर्मचर्चा का लाभ मिल रहा है। आस-पास के अनेक स्थानों के गुरुभक्त दर्शन-सेवा का लाभ ले रहे हैं।

–दीपक बाफना

✧✧✧ कर्नाटक–आंध्र प्रदेश अंचल ✧✧✧

बेंगलुरु। शासन दीपिका साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्त्वावधान तथा श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के सहयोग से 30 जून को एक दिवसीय **'ज्ञान ज्योति स्वाध्याय'** शिविर का आयोजन संजय नगर स्थानक परिसर में किया गया। इस शिविर में प्रतिक्रमण का ज्ञान रखने वाले 60 बच्चों, युवाओं व श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक चले इस शिविर में चारित्रात्माओं ने स्वाध्याय साधना में निरंतरता, स्वाध्याय की पात्रता, स्वाध्याय के साथ आचरण की शुद्धता, भावों की तन्मयता, उपासकदशांग सूत्र में वर्णित 10 आदर्श श्रावकों का धर्ममय जीवन आदि विविध विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। एक कक्षा में स्वाध्यायी निर्मल जी देरासरिया ने अंतःक्रिया व संसार संचेठण काल आदि थोकड़ों की प्रतिज्ञा ली।

शिविर समापन पर साध्वीवर्याओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए शिविर संयोजक मंडल ने शिविरार्थियों व कार्यकर्ताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। शिविर में सभी के लिए बियासना करने की व्यवस्था की गई।

–कमलेश बोहरा

"गुरु के पास रहो रहेंगे तो ऊर्जा के स्रोत उद्घाटित होंगे, ऊर्ध्वारोहण होगा। गुरु के सारे सिद्धांतों को जीवन में महत्त्व देंगे, उन सिद्धांतों को जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे, फिर अनुभव करेंगे तभी लाभ होगा। नहीं तो शास्त्र भरे पड़े हैं, पुस्तकालय भरे पड़े हैं, इससे कोई लाभ नहीं होगा। मस्तिष्क में भी यदि लाइब्रेरी भर ली तो भी काम नहीं होगा।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

केंद्रीय पदाधिकारियों का मालवा अंचल में संघोत्थान हेतु प्रवास संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व कार्यकारिणी सदस्यों का 23 से 25 जुलाई तक आयोजित तीन दिवसीय प्रवास संघ उत्थान व आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त आयामों को आत्मसात् करने के संकल्प के साथ संपन्न हुआ। 23 जुलाई को संजीत में शासन दीपिका साध्वी श्री मननप्रज्ञा जी म.सा. के दर्शन-वंदन पश्चात् स्थानीय संघ के साथ आयोजित बैठक में सार्थक चर्चा के पश्चात् रात्रि में कानवन संघ के वरिष्ठ श्रावकों के साथ बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में संघ प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी देते हुए इनमें अधिकाधिक सहयोग देने का आह्वान किया गया। गौरवशाली संघ महाप्रभावक सदस्य राजमल जी पंवार ने केंद्रीय संघ के अंतर्गत बनने वाले समता भवनों के लिए लागत का 2 प्रतिशत सहयोग राशि प्रदान करने की घोषणा की।

कानवन में रात्रि विश्राम के पश्चात् प्रवासी दल 24 जुलाई को अंजड़ के लिए रवाना हुआ। यहाँ पर गणमान्य संघ प्रमुखों के साथ आयोजित चर्चा में दानपेटियों का वितरण कर संघ सहयोग में आगे आने का निवेदन किया गया। आगामी पड़ाव दोंदवाड़ा में नवीन संघ का गठन किया गया। शाम को प्रवासी दल पानसेमल-जलगोन पहुँचा, जहाँ बैठक में विभिन्न विषयों पर चर्चा पश्चात् मोरतलाई संघ के साथ आयोजित बैठक में इस संघ ने संघ आबद्धता ग्रहण की। भूमि दानदाता स्व. सूरज बाई खुशालचंद जी ओस्तवाल परिवार द्वारा संघ के अंतर्गत समता भवन निर्माण की घोषणा की गई। यहाँ से रवाना होकर प्रवासी दल ने खेतिया में रात्रि विश्राम किया।

प्रवास के अगले दिन 25 जुलाई को प्रातः शासन दीपिका साध्वी श्री संयति श्री जी म.सा. के दर्शन व प्रवचन का लाभ लेने के पश्चात् खेतिया संघ के साथ आयोजित मीटिंग में विचारों का आदान-प्रदान हुआ एवं जलगोन व खेतिया से अभिमोक्षम् शिविर में भाग लेने वाले बच्चों ने बहुत ही सुंदर प्रस्तुति दी। खेतिया से प्रवासी दल ने शहादा पहुँचकर शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा. के दर्शन-वंदन का लाभ लिया। सायं बलवाड़ी संघ के साथ संघ संबंधी चर्चा में प्रवृत्तियों आदि के बारे में जानकारी दी गई। सभी प्रवास स्थलों पर महत्तम शिखर वर्ष, इदं न मम, दानपेटी, संघ महाप्रभावक सदस्यता आदि की भी प्रभावना की गई।

-राष्ट्रीय मंत्री

> *"संत का जीवन चंदन की तरह होता है, जो घिसने पर भी सुगंध ही देता है। उसे जितना रगड़ो उसमें से सुगंध ही बिखरेगी।*
>
> **—परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

तृतीय कार्यसमिति बैठक भीलवाड़ा में संपन्न

भीलवाड़ा, 21–22 जुलाई 2024। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में सत्र 2023-25 की तृतीय कार्यसमिति बैठक भिक्षु विहार, जैन भवन में दो सत्रों में संपन्न हुई। लगभग 123 सदस्यों की उपस्थिति में नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण व संघ समर्पणा गीत के सहगान के साथ सत्र आंरभ हुआ।

राष्ट्रीय महामंत्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमें आचार्यश्री के सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव का यह सुअवसर मिला है। संघ के प्रत्येक सदस्य को इसमें जोड़ते हुए संघ को विकास की दिशा में अग्रसर करना है। उन्होंने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समग्र रूप से प्रयास करने हेतु प्रेरणा दी एवं गत 25 मार्च 2024 को मंगलवाड़ चौराहा में संपन्न विगत कार्यसमिति बैठक का कार्यवृत्त, नवीन संघ सदस्यता, संघ प्रवृत्तियों का प्रगति प्रतिवेदन पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने आगामी वर्ष का बजट सदन के पटल पर रखा, जिसकी सदन ने अनुमोदना की।

अध्यक्षीय अनुमति से विविध विषयों पर चर्चा

इस दौरान संघ का मुखपत्र श्रमणोपासक रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भिजवाने के संबंध में विचार-विमर्श किया गया। श्रमणोपासक सह-संपादिका ने श्रमणोपासक के प्रथम प्रकाशन से अब तक के अंकों को स्कैन कॉपी के रूप में संरक्षित रखने तथा श्रमणोपासक भेंट सूची में ₹1,100/- व इससे अधिक राशि की भेंट प्रकाशित करने का सुझाव दिया, जिसे पारित किया गया। आरुग्गबोहिलाभं की ओर से किशोर जी कर्नावट ने अपने विचार रखे। इसी के साथ संघ के नाम से क्रेडिट कार्ड लेने एवं इदं न मम में नवीन सदस्यता हेतु न्यूनतम राशि ₹2,100/- करने के भी प्रस्ताव पारित किए गए। राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि पदाधिकारियों का मनोनयन प्रत्येक दो वर्ष में अवश्य होना चाहिए। संघ में बड़े पदों पर कोई भी सदस्य 4 वर्ष से अधिक न रहे इसका विशेष ध्यान रखें।

विजय कुमार जी टंच, बदनावर, कमला देवी चोरड़िया, बालाघाट एवं प्रतीक जी सूर्या, उज्जैन ने शिखर सदस्यता हेतु स्वीकृति प्रदान की। संपूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जयवंता-जयवंता के जयघोष से गूँज उठी। इसी क्रम में नवीन प्रकाशित साहित्य '**शांत सुधारसः**' व '**जैनिज्म**' का विमोचन उपस्थित पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों द्वारा संपन्न हुआ। तत्पश्चात् दानपेटी योजना, श्रमणोपासक, साहित्य, आगम एवं तत्त्व प्रकाशन आदि प्रवृत्तियों के संयोजकों ने अपने प्रतिवेदन सदन के समक्ष प्रस्तुत किए।

आंचलिक प्रतिवेदन के रूप में मेवाड़, जयपुर-ब्यावर, बीकानेर-मारवाड़, मुंबई-गुजरात, कर्नाटक-आंध्र प्रदेश, बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान, पूर्वोत्तर एवं दिल्ली पंजाब हरियाणा अंचल के उपाध्यक्ष/मंत्रीगणों ने आंचलिक समीक्षा सदन में प्रस्तुत की। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, भीलवाड़ा संघ

अध्यक्ष सहित अनेक गणमान्य महानुभावों ने मार्गदर्शन कर लाभान्वित किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि संघ का कोई भी सदस्य किसी पद पर या बिना पद के भी संघ में जितना भी सेवा कार्य कर रहा है वह उसका सौभाग्य है। संघ के प्रत्येक सदस्य में ऊर्जा व सामर्थ्य है, जिससे संघ प्रवृत्तियों, सदस्यों व पदाधिकारियों के बीच समन्वयात्मक रूप से कार्य संपादित हो सके। इसके लिए आप सभी अपना सहयोग प्रदान करावें।

सदन द्वारा गत समय में महाप्रयाण करने वाली 5 चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया। अंत में राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष द्वारा आभार अभिव्यक्ति के साथ भावी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए सभी से संघ सेवा में जुटने का आह्वान किया गया। तत्पश्चात् संघ समर्पणा के सामूहिक गान के साथ बैठक का समापन हुआ। **-राष्ट्रीय मंत्री**

विश्व सामायिक दिवस पर देशभर में सामायिक की लहर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के आह्वान पर चातुर्मासिक स्थापना दिवस '**वैश्विक सामायिक दिवस**' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर देश-विदेश में निवासरत जैन परिवार व संघों में सामायिक की होड़ लग गई। गत वर्ष इस अवसर पर 72,669 सामायिक के रिकॉर्ड में अभिवृद्धि करते हुए इस वर्ष अभी तक कार्यालय को 96,259 सामायिक संपन्न होने की जानकारी प्राप्त हो चुकी है। इस हेतु देश-विदेश में निवासरत सभी जैन परिवारों को हार्दिक साधुवाद।

अभी भी कुछ क्षेत्रों से संबंधित जानकारी केंद्रीय कार्यालय में नहीं भिजवाई गई है। कृपया अतिशीघ्र ही अपने क्षेत्र में वैश्विक सामायिक दिवस पर संपन्न सामायिक की जानकारी भिजवाकर अनुगृहीत करें। सभी के आत्मीय सहयोग हेतु धन्यवाद।

हम सभी भगवान महावीर के अनुयायी हैं और हमारा लक्ष्य एक ही है कि भगवान महावीर के मार्ग का अनुसरण कर मोक्ष मार्ग की ओर गतिशील होना। इसके लिए सबसे पहला कार्य यही है कि हम अपने द्वारा किए गए कर्मों की निर्जरा करें और चौरासी लाख जीवयोनि को अभय प्रदान करें। इस हेतु आप सभी आगामी वर्ष में और अधिक सामायिक करने का लक्ष्य रखें ताकि हम स्व-पर कल्याण की भावना को साकार कर सकें।

क्र.	अंचल	संपन्न सामायिक की संख्या	क्र.	अंचल	संपन्न सामायिक की संख्या
1.	मेवाड़	22070	8.	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.	2091
2.	बीकानेर-मारवाड़	5194	9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	1331
3.	जयपुर-ब्यावर	3805	10.	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान	2782
4.	मालवा	11999	11.	पूर्वोत्तर	1729
5.	छत्तीसगढ़-ओड़िशा	15541	12.	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी	368
6.	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश	2198	13.	गूगल लिंक से प्राप्त जानकारी	25060
7.	तमिलनाडु	2091		**कुल**	**96259**

'शान्त-सुधारसः' व 'जैनिज्म भाग-1' का विमोचन भीलवाड़ा में संपन्न

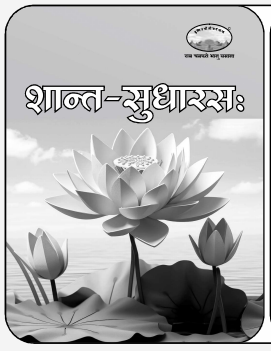

साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'शान्त-सुधारसः'** तथा आगम-अहिंसा-समता एवं प्राकृत संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'जैनिज्म भाग-1'** का विमोचन 21 जुलाई को भीलवाड़ा में श्री अ.भा.सा. जैन संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में भीलवाड़ा संघ सहित विभिन्न स्थानों से पधारे गणमान्यजनों की उपस्थित रही।

साधुमार्गी पब्लिकेशन के संयोजक ने 'शांत-सुधारसः' पुस्तक की विषय-वस्तु पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यद्यपि इससे पूर्व कई संस्थानों द्वारा शांत-सुधारसः का प्रकाशन किया जा चुका है, किंतु यह सबसे अलग है। नए रंग-रूप के इस शांत सुधारस में मूल पुस्तक का श्लोक और अर्थ तो पूरा है ही, साथ ही हर भावना का विवेचन भी किया गया है एवं हर भावना को योगशास्त्र और प्रशमरति ग्रंथ के आईने से भी देखा गया है। प्रत्येक भावना के अंत में कथा भी दी गई है। सोलह शीर्षकों में पूर्ण यह पुस्तक पाठकों को अध्यात्म पथ पर बढ़ने के लिए सहज ही प्रेरित करती है।

मोक्ष की तरफ बढ़ाने वाली इस पुस्तक में पाठक पाएँगे- (1) शांत-सुधारस के श्लोक व गीतिकाएँ तथा उनका हिंदी अर्थ, (2) प्रत्येक भावना का विवेचन, (3) प्रत्येक भावना से संबंधित 'योगशास्त्र' और 'प्रशमरति' के श्लोक व उनका अनुवाद (अन्य संदर्भ), (4) प्रत्येक भावना से संबंधित कथा।

पुस्तक जैनिज्म में विश्व के प्राचीनतम जैन धर्म का गौरवशाली इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम में जैनों का योगदान, जैन धर्म के मूल सिद्धांत, भामाशाह आदि प्रमुख व्यक्तियों का परिचय एवं जैनों का भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुमूल्य योगदान आदि विषयों को समाहित किया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से जैन धर्म के बारे में सरलता से जान सकते हैं।

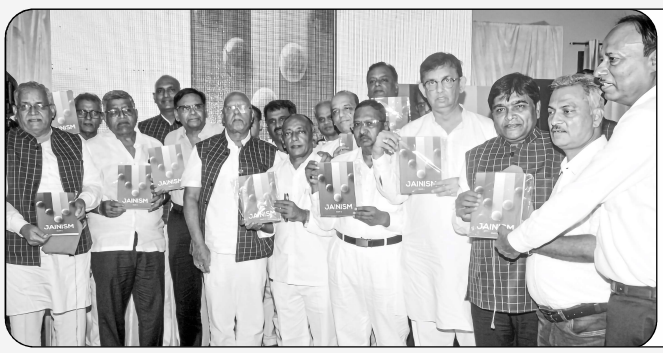

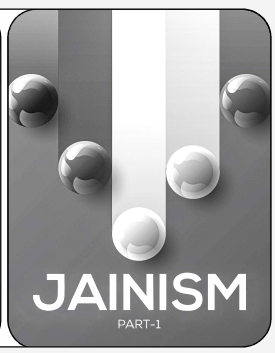

विविध भेंट मार्फत

01 जुलाई से 31 जुलाई 2024

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है -

संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

5,00,000/- विजय कुमार जी टंच, बदनावर

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

6,60,000/- मनोरमा देवी बैद, रायपुर

4,40,000/- कमला कँवर जी कोठारी, चेन्नई

2,40,000/- इंद्रा बाई गुणधर, संबलपुर

2,20,000/- आर. सुगनचंद जी धोका, चेन्नई

2,20,000/- भीखमचंद जी ओस्तवाल, कलंगपुर

2,20,000/- कंवर जी अशोक कुमार जी प्रमोद जी देशलहरा, गुंडरदही

2,20,000/- रजत जी मूथा, जयपुर

2,20,000/- कुसुम देवी टंच, बदनावर

2,20,000/- पूनमचंद जी सुराणा, सूरतगढ़

2,20,000/- लीला देवी बम्ब, चेन्नई

2,20,000/- अखराज जी ओस्तवाल, दुर्ग

संघ प्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

1,00,000/- सुरेंद्र जी राजमल जी गोरेचा, रतलाम

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

10,00,000/- सूरज देवी रिद्धकरण जी सिपानी, बेंगलुरु/उदरामसर

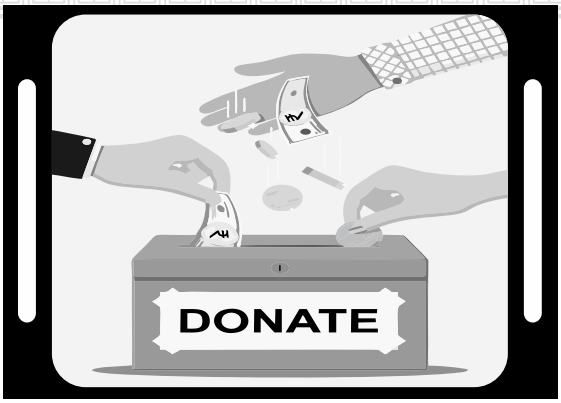

7,00,000/- नवरतनमल जी शिखरचंद जी कांकरिया, चेन्नई

5,00,000/- देवीलाल जी कमलेश जी मनीष जी रोहित जी ऋषि जी रांका, चेन्नई

5,00,000/- केशरीचंद जी भूरा, दिल्ली

2,51,000/- अशोक जी ललवानी, दिल्ली

2,00,000/- विजय कुमार जी लोढ़ा, मदुरांतकम्

1,51,000/- निहालचंद जी कोठारी, चेन्नई

1,11,000/- गुप्तदान, राजिम

1,01,000/- कमला बाई सूरजमल जी चोरड़िया परिवार, खाचरोद (श्री सूरजमल जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

1,00,000/- कमला बाई मांगीलाल जी चोरड़िया परिवार, बालाघाट

1,00,000/- अभय कुमार जी गुलगुलिया, दिल्ली

1,00,000/- झमकू देवी करणीदान जी बोथरा, दिल्ली/नोखा

71,000/- रोशनलाल जी सुरेंद्र कुमार जी आंचलिया, बेंगलुरु एवं पवन कुमार जी राजेश जी खींचा, ब्यावर

51,000/- कन्हैयालाल जी झामड़, चेन्नई

51,000/- सुरेंद्र जी राजमल जी गोरेचा, रतलाम

51,000/- माणकचंद जी जितेंद्र कुमार जी अनिल जी चंडालिया, चेन्नई

51,000/- अनिलचंद जी कोठारी, चेन्नई

50,000/- बिमलचंद जी कांकरिया, बेंगलुरु

21,000/- गुप्तदान, चेन्नई

21,000/- सुनील कुमार जी जैन, गोलूवाला
21,000/- नारायणचंद जी पींचा, दिल्ली
21,000/- पिस्ता बाई प्रकाशचंद जी गुलगुलिया, चेन्नई
21,000/- पदम कुमार जी बाँठिया, चेन्नई
21,000/- सज्जनराज जी कोठारी, चेन्नई
11,000/- अन्नराज जी कोठारी, चेन्नई
11,000/- अनूपचंद जी बरड़िया, नई दिल्ली
11,000/- रूपेश जी जसराज जी कोटड़िया, शहादा (विमला बाई जसराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)
11,000/- मीना देवी महेंद्र जी गादिया, रतलाम

**** महत्तम महोत्सव शिविर (सौजन्य से प्राप्त) ****

25,00,000/- गुप्तदान

**** चर्या परिचर्या निधि (सौजन्य से प्राप्त) ****

25,00,000/- गुप्तदान

***** समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त) *****

50,000/- मनोज कुमार जी तनीश कुमार जी छाजेड़, पोलूर

समता भवन, हावड़ा

17,00,000/- समता युवा संघ, हावड़ा

समता भवन, संगरिया

5,50,000/- उमराव सिंह जी ओस्तवाल, मुंबई
5,00,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु
50,000/- चंपालाल जी डागा, गंगाशहर

समता भवन, लूणकरणसर

30,000/- प्रेमचंद जी मनोज कुमार जी वोहरा, बदनावर
5,100/- संतोष देवी आसकरण जी बरड़िया द्वारा अपने सुपुत्र-सुपुत्री एवं सुंदर देवी नेमचंद जी बरड़िया के पौत्र-पौत्री सिद्धार्थ संग आकांक्षा एवं दीक्षा संग महेश के शुभविवाह के उपलक्ष में
2,100/- मोतीलाल जी संपतलाल जी सेठिया, गंगाशहर (महेश संग दीक्षा के शुभविवाह के उपलक्ष में)

******* इदं न मम (सौजन्य से प्राप्त) *******

5,00,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु
5,00,000/- कमल जी सिपानी, बेंगलुरु
84,000/- जुगल किशोर जी जैन, वापी
33,000/- प्रमोद जी दुगड़, इरोड
30,000/- जतनलाल जी भूरा, दिल्ली
21,111/- बाबूलाल जी पोखरना, जावरा
21,000/- कांतिलाल जी खारीवाल, जावरा
21,000/- प्रवीणचंद जी मूथा, वापी
21,000/- प्रदीप कुमार जी सेठिया, कोलकाता
21,000/- विजय कुमार जी लोढ़ा, मदुरांतकम्
21,000/- अरविंद कुमार जी अर्निक कुमार जी खिंवसरा, बेंगलुरु
21,000/- गोपालचंद जी जितेंद्र जी खिंवसरा, बेंगलुरु
20,000/- अनुज जी अल्पना जैन, हरदा
16,800/- अमृतलाल जी विजय कुमार जी संघवी, नागदा जंक्शन
15,300/- राजेंद्र जी लुंकड़, जलगाँव
15,300/- सुनील कुमार जी जैन, गोलूवाला
12,700/- विनोद कुमार जी राठौड़, नागदा जंक्शन
11,111/- सूरजमल जी पारख, करीमगंज
11,111/- निहालचंद जी कोठारी, चेन्नई
11,000/- सुमति कुमार जी कांकरिया, चेन्नई
11,000/- माणकलाल जी भरत जी नाहर, बखरा
11,000/- मधुबाला जी सुराना, रायपुर
11,000/- रूपेश जी जसराज जी कोटड़िया, शहादा (विमला बाई जसराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)
10,200/- अभय कुमार जी बाफना, अर्जुंदा
7,000/- विजय कुमार जी गुलाबचंद जी लुणावत, हनुमानगढ़
6,300/- अजीत कुमार जी नागोरी, चेन्नई
5,130/- गुप्तदान, जावरा
5,100/- गौतमचंद जी अरिहंत कुमार जी भूरा, नोखा
5,100/- लीला बाई मानमल जी सोनी, बिरमावल
5,100/- आसकरण जी भंवरलाल जी पींचा, जोरावरपुरा
5,100/- गौतमचंद जी जीतमल जी जैन, कोटा

5,000/– जतन कुमार जी चौधरी, भीलवाड़ा
5,000/– हर्ष जी दुगड़, विल्लुपुरम्
5,000/– मदनलाल जी पिछोलिया, आमेट
4,140/– कैलाशचंद्र जी नाहर, जावरा
3,110/– गुप्तदान, जगदलपुर
3,100/– निर्मल कुमार जी जैन, नागदा जंक्शन
3,100/– दिलीप कुमार जी वया, चेन्नई
2,500/– विजय जी सुजानमल जी मेहता, रतलाम
2,500/– सुनीता जी विजय जी मेहता, रतलाम
2,100/– सुंदरलाल जी नवलखा, गोलुवाला
2,100/– ताराचंद जी नवलखा, गोलुवाला
2,100/– रतनलाल जी नवलखा, गोलुवाला
1,121/– गुप्तदान, जगदलपुर
1,100/– बाबूलाल जी जैन (कुंडेरा वाले), बजरिया
1,100/– मांगीलाल जी जितेंद्र जी मनीष जी छल्लाणी, गंगाशहर
1,100/– मोहित जी बोथरा, लुधियाना

******* दानपेटी योजना *******

1,70,000/– विमला जी कमल जी सिपानी, बेंगलुरु
1,55,500/– लक्ष्मीचंद जी बाँठिया, चेन्नई
30,000/– जेठी देवी कुमुद देवी सिपानी, बेंगलुरु
11,454/– सुरेंद्र कुमार जी सेठिया, बीकानेर
5,831/– विजयचंद जी अशोक जी उम्मेद जी सेठिया, बीकानेर
3,200/– विजयराज जी शैतानमल जी गुलेच्छा, शेरगढ़
3,100/– पारसमल जी संजय जी बम्ब, चेन्नई

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– नथमल जी दिनेश जी कवाड़, दल्लीराजहरा, अन्नराज जी संजय जी बाँठिया, दल्लीराजहरा, पूनम जी कवाड़, तरपोंगी, रौनक जी गोलछा, तरपोंगी, श्रेयश जी कवाड़, तरपोंगी, बालचंद जी अवधित जी संचेती, बालाघाट, निहालचंद जी नवीन जी कोठारी, चेन्नई, अशोक कुमार जी बोथरा, चेन्नई, सुनील कुमार जी विकास कुमार जी नाहटा, शेरगढ़, लूणचंद जी दिलीप कुमार जी नाहटा, शेरगढ़

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– चेन्नई से– अशोक जी कांकरिया, पदम जी दिनेश जी बाँठिया, पिस्ता बाई गुगलिया, गोकुलचंद जी गुगलिया, गणपतराज जी गुगलिया, चेतन जी गुगलिया, माणकचंद जी रांका, चंद्रप्रकाश जी रांका, पदम सिंह जी ठाकुरगोता, उदयपुर
1,818/– राजेश जी वैभव जी सांखला, बीजा
1,500/– सुगनचंद जी धोका, चेन्नई
1,500/– सज्जन कँवर जी रांका, चेन्नई
1,200/– दुर्गचंद जी हनुमानचंद जी चौपड़ा, शेरगढ़

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– अशोक कुमार जी धारीवाल, सिमगा, अनिल जी सांखला, तरपोंगी, जितेंद्र जी अमन जी वैद्य, बालाघाट, गेंदमल जी चोपड़ा, परपोड़ी, सुरेश जी बोरा, देवकर, राजेंद्र जी वैभव जी बाफना, बीजा, कोमलचंद जी चौपड़ा, चारभाटा, शांति बाई बोरा, बेमेतरा, नवीन जी चंचल जी गोलछा, दाढी, संजय कुमार जी पंकज जी चौरड़िया, दाढी, कन्हैयालाल जी दीपक कुमार जी कोटड़िया, मुंगेली, पारसमल जी रितेश कुमार जी कोटड़िया, मुंगेली, शांति देवी चौरड़िया, बीकानेर, **दल्लीराजहरा से–** अशोकचंद जी प्रदीप जी खटोड़, विनोद कुमार जी वैभव जी गुणधर, ज्ञानचंद जी प्रदीप जी गुणधर, चंपालाल जी महावीर जी गुणधर, सोहनलाल जी चौपड़ा, अशोक जी अभिषेक जी गुणधर, पन्नालाल जी निखिल जी ललवानी, अमरचंद जी अर्पित जी गुणधर, अरविंद कुमार जी सजल जी गुणधर, विकास कुमार जी स्पर्श जी गुणधर, **थानखम्हरिया से–** प्रेमराज जी चौपड़ा, अनमोल जी छाजेड़, ललित जी चौपड़ा, सुमित जी चौपड़ा, निकलेश जी श्रीश्रीमाल, **चेन्नई से–** कन्हैयालाल जी झामड़, उगमराज जी कोठारी, प्रकाशचंद जी भंडारी, नितेश कुमार जी भंडारी, दिलीप कुमार जी शुभम् जी वया, जंबू कुमार जी पदावत, अनिल कुमार जी पदावत, संदीप जी गोलेछा, गौतमचंद जी खिंवसरा

************ जीवदया ************

11,000/- गुप्तदान, जयपुर

5,100/- मनसुखलाल जी हितेश कुमार जी कटारिया, बेंगलुरु

5,000/- सोमेश्वर जी सिपानी, अहमदाबाद

5,000/- प्रवीणचंद जी मूथा, वापी

2,100/- पीयुष जी सरिता जी अहान जी मांडोत, पुणे

2,100/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर

2,100/- सुरेश कुमार जी दीपचंद जी सुराणा, नागपुर/चंद्रपुर (साक्षी व साहिल के शुभविवाह के उपलक्ष में)

1,380/- विजय कुमार जी विशाल कुमार जी डागा, कोलकाता

*********** संघ सहयोग ***********

25,000/- गुप्तदान, सिरकाली

13,500/- गुप्तदान

11,000/- नीरज जी पोखरना, मयिलाडुतुरै

2,100/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर

******* विहार सेवा संयोजन राशि *******

1,00,000/- ढेला बाई संचेती, दुर्ग

***** समता सरिता सेवा (विहार सेवा) *****

11,000/- रूपेश जी जसराज जी कोटड़िया, शहादा (विमला बाई जसराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)

********** समता प्रचार संघ **********

21,000/- राजेश जी गुलगुलिया, देशनोक/सिलचर

21,000/- सुरेश कुमार जी भगतराम जी जैन, गुरुग्राम

****** समता जनकल्याण प्रन्यास ******

11,000/- रूपेश जी जसराज जी कोटड़िया, शहादा (विमला बाई जसराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)

******** समता मिति योजना ********

5,100/- रूपेश जी जसराज जी कोटड़िया, शहादा (विमला बाई जसराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)

****** साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग ******

2,100/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर

****** समता साहित्य स्टॉल अनुदान ******

5,000/- सुमित जी नांदेचा, बिरमावल

5,000/- सुरेश कुमार जी दक, मैसूर

5,000/- विजय कुमार जी टंच, बदनावर

******* समता संस्कार पाठशाला *******

2,700/- निष्ठा जी पंकज जी कटारिया, रतलाम

2,100/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर

*** श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता सहयोग ***

2,000/- गुप्तदान

********** श्रमणोपासक भेंट **********

4,90,000/- संजय जी कटारिया, रतलाम (डी.पी. आभूषण लिमिटेड)

5,100/- मदनलाल जी नवनीत कुमार जी सांखला, दुर्ग (सुपुत्री के जन्मदिवस के उपलक्ष में)

3,100/- रूपेश जी जसराज जी कोटड़िया, शहादा (विमला बाई जसराज जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)

2,100/- हनुमान प्रसाद जी जैन, अलीगढ़ (सुश्री नेहा जैन की सरकारी नौकरी लगने के उपलक्ष में)

1,500/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर

1,100/- महेंद्र जी लविश जी जैन, सवाई माधोपुर

1,100/- उमेश कुमार जी राकेश कुमार जी जैन, सवाई माधोपुर (श्री बाबूलाल जी जैन की पुण्यस्मृति में)

1,100/- लालचंद जी कैलाशचंद जी रांका, चेन्नई

***** सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति) *****

20,000/- अशोक कुमार जी चंडालिया, भोईसर

6,000/- गुप्तदान, बीकानेर

6,000/- जतन कुमार जी चौधरी, भीलवाड़ा

6,000/- गुप्तदान, बीकानेर

2,100/- प्राचीश्री परिवार, बदनावर

:: विशेष ::

श्रमणोपासक सदस्यता-10, साहित्य सदस्यता-3, संघ सदस्यता-2, युवा संघ सदस्यता-1, महिला समिति सदस्यता-21

:: 1 अप्रैल 2024 से 31 जुलाई 2024 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं। लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नंबर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
02.04.24	1,100/-	UPI सिद्धार्थ
04.04.24	500/-	नकद
04.04.24	12,000/-	UPI रौनक
04.04.24	7,000/-	UPI रौनक
06.04.24	1,000/-	UPI आदित्य जैन
07.04.24	2,500/-	UPI शरत
12.04.24	501/-	UPI विपुल जैन
19.04.24	1,100/-	UPI विकास
19.04.24	1,000/-	NEFT अशोका रेजीडेंसी
29.04.24	3,256/-	UPI राजेश
07.05.24	13,000/-	UPI NAKES
13.05.24	5,100/-	नकद
14.05.24	1,100/-	UPI सिंपल
14.05.24	800/-	UPI सचिन
07.06.24	4,000/-	NEFT अभिषेक किरण स्टूडियो
10.06.24	21,000/-	By Trf.
12.06.24	2,100/-	UPI पारसमल जैन
19.06.24	2,960/-	UPI रचना
01.07.24	3,133/-	IMPS
20.07.24	3,800/-	UPI महेंद्र इलेक्ट्रिकल्स
31.07.24	6,850/-	UPI हरीश

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेंद्र!

साहित्य सदस्यों हेतु महत्त्वपूर्ण सूचना

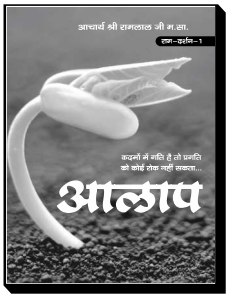

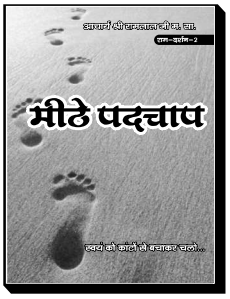

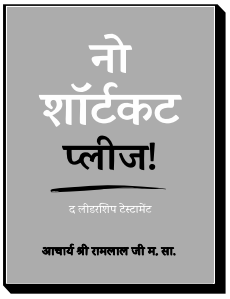

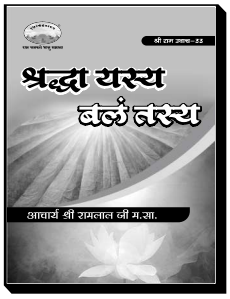

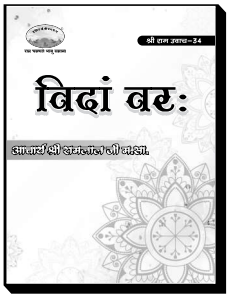

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर के समस्त आजीवन साहित्य सदस्यों को नवप्रकाशित साहित्य- आलाप, मीठे पदचाप, नो शॉर्टकट प्लीज! (हिंदी), राम उवाच-33 (श्रद्धा यस्य बलं तस्य), राम उवाच-34 (विदां वरः), राम उवाच-35 (वदतां वरः), इन छह पुस्तकों का सेट जून माह में प्रेषित किया जा चुका है। किसी भी साहित्य सदस्य को उपरोक्त नवीन साहित्य का सेट प्राप्त नहीं हुआ है तो शीघ्र ही दिए गए WhatsApp No. पर सूचित करें- **साधुमार्गी पब्लिकेशन : 8209090748**

-साहित्य संयोजक

सुश्रावक पूरणमल जी बोथरा, गोलकगंज

***** जन्म : 23 जून 1959 ***** स्वर्गवास : 4 अगस्त 2024 *****

जिनके शुभ कर्मों से महकता है आज भी हमारा घर-आँगन।
उनके स्मरण मात्र से दिव्य सम्मान से भर जाता है मन।।

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. व परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के पावन स्मरण से अपने दिन का शुभारंभ करने वाले गंगाशहर निवासी गोलकगंज प्रवासी धर्मनिष्ठ सुश्रावक **स्व. पूरणमल जी बोथरा** सुपुत्र श्री प्रेमसुख जी बोथरा का जीवन गुणों से परिपूर्ण था।

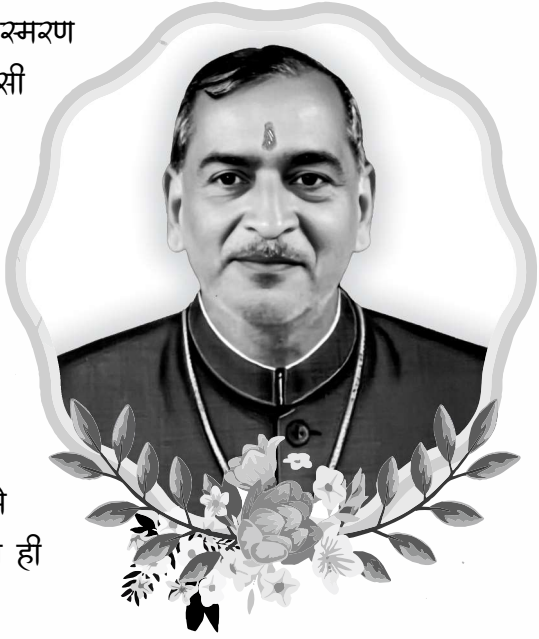

कड़ी मेहनत व उतार-चढ़ाव के बीच आप दृढ़प्रतिज्ञ होकर अपने दायित्वों का निर्वहन करते रहे। आप धर्मनिष्ठ व कर्तव्यनिष्ठ सुश्रावक थे। आपको गोलकगंज संघ के प्रथम अध्यक्ष पद का दायित्व प्रदान किया गया था। विपाक कर्मोदय से आपको कैंसर रोग हो गया। उसके इलाज के दौरान ही आपका निधन हो गया।

आपकी धर्मसहायिका सायर देवी बोथरा महिला मंडल, गोलकगंज में अध्यक्ष पद पर सेवाएँ दे रही हैं। आप संस्कारों से परिपूर्ण सुश्राविका हैं।

श्री बोथरा जी अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

श्रद्धावनत

पूनमचंद, कमल कुमार (भाई), **सायर देवी** (धर्मपत्नी), **अंकित** (पुत्र), **प्रीति-हेमंत जी, प्रिया-अमित जी, स्वीटी-सिद्धार्थ जी** (पुत्री-दामाद), **मगन देवी, विमला देवी, सरोज देवी, कौशल्या, जमुना** (बहनें), **पंकज, अमित** (भतीजे), **प्रिंस, पहल, चहक, ओम** (दोहिते-दोहितियाँ) व **समस्त श्री रावतमल जी बोथरा परिवार, गंगाशहर।**

विनम्र श्रद्धांजलि

नोखा/बंगईगाँव। सुश्रावक प्रेमचंद जी सुपुत्र स्व. श्री सोहनलाल बैद बंगईगाँव प्रवासी का 62 वर्ष की

आयु में 4 मई को निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी व मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आप देव, गुरु, धर्म एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. पर पूर्ण आस्था रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

बिरमावल। सुश्रावक बाबूलाल जी सुपुत्र स्व. श्री प्यारचंद जी श्रीश्रीमाल का 84 वर्ष की आयु में 25 मई

को सागारी संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आपकी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अनन्य श्रद्धा-भक्ति थी। आपकी इच्छानुसार आपके परिजनों द्वारा अपना एक निवास स्थान 'श्रीमती चंदनबाला बाबूलाल जी श्रीश्रीमाल स्वाध्याय साधना भवन' के नाम से समर्पित किया गया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

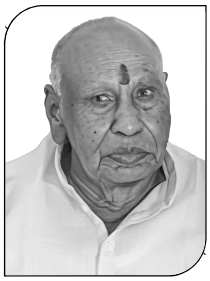

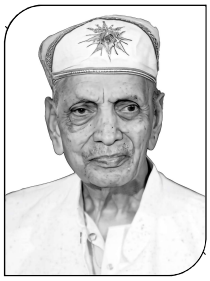

खाचरोद। सुश्रावक सूरजमल जी चौरड़िया (बरखेड़ा वाले) का 92 वर्ष की आयु में 27 जून को निधन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल व सादगी से परिपूर्ण था। आप आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के अनन्य भक्त थे। आपने जीवनकाल में कई तपस्याओं के साथ प्रतिदिन 10 सामायिक, रात्रिभोजन त्याग, सजोड़े ब्रह्मचर्य एवं श्रावक के 12 व्रत आदि अंगीकार किए हुए थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

देशनोक/मनेंद्रगढ़। सुश्रावक राधाकिशन जी कातेला का 92 वर्ष की आयु में 20 जुलाई को देहावसान हो

गया। आपकी आचार्य भगवन् पर अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आप सरल हृदय, कर्मठ व अनुशासित जीवनशैली के धनी थे। नियमित सामायिक व धर्म-ध्यान आपकी दिनचर्या में शामिल थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

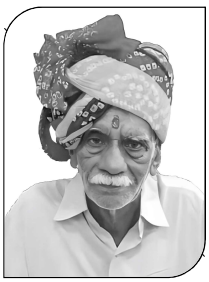

कवर्धा। संथारा साधिका सुश्राविका शायर देवी धर्मपत्नी स्व. श्री जेठमल जी मोदी का 87 वर्ष की आयु

में 20 जुलाई को चौमासी प्रतिक्रमण पश्चात् महाप्रयाण हो गया। आपको महाप्रयाण दिवस से पाँच दिन पूर्व पूर्ण सजग अवस्था में संथारे के प्रत्याख्यान करवाए गए। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति गहरी आस्था व श्रद्धा थी। आपने जीवनकाल में 4 वर्षीतप, अठाइयाँ, तिथियों पर आयंबिल, उपवास आदि तप किए। प्रतिदिन लगभग 10 सामायिक करने का लक्ष्य रखती थीं। आपका जीवन

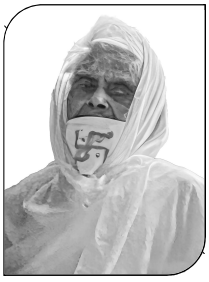

सरलता, सहजता व सादगी से परिपूर्ण था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

छोटीसादड़ी। सुश्राविका नीतू जी धर्मपत्नी अमित

जी डूंगरवाल का 40 वर्ष की आयु में 23 जुलाई को निधन हो गया। आप आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण श्रद्धावान थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर। सुश्रावक पंकज जी सुपुत्र पदमराज जी

मेहता का 49 वर्ष की आयु में 27 जुलाई को निधन हो गया। आप आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के प्रति श्रद्धावान श्रावक थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

सीतामऊ। सुश्राविका राजकुमारी जी धर्मसहायिका सागरमल जी जैन का 28 जुलाई को संथारा सहित

महाप्रयाण हो गया। आप आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धावान थीं। प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण करने का लक्ष्य रखती थीं। आपने अनेक तपस्याओं के साथ दो बार वर्षीतप किया। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

कानोड़। सुश्राविका प्रियंका जी धर्मसहायिका अभिषेक

जी मुरड़िया का 35 वर्ष की आयु में 3 अगस्त को देहावसान हो गया। आप मिलनसार, सरल स्वभावी महिला थीं। आपकी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अनन्य श्रद्धा व समर्पणा थी एवं संघ सेवा में सदैव ही अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

कारंजा। सुश्राविका नेत्रदानी विजया बाई धर्मसहायिका जवाहरलाल जी देवड़ा का 79 वर्ष की आयु में 9 अगस्त

को देहावसान हो गया। आप हलुकर्मी, सरल स्वभावी व देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धावान थीं। आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति गहरी समर्पणा थी। प्रतिदिन लगभग 10 सामायिक, उभयकाल प्रतिक्रमण, स्वाध्याय एवं थोकड़े वाचन का लक्ष्य रखती थीं। आपने 15, 11, 9, अठाई, तेले आदि तपस्याओं से जीवन सजाया हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

शहादा। सुश्राविका विमला देवी धर्मपत्नी श्री जसराज जी कोटड़िया लोहावट निवासी का 80 वर्ष की

आयु में निधन हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा व आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'

सभी धर्मों को छोड़कर एक मेरी शरण, एक मेरे धर्म में आ जाओ। सर्वधर्म अर्थात् इंद्रियों के जो-जो विषय हैं वे उनके धर्म हैं, उन्हें छोड़कर मेरे धर्म में आ जाओ। यहाँ मेरे धर्म से श्रीकृष्ण का संकेत स्व-आत्मा के लिए है। उस आत्मा के धर्म में आने का संकेत है। उस शरण में आने के बाद सात भय भयभीत नहीं कर सकेंगे। आपके सम्यक्त्व में एकनिष्ठता आ जाएगी। एक देव, एक गुरु और एक धर्म की उपासना में मन जुड़ जाएगा।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

संथारा साधिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. का चौविहार संथारे सहित पंडितमरण

डोलयात्रा में संघ पदाधिकारियों सहित हजारों लोगों ने किए श्रद्धासुमन अर्पित

जावरा। युगनिर्माता, उत्क्रांति प्रदाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. का चौविहार संथारे सहित 9 अगस्त 2024 को पंडितमरण हो गया। आपश्रीजी की गंभीर अस्वस्थता को देखते हुए 9 अगस्त को ही प्रातः 7:55 बजे साधुमर्यादा में रखे जाने वाले आगारों सहित तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान एवं दोपहर में 2:30 बजे चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा द्वारा करवाए गए। इसी दिन रात्रि 9:39 बजे आपका संथारा सीझ गया।

डोलयात्रा 10 अगस्त को प्रातः 9 बजे समता भवन, जवाहर पथ से प्रारंभ हुई, जो शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए आनंदी हनुमान मंदिर मुक्तिधाम पहुँची। मार्ग के दोनों ओर हजारों लोगों ने साध्वीवर्या के गुणोत्कीर्तन करते हुए संथारे की अनुमोदना की। जय-जयकारों व भजनों से संपूर्ण मार्ग गुंजायमान हो रहा था। मुक्तिधाम में संथारा साधिका साध्वीवर्या के संसारपक्षीय भाई डालचंद जी, जयचंद जी चौरड़िया आदि पारिवारिकजनों ने मुखाग्नि दी। मुक्तिधाम पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने संथारा साधिका जी के गुणों का विवेचन करते हुए कहा कि धन्य है साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा., जिन्होंने संयमी जीवन का दृढ़ता से पालन कर शासन की खूब प्रभावना की।

डोलयात्रा में श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, जावरा संघ, महिला मंडल एवं समता युवा संघ के पदाधिकारी व सदस्यों सहित आस-पास के अनेक स्थानों के श्रद्धालु गुरुभक्त शामिल हुए।

श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 11 अगस्त को साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन समता शाखा व धम्म सद्धा चालीसा के साथ किया गया। सर्वप्रथम साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. ने अपने भाव व्यक्त करते हुए फरमाया कि उस दिन संथारा साधिका साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. ने प्रातः लगभग 3 बजे उठकर अपना नित्य नियम पूर्ण किया। कुछ समय पश्चात् म.सा. के सिर में दर्द हुआ तो रामेश चालीसा सुनाने हेतु कहा। रामेश

चालीसा सुनाकर निवेदन किया कि आपश्री इतनी साधना करते हैं, कोई पाठ कर लीजिए तो '**शांतिनाथ जी साता करो**' का उच्चारण किया।

साध्वी श्री सुरचिता श्री जी म.सा. ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि परिजनों ने उनका विवाह किया, किंतु उनका मन हमेशा धर्म व त्याग में लगा रहता था। परिजनों से दीक्षा हेतु स्वीकृति चाही तो सांसारिक पति रास्ते में सो गए और कहा कि उनके ऊपर से निकल जाओ तो अनुमति दे दूँगा। तब आपश्रीजी ने कहा कि मुझे जहाँ से निकलना था, निकल चुकी हूँ। अब कहीं से नहीं निकलना। इस प्रकार परिजनों की स्वीकृति के साथ आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से घोर तपस्वी श्री अमर मुनि जी म.सा. से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर 47 वर्ष तक संयम जीवन का पालन किया और 64 वर्ष की आयु में जावरा की पुण्यधरा पर अपने जीवन के तीनों मनोरथ पूर्ण किए। आपश्रीजी के गुणों को जीवन में उतारेंगे तो ही हम मोक्ष की दिशा में बढ़ पाएँगे।

साध्वी श्री सुश्रद्धा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संथारा साधिका जी में सेवा का अनुपम गुण था। वे हमेशा सभी का ध्यान रखते थे। मैंने तपस्या के प्रत्याख्यान आपश्री जी के मुखारविंद से ही ग्रहण किए थे। स्वाध्याय आदि नित्य नियम करते तथा सदैव ही तीनों मनोरथ पूर्ण करने हेतु सचेत थे।

साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. ने भजन '**जीवन का भरोसा नहीं**' प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जब हमारा चातुर्मास रावतसर में था, तब आचार्य भगवन् से संकेत मिला कि साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा. की सेवा के लिए सोचा जा रहा है। इस तरह लगभग 4 वर्षों

संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री सरोजबाला जी म.सा.

सांसारिक नाम :
श्रीमती सज्जन बाई राखेचा
जन्म स्थल :
छतेरा, जिला- बालाघाट (म.प्र.)
जन्म तिथि :
चैत्र बदी 3 संवत् 2010
दिनांक 3 मार्च 1960
दीक्षा तिथि व स्थल :
भादवा बदी 11 संवत् 2034
दिनांक 9 सितंबर 1977, दुर्ग (छ.ग.)
व्यावहारिक शिक्षा :
सातवीं
परिवार से दीक्षित :
श्री नितिन मुनि जी म.सा.,
साध्वी श्री सुनिधि श्री जी म.सा.

दीक्षा प्रदाता :
आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से
घोर तपस्वी श्री अमर मुनि जी म.सा.

पारिवारिक परिचय

पति :
श्री शांतिलाल जी राखेचा, धमतरी (छ.ग.)
माता-पिता :
श्रीमती गुलाब बाई-श्री सूरजमल जी चौरड़िया
भाई :
कोमलचंद जी, डालचंद जी, जयचंद जी,
प्रकाशचंद जी, मनीष जी चौरड़िया
बहनें :
पद्म बाई धोका, ऊषा बाई मालू,
मनीषा बाई संचेती, नीता बाई बोथरा,
आशा देवी कोठारी

से हम संथारा साधिका जी की सेवा में थे। साध्वीवर्या जी अनेक गुणों से युक्त थे। कुछ दिवस पूर्व ही जावरा में शिविर आदि के विषय में चर्चा की तो फरमाया कि जावरा संघ बहुत ही गुणवान है। कुछ दिनों से उनका स्वास्थ्य सही नहीं चल रहा था। लगातार परीक्षण कर रहे थे। उनकी भावना थी कि खाली हाथ नहीं जाना चाहती। आप लोग मेरे संयम जीवन में दोष मत लगाना। हमें संतोष है कि हम उनके भावों का मान रख पाए। हम उनके गुणों से प्रेरित होकर स्वाध्याय की दिशा में आगे बढ़ेंगे तो जीवन धन्य बनेगा।

श्री साधुमार्गी जैन संघ की ओर से अनेक पदाधिकारियों व सदस्यों ने गद्य-पद्य में गुणानुवाद कर जीवन धन्य बनाया। पूर्व अध्यक्ष ने गुणानुवाद करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया। संघ मंत्री ने बताया कि लगभग 4 वर्षों से संथारा साधिका जी म.सा. वटवृक्ष की भाँति शीतल धर्म की छाया प्रदान कर रहे थे। इतनी शारीरिक पीड़ा होते हुए भी असाता में साता का अनुभव करते थे। संपूर्ण जावरा संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। वे शीघ्र ही अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करें।

-राजेश कुमार संघवी

संथारा साधिका साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. का छह दिवसीय चौविहार संथारे सहित स्वतंत्रता दिवस को पंडितमरण

रतलाम। युगनिर्माता, उत्क्रांति प्रदाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. का छह दिवसीय चौविहार संथारे सहित 15 अगस्त 2024 को प्रातः 6:25 बजे पंडितमरण हो गया। आपश्री जी को 9 अगस्त को प्रातः 9:59 बजे चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा जी म.सा. द्वारा करवाए गए। संथारा ग्रहण करवाने के पश्चात् धर्म-ध्यान सुनाने का क्रम जारी रहा।

डोलयात्रा 15 अगस्त को दोपहर 1 बजे समता भवन, घास बाजार से भगवान महावीर, आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. एवं संथारा साधिका जी के जय-जयकारों के साथ प्रारंभ हुई, जो शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए मुक्तिधाम पहुँची। मार्ग के दोनों ओर हजारों जैन-जैनेतर लोगों ने अंतिम दर्शन कर जीवन धन्य बनाया। जिस किसी ने भी आपके त्याग व वैराग्य के बारे में सुना तो वो जैन धर्म की दृढ़ता के आगे नतमस्तक हो गया। मुक्तिधाम में आपके परिवारिकजनों ने मुखाग्नि दी। मोक्षधाम में आयोजित गुणानुवाद सभा में संघ के राष्ट्रीय

अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, रतलाम संघ अध्यक्ष सहित जैन समाज के संप्रदायों के गणमान्यजनों ने आपके गुणोत्कीर्तन किए।

संथारा साधिका साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा. का जन्म बीकानेर की पुण्यधरा पर किशनलाल जी पुगलिया के घर-आँगन में हुआ। आपने 44 वर्ष पूर्व आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के मुखारविंद से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार कर संयम को अपना शृंगार बना लिया। पंच महाव्रतों की पालना के साथ आपश्री जी ने उपवास, बेला, तेला, अठाई, 11 मासखमण एवं लगभग 22 वर्षीतप की कठोर तपस्या से आत्मा को जागृत किया। तप के साथ-साथ आपने सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

पिछले कुछ समय से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था। अत: भावी को निकट जानकर आपने पूर्ण सजग अवस्था में चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। संथारा ग्रहण करने की सूचना पश्चात् आस-पास अनेक देश के अनेक स्थानों से दर्शनार्थ श्रद्धालुओं का आगमन हुआ। आपश्री जी के साथ चातुर्मासार्थ विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा जी म.सा. आदि ठाणा ने आगम एवं धर्म श्रवण कराने का लाभ लिया।

आपश्री जी की पावन स्मृति में 16 अगस्त को शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में छोटू भाई की बगेची में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। मुनिश्री जी ने संथारा साधिका जी को गुणों का महासागर बताते हुए मंगलकामना की कि उनकी आत्मा शीघ्र ही परित संसारी बने। श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने संथारा साधिका जी द्वारा समाधिभाव से देह त्याग को गुरुकृपा व सेवा का फल बताया। श्री ब्रह्मऋषि मुनि जी म.सा. ने उनकी सरलता की सराहना की।

शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा. ने उनके अनेकानेक गुणों का बखान किया। साध्वी श्री सरिश्मा श्री जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यज्योति श्री जी म.सा., साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने भी आपके गुणोत्कीर्तन किए। वक्ताओं के क्रम में संघ अध्यक्ष, मंत्री व वरिष्ठ जनों ने भावांजलि दी।

–कांतिलाल छाजेड़, अशोक पिरोदिया

संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा.

सांसारिक नाम :
सुश्री शांता बाई पुगलिया
जन्म स्थल :
बीकानेर (राज.)
जन्म तिथि :
चैत्र सुदी 5 संवत् 2014
दिनांक 5 अप्रैल 1957
दीक्षा तिथि व स्थल :
सावण सुदी 11 संवत् 2037
दिनांक 22 अगस्त 1980, राणावास, पाली (राज.)
व्यावहारिक शिक्षा :
कक्षा 6 तक

दीक्षा प्रदाता :
आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.
पारिवारिक परिचय
माता-पिता :
श्रीमती ममोल बाई-श्री किशनलाल जी पुगलिया
भाई :
अशोक कुमार जी, चंद्रेश कुमार जी पुगलिया
बहनें :
आशा बाई सेठिया, प्रेम बाई सेठिया,
विमला बाई बेगाणी,
स्व. श्रीमती पुष्पा बाई दड्ढा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

मन की पवित्रता प्रधान

मनुष्य जीवन में सार्थकता कैसे साधी जा सकती है, यदि ऐसा प्रश्न पैदा होता है तो उसका सीधा-सा उत्तर है कि ऐसा कार्य करना, जिससे मन पवित्र बना रहे, मन की पवित्रता बाधित न हो। मन को पवित्र बनाए रखना मनुष्य जीवन की सार्थकता है। जो जीवन मिला है, उसे प्रमोद से, प्रसन्नता से जीओ। अगरबत्ती की तरह सुगंध बिखेरो एवं मोमबत्ती की तरह प्रकाश फैलाओ। स्वयं धर्म-सदाचार का पालन करो एवं दूसरों के लिए धर्म का आदर्श प्रस्तुत करो। अन्य भी सदाचार के प्रकाश से प्रेरित हों, ऐसा प्रयत्न हो।

(ब्रह्माक्षर)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

युवती शक्ति

युवती शक्ति मंच द्वारा अंचल संयोजिकाओं में आध्यात्मिक उच्चता हेतु जयंती बाई श्रमणोपासिका पुरस्कार प्रारंभ किया गया था। सभी अंचल संयोजिकाओं ने अपनी क्षमतानुसार आध्यात्मिक क्षेत्र में पक्की नवकारसी, पक्खी प्रतिक्रमण आदि में रुझान दिखाया और कार्मिक क्षेत्र में युवतियों को जोड़ने व रिपोर्टिंग फॉर्म समय पर भरने आदि कार्यों में भी नियमितता निभाई। सभी अंचलों की संयोजिकाओं ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इस बार का पुरस्कार जयपुर-ब्यावर अंचल संयोजिका सरिता जी ओस्तवाल को प्रदान किया गया। आगे भी इस प्रतियोगिता का आयोजन जारी रहेगा। युवतियों के लिए 14 से 18 अगस्त तक संवर दिवस की आराधना की गई। आगामी गतिविधि में '**गठबंधन**' और '**Discover the Incredible You**' का आयोजन संभावित है।

Sadhumargi Women's Motivational Forum

साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

Alert Today Bright Tomorrow

वुमन्स मोटिवेशनल फोरम द्वारा छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल में 3 अगस्त को 14 नियम पर आधारित गतिविधि ऑनलाइन आयोजित की गई, जिसमें 279 सदस्याओं ने सक्रिय भूमिका निभाई। इसमें 14 नियमों को सरल भाषा में 3D के माध्यम से प्रस्तुत किया गया, जिससे मेरु पर्वत जितने पाप को राई जितना किया जा सके।

केसरिया कार्यशाला

केसरिया कार्यशाला के माध्यम से दशाश्रुतस्कंध सूत्र की चौथी दशा पर आधारित आचार्य की आठ संपदा पर ज्ञान अभिवृद्धि हो रही है। जुलाई माह में वाचना संपदा के विषय में उदाहरण सहित ज्ञानार्जन कराते हुए आगम वाचन के साथ अर्थ समझाया गया। 51 क्षेत्रों में आयोजित केसरिया कार्यशाला में लगभग 800 श्राविकाओं ने भाग लिया।

धार्मिक कार्य

तप-त्याग

:: मेवाड़ अंचल ::	
बंबोरा	**संवर का मासखमण-** कमला जी वया देऊ बाई वया, चंदा जी जारोली, **एकासन का मासखमण-** सीमा जी पितलिया, देऊ बाई वया, **8 उपवास-** संतोष जी जारोली
भीलवाड़ा	**30 उपवास-** कल्पना जी बेताला, **19 उपवास-** दीक्षा जी सेठिया, **12 उपवास-** आशा जी नाहर, **10 उपवास-** प्रिया जी भूरा, मीनाक्षी जी मूलावत, **9 उपवास-** पुष्पा जी बरमेचा, विजयश्री जी जैन, संगीता जी भलावत, हर्षिता जी मेहता, **8 उपवास-** निर्पिता जी बुलिया, **1 वर्ष एकासन-** सुशीला जी दशोरिया
उदयपुर	**9 उपवास-** शांता बाई बड़ाला, सीमा जी पोखरना, प्रेम बाई बोहरा, आशा जी बोरदिया, धन्ना बाई जी मेहता, रीना जी कोठारी, सुनीता जी मेहता, सुमन जी नलवाया
बड़ीसादड़ी	**8 उपवास-** अर्चना जी कंठालिया
:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::	
जोधपुर	**19 उपवास-** सुजाता जी मिन्नी, **8 उपवास-** कु. मिताली भंडारी
भीनासर	**9 उपवास-** आरती जी गुलेच्छा
गंगाशहर	**8 उपवास-** प्रियंका जी बुच्चा, प्रेम देवी सुराणा
जोरावरपुर	**8 उपवास-** कु. कविता पींचा
चाबा	**9 उपवास-** कु. प्रियंका चौपड़ा
सोमेसर	**8 उपवास-** पूजा जी दुग्गड़, रवीना जी दुग्गड़, करुणा जी श्रीश्रीमाल, लीला जी जैन
जोधपुर	**21 उपवास-** कु. शगुन मुणोत
खींचन	**9 उपवास-** अनीषा जी जैन, **8 उपवास-** शिवानी जी जैन
लोहावट	**एकांतर-** सुशीला जी चोपड़ा, पुष्पा जी पारख, लीला जी पारख
:: छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ::	
दल्लीराजहरा	**20 उपवास-** नीतू जी चोपड़ा, **19 उपवास-** रक्षा जी बाँठिया, **9 उपवास-** टकी जी गुणधर, कु. अंकिता चौरड़िया, कु. लीजा संचेती, कु. महक कोचर, **8 उपवास-** रचना जी छाजेड़
:: कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ::	
हैदराबाद	**11 उपवास-** कंचन जी रांका

:: महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ::	
नंदुरबार	**11 उपवास-** चेतना जी कोटड़िया
जलगाँव	**9 उपवास-** सुशीला जी सांखला, दीपाली जी सिसोदिया
:: बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा अंचल ::	
कोलकाता-हावड़ा	**15 उपवास-** मुन्नी जी मालू, **14 उपवास-** जयंती जी सेठिया, **11 उपवास-** अंजू जी भंसाली, प्रिया जी सेठिया, **10 उपवास-** कंचन जी मिन्नी
काठमांडू	**13 उपवास-** रेखा जी लुणिया
राँची	**11 उपवास-** केसर जी पींचा
:: पूर्वोत्तर अंचल ::	
बंगईगाँव	**14 उपवास-** रंजिता जी देशवाल, **8 उपवास-** गरिमा जी मरोठी
गुवाहाटी	**9 उपवास-** कु. तरुणा दुग्गड़
कोकराझाड़	**9 उपवास-** कु. कविता कांकरिया, कु. डिंपल सुराणा
:: दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल ::	
नई दिल्ली	**14 उपवास-** कंचन जी छाजेड़

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	मैं को पहचानें (अहंकार), जीव के 563 भेद	बेरला	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.
2.	पुद्गल परावर्तन, जीवधड़ा, लघुदंडक	धमतरी	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा.
3.	ज्ञान आराधना शिविर	बड़ीसादड़ी	शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा.
4.	आगमों की संक्षिप्त व्याख्या	कानोड़	शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा.
5.	निर्दोष भिक्षा विवेक शिविर	भीलवाड़ा	श्री यत्नेश मुनि जी म.सा.
6.	जैन सिद्धांत बत्तीसी, डिजिटल डिटैचमेंट	अर्जुनी	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.
7.	थोकड़ों का कार्निवल, जैन सिद्धांत बत्तीसी, प्रज्ञापना सूत्र के थोकड़े	दुर्ग	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसारिका श्री जी म.सा.
8.	काल स्थिति, समकित के 67 बोल, कर्म स्वरूप एवं मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है	बालोद	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा.
9.	लघुदंडक, जैन भूगोल, सिद्धि तप	रायपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.
10.	गुणस्थान स्वरूप, लघुदंडक, सिद्धांत बत्तीसी	दल्लीराजहरा	शासन दीपिका साध्वी श्री विवेकशीला जी म.सा.

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
11.	वाणी विवेक	हैदराबाद	शासन दीपिका साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा.
12.	आओ सीखें जीने का ढंग धर्म के संग	उदयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री मधुबाला जी म.सा.
	हम होंगे ज्ञानवान, कैसे पाएँ 100 में से 100		शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्या श्री जी म.सा.
	पावकम्मं न बंधइ, फुटप्रिंट		शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.
13.	शुद्धि से सिद्धि की ओर	बंबोरा	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा.
14.	अहोदानम्	कांकरोली	शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा.
15.	सचित्त-अचित्त विवेक	निकुंभ	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला श्री जी म.सा.
16.	खाली हाथ आओ भर के जाओ	निम्बाहेड़ा	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा.
17.	धर्म की पहचान	कोलकाता	शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा.
18.	एक कदम इतिहास की ओर, Know & Grow	दिल्ली	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

राम चमकते भानु समाना

केसरिया कार्यशाला

मति संपदा

वचनों का अमृत, वाचना का ज्ञान।
प्रवचन का रस और वात्सल्य का पान।।
ले रहे भगवन् आपसे, हम निरंतन ज्ञान।
और अब जानें हम, अगली संपदा विज्ञान।।

सितंबर 2024

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

"अनादिकालीन संसार परिभ्रमण के कारण आत्मा अपने स्वभाव को छोड़कर अधिकांशत: अपने वभाव में स्थित हो रही है। फिर भी यह हर्ष का विषय है कि अब सामान्य जीवन एक नए वैचारिक मोड़ पर आकर खड़ा हो गया है। वर्तमान विषय एवं विपरीत परिस्थितियों ने बुद्धिवादियों व विचारकों के हृदयों को आंदोलित कर दिया है और वे इन ज्वलंत परिस्थितियों के संदर्भ में सोचने लगे हैं कि क्या कोई ऐसा उपाय है, जिससे मानसिक तनावों से मुक्त होकर स्थायी सुखानुभव किया जा सके? यही अंतर्दर्शन या अंतर्यात्रा की ओर गति करने का आशाजनक संकेत है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

केंद्रीय पदाधिकारियों का दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल में प्रवास संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की राष्ट्रीय पदाधिकारियों का 11 से 13 जुलाई तक तीन दिवसीय प्रवास दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। प्रवास के दौरान शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 व शासन दीपिका साध्वी श्री समया श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त हुआ। प्रवास में दिल्ली, मेरठ, बड़ौत, कांडला, मुजफ्फरनगर आदि क्षेत्रों में स्थानीय महिला मंडल में आयोजित मीटिंगों में विभिन्न गतिविधियों व प्रवृत्तियों की जानकारी दी गई एवं संघ उत्थान हेतु विचार-विमर्श हुआ। मुजफ्फरनगर, कांडला, मेरठ व बड़ौत में नवीन प्रतिनिधि सदस्य मनोनीत किए गए। वीर परिवारों से परिचय, धोवन पानी आदि की पुरजोर प्रभावना एवं शुभ संकल्पों के साथ प्रवास संपन्न हुआ। प्रवास के मध्य में 12 जुलाई को समता भवन, दिल्ली के उद्घाटन समारोह में साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

-राष्ट्रीय मंत्री

साधुमार्गी पब्लिकेशन से जुड़ें

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रवचन, चिंतन, कथा, कहानी व अन्य विविध विधाओं पर अब तक लगभग 340 से अधिक धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इस धार्मिक साहित्य के अध्ययन, पठन व मनन से अवश्य ही आपका जीवन परिवर्तित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। आप इन साहित्यों के लिए दिए गए QR Code, लिंक https://sadhumargi.com/sangh-activities/sahityikpravartiyan/ पर जाकर तथा मोबाइल नं. 8209090748 पर कॉल करके संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

-संयोजक, साधुमार्गी पब्लिकेशन

“प्रभु कैसे आएँ? उनके लिए हमारे पास स्थान भी है या नहीं? कथा सुनी होगी कि सेठ सुदर्शन को जब राजा के सम्मुख लाया गया, तब राजा ने कहा—“बोलो अभया के महल में किस प्रकार आए?” तब क्या उन्होंने बोला कुछ? क्या कर रहे थे वे? उन्होंने पौषध किया हुआ था। हम भी करते हैं पौषध, पर क्या चित्तवृत्ति में गुरु को या परमात्मा को बैठाते हैं?

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

तृतीय कार्यसमिति बैठक
नवीन संकल्पों के साथ भीलवाड़ा में संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षा की अध्यक्षता में महिला समिति के सत्र 2023-25 की तृतीय कार्यकारिणी बैठक 21 जुलाई 2024 को भीलवाड़ा में आयोजित की गई। बैठक का शुभांरभ उत्क्रांति प्रणेता परम पूज्य आचार्य श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन व मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्षा द्वारा साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यकारिणी मीटिंग की रिपोर्ट स्वीकृति हेतु सदन के पटल पर रखी, जिसे सर्वानुमति से अनुमोदित किया गया। इसी क्रम में राष्ट्रीय महामंत्री ने साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम एवं स्वधर्मी सहयोग प्रवृत्तियों की विस्तृत त्रैमासिक रिपोर्ट सभा के समक्ष रखते हुए बताया कि मोटिवेशनल फोरम के माध्यम से विभिन्न अंचलों में अनेक कार्यक्रम गतिशील हैं और सर्वधर्मी सहयोग के अंतर्गत जून 2024 तक 2018 स्वधर्मी तथा वीर परिवारों को कुल ₹10,08,000/- की सहायता राशि प्रदान की जा चुकी है।

इसी क्रम में संगठन, परिवारांजलि, केसरिया कार्यशाला, युवती शक्ति एवं समता छात्रवृत्ति की राष्ट्रीय संयोजिकाओं ने अपनी-अपनी प्रवृत्ति के विवरण से सभा को अवगत कराते हुए गत तीन माह में हुए उन्नयन को सभा के समक्ष रखा, जिस पर सभी ने हर्ष व्यक्त किया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने रिपोर्टिंग सिस्टम के बारे में बताते हुए सभी को नियमित रूप से स्थानीय, आंचलिक व राष्ट्रीय स्तर पर रिपोर्ट करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की संशोधित आचार संहिता सभा के समक्ष प्रस्तुत कर स्वीकृति प्राप्त की व विमोचन करवाया। इस आचार संहिता में राष्ट्रीय व स्थानीय पदाधिकारियों एवं सदस्याओं के दायित्व व कार्यों का विवरण अथवा नियम समिति की शाखाओं हेतु निर्धारित किए गए हैं। संशोधन के अंतर्गत स्थानीय मंडल व स्थानीय प्रतिनिधि का चयन, कार्यसमिति सदस्याओं की संख्या में बढ़ोतरी एवं पदाधिकारियों की पात्रता हेतु अनिवार्य योग्यताएँ आदि बिंदुओं को समाहित किया गया है। रिपोर्ट के क्रम को आगे बढ़ाते हुए M.I.D. से जुड़ी एवं शेष रही समिति की आजीवन सदस्याओं का विवरण, अक्षय तृतीया पर संपन्न एकासन की रिपोर्ट तथा विभिन्न अंचलों में किए गए प्रवास का विवरण सभा में रखा।

मुंबई से विशेष आमंत्रित सदस्या एवं प्रतिक्रमण संयोजिका ने प्रतिक्रमण प्रतियोगिता की रिपोर्ट प्रस्तुत

करते हुए बताया कि मेवाड़ अंचल में सबसे अधिक 170 महिलाओं सहित सभी अंचलों में कुल 255 महिलाओं ने प्रतिक्रमण कंठस्थ किया है। आपने आगामी रूपरेखा बनाकर कार्य करने का आग्रह किया।

आगामी क्रम में मेवाड़, बीकानेर-मारवाड़, जयपुर-ब्यावर, मालवा, मुंबई-गुजरात अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्षा/मंत्री द्वारा अपने-अपने अंचल की त्रैमासिक रिपोर्ट में संगठन, स्कूल चलें हम, केसरिया कार्यशाला, परिवारांजलि, शिविर, अक्षय तृतीया पर एकासन, युवती शक्ति, प्रतिक्रमण प्रतियोगिता, महत्तम महोत्सव, परिज्ञा शिविर व अन्य धार्मिक गतिविधियों की विस्तृत जानकारी से सभी को अवगत कराया, जिस पर सभी ने संतुष्टि व्यक्त की।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा ने महिला समिति के विभिन्न प्रकल्पों का त्रैमासिक आय-व्यय विवरण सभा के समक्ष प्रस्तुत किया तथा सभी उपाध्यक्षा-मंत्री से निवेदन किया कि रसीद बुक शीघ्रातिशीघ्र बीकानेर कार्यालय भिजवाने का लक्ष्य रखें।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा ने अपने उद्‌बोधन में समिति के उत्साहजनक कार्यों हेतु प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आग्रह किया कि समिति के कार्यों में हर समय अपने आपको तैयार रखें एवं मीटिंगों में शत-प्रतिशत उपस्थिति रखें। आपने महत्तम शिखर महोत्सव में और अधिक उत्साह के साथ जुट जाने की प्रेरणा दी।

समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा ने सभा को संबोधित करते हुए सभी से अनुरोध किया कि आपके क्षेत्र में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में कव्वाली के रूप में कोई आयोजन नहीं करें। रिपोर्टिंग सिस्टम के फॉर्मेट में परिवर्तन हेतु अपने सुझाव सदन के समक्ष प्रस्तुत करने का कष्ट करें। साथ ही प्रतिक्रमण कंठस्थ करने एवं अधिकाधिक श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करने का अनुरोध किया। आपने बीकानेर-मारवाड़ अंचल की सपना जी राखेचा, लूणकरणसर को परिवारांजलि कार्य के लिए तथा इसी अंचल को प्रीमियर लीग के लिए बधाई दी। मीटिंग में जयपुर-ब्यावर अंचल की पूरी टीम उपस्थित होने पर उन्हें साधुवाद दिया तथा सभी उपाध्यक्षा/मंत्री से अनुरोध किया गया कि वे पूरी टीम के साथ मीटिंग में उपस्थित हों। यूरोप संघ के गठन हेतु मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल टीम को धन्यवाद दिया गया। आपने केसरिया गणवेश धारण करने की प्रेरणा के साथ ही समिति द्वारा 24-25 अगस्त को आयोजित आवासीय शिविर '**स्वर्ण कुंभ**' के बारे में सूचित करते हुए इसमें भागीदारी हेतु स्थानीय अध्यक्षा/मंत्री से संपर्क करने का निवेदन किया। अंत में भीलवाड़ा संघ की उत्कृष्ट व्यवस्थाओं के लिए साधुवाद ज्ञापित किया।

जयंती बाई श्रमणोपासिका पुरस्कार हेतु राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा ने विजेता के रूप में राजश्री जी सुराणा, नोखा को मंच पर आमंत्रित किया एवं उपस्थित पदाधिकारियों ने ट्रॉफी व क्राउन पहनाकर सम्मान किया।

लीडरशीप ट्रेनिंग प्रोग्राम के संबंध में श्वेता जी बच्छावत ने जानकारी देते हुए आध्यात्मिक लेवल पर स्वयं को मन से मजबूत बनाने के लाभ बताए तथा कार्यों को व्यवस्थित रूप से निष्पादित करने का लक्ष्य रखने हेतु प्रोत्साहित किया। आपने संघ व अन्य सभी कार्यों में आपसी मतभेद व मनभेद का अंतर स्पष्ट कर सभा का मार्गदर्शन किया। संघ संमर्पणा गीत के सामूहिक गान के साथ मीटिंग का समापन हुआ।

-राष्ट्रीय महामंत्री

> ***"रात्रि के समाप्त होने पर, बीत जाने पर जैसे दिनकर प्रकट होता है, वैसे ही मोह के बीत जाने, नष्ट होने पर मोक्ष प्रकट होता है।***
>
> **–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.**

चातुर्मासिक स्थापना दिवस पर तेला तप का अंबार लगा

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के आह्वान पर चातुर्मासिक स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 18-20 जुलाई 2024 को संपूर्ण देश में तेला तप की आराधना की गई। अब तक प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार 210 क्षेत्रों में 1623 तेले संपन्न हुए। इनके अलावा एकासना, उपवास, आयंबिल, बेला, रात्रि संवर/पौषध आदि की भी आराधना हुई। इस कार्यक्रम में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी संघनिष्ठ सदस्यों का आभार। विस्तृत विवरण इस प्रकार है –

क्र.	अंचल का नाम	तेले	संघ सहभागिता
1	मेवाड़	405	37
2	बीकानेर-मारवाड़	68	17
3	जयपुर-ब्यावर	90	7
4	मालवा	455	29
5	छत्तीसगढ़-ओड़िशा	178	40
6	कर्नाटक-तेलंगाना-आंध्र प्रदेश	47	7
7	तमिलनाडु	29	4
8	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई	109	13
9	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	173	33
10	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा	34	12
11	पूर्वोत्तर	18	7
12	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी	17	4
	कुल	**1623**	**210**

"समीक्षण ध्यान के परिप्रेक्ष्य में '**समीक्षण**' का अर्थ संदर्भ स्पष्ट हो जाना चाहिए। समीक्षण शब्द का अर्थ है सम्यक् रीति से अथवा समतापूर्वक देखना, निरीक्षण करना। यह शब्द दो शब्दों सम्+ईक्षण के संयोग से बना है। इसका भावार्थ यह हुआ कि अपनी ही वृत्तियों को हम सम्यक् रीति से समभावपूर्वक देखें और निरंतर उनका निरीक्षण करते रहें। फलस्वरूप चित्तवृत्तियों की कलुषता हमको समझ में आएगी, तो यह भी समझ में आएगा कि उनका परिशोधन कैसे किया जाए?

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

सप्तम कार्यसमिति सभा में युवाओं ने माना सेवा को सौभाग्य

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में सत्र 2022-24 की सप्तम कार्यसमिति सभा का आयोजन 21 जुलाई 2024 को भीलवाड़ा में किया गया। सर्वप्रथम समता युवा संघ, भीलवाड़ा के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण हुआ तत्पश्चात् विगत समय में देवलोक हुई चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया तथा भीलवाड़ा समता युवा संघ के अध्यक्ष ने पधारे हुए सभी पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों का आत्मीय स्वागत-अभिनन्दन किया।

ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष ने देश के कोने-कोने से पधारे हुए सभी युवाओं का आत्मीय स्वागत करते हुए अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि परम पूज्य आचार्य भगवन् की महत्ती कृपा व उपाध्याय प्रवर के मार्गदर्शन से श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ आप के सहयोग के निरंतर विकास के पथ पर आरूढ़ है। संघ सेवा तो जीवन भर का कार्य है और हमारा सौभाग्य है कि इस व्यवस्था में हमारी भी भागीदारी है। हम सत्र 2022-24 के आखिरी पड़ाव में पहुँच गए हैं। लगभग 21 माह का समय हम सबने अपनी पूर्ण आस्था, संघ समर्पणा व सेवा के साथ उपयोगी बनाया है। आप सभी के सहयोग व गुरु समर्पणा से हमने धार्मिक गतिविधियों, प्रतियोगिताओं, शिविरों, उत्क्रांति, तरुण शक्ति, व्यसनमुक्ति व समता युवा संघ के सभी आयामों के साथ-साथ श्रीसंघ द्वारा प्रदत्त सभी आयामों में पुरजोर सफलतम प्रयास कर लक्ष्य तक पहुँचाया है। विगत तीन माह में अनेकानेक उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। उनमें से अभिमोक्षम् के रूप में एक विशेष उपलब्धि हम सभी के जीवन को स्वर्णिम पल के रूप में अनुभूति दे रही है। आचार्य भगवन् के संकेत को हम सबने शिरोधार्य कर स्वर्ण तिलक के रूप में अपने सिर पर सजाया है। इसमें समता युवा संघ के प्रत्येक सदस्य का पुरुषार्थ प्रत्यक्ष परिलक्षित हो रहा है। इस सत्र में महत्तम महोत्सव हम सभी के बीच में है। आचार्य भगवन् के दीक्षा प्रसंग के 50 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। हम शनैः शनैः शिखर दिवस की ओर बढ़ रहे हैं। इस दिवस हेतु जो समय शेष बचा है उसमें अपनी पूरी शक्ति व समर्पणा के साथ इसे लक्ष्य तक पहुँचाने का श्रम करें।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यसमिति सभा का विवरण सदन के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसे सदन में सर्वानुमति से पारित किया। गत तीन माह का प्रगति प्रतिवेदन भी पी.पी.टी. के माध्यम से रखा। सदन में उपस्थित राष्ट्रीय उपाध्यक्षगणों ने अपने-अपने अंचल का विगत तीन माह का प्रतिवेदन सदन में प्रस्तुत किया। सभा में आगामी कार्ययोजनाओं पर विचार-विमर्श हुआ।

सभा में पधारे हुए सभी सदस्यों व भीलवाड़ा संघ के आतिथ्य सत्कार तथा सुंदर व्यवस्था के लिए राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया। अंत में **'तेरे पावन चरणों में'** के सामूहिक संगान व अद्भुत समर्पणा तथा राम गुरु के जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई।

–राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

विशेष आमसभा

आगामी सत्र 2024-26 के लिए सुमित जी बम्ब

पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत

भीलवाड़ा, 21 जुलाई 2024। श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में सत्र 2022-24 की विशेष आमसभा भीलवाड़ा के सोना रिसोर्ट में 21 जुलाई को संपन्न हुई। सभा के प्रारंभ में समता युवा संघ, भीलवाड़ा द्वारा मंगलाचरण पश्चात् पदाधिकारियों को मंचासीन किया गया तथा विगत समय में देवलोक हुईं चारित्रात्माओं हेतु श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया। अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने पधारे हुए सभी युवा साथियों का आत्मीय स्वागत व अभिनंदन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में युवाओं को समता युवा संघ के गौरवशाली इतिहास का दिग्दर्शन कराते हुए प्रेरणीय शब्दों में कहा कि युवा संघ आप सभी साथियों के सहयोग से प्रगति पथ पर अग्रसर है। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों व पदाधिकारियों ने संगठन को मजबूत करने के साथ-साथ कर्मशीलता को अपना मुख्य ध्येय बनाया। युवा संघ आचार्य श्री नानेश के आशीर्वाद से अस्तित्व में आया तथा वर्तमान आचार्य श्री रामेश की सुखद छाँव में प्रत्येक सदस्य सेवा के अनुपम अवसर का लाभ ले रहा है। हम सभी का सिर्फ एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि आचार्य प्रवर के आयामों व संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना ज्यादा से ज्यादा हो, ताकि संघ का प्रत्येक सदस्य इनसे लाभान्वित हो सके। महत्तम शिखर वर्ष में सभी युवा साथी पूर्ण आत्मीयता से सफलता के कीर्तिमान स्थापित करने की ओर अग्रसर हैं। आप सभी के सहयोग के बिना इतने विशाल स्तर पर कार्य हो पाना संभव नहीं है। आप सभी इसी जोश व उत्साह के साथ अपने प्रदत्त गुरुत्तर दायित्व को निभाते चलें, यही अपेक्षा है।

सभा में श्री अ.भा.सा. जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष का आगमन हुआ, जिनका उपस्थित सदन ने भव्य स्वागत किया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने युवा साथियों को प्रेरणास्पद मार्गदर्शन प्रदान करने के पश्चात् समता युवा संघ के आगामी सत्र 2024-26 हेतु वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष **सुमित जी बम्ब, जयपुर** के पुनः मनोनयन हेतु प्रस्ताव सदन के पटल पर रखा, जिसे संपूर्ण सदन ने हर्ष-हर्ष, जय-जय की मधुर ध्वनि के साथ सर्वानुमति से पारित किया।

उपस्थित सभासदों ने अपनी जिज्ञासाओं के समाधान के साथ संघ विकास हेतु अपने बहुमूल्य सुझाव सदन में रखें। संपूर्ण सदन द्वारा नवमनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमित जी बम्ब को बधाई दी गई तथा राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने आगत सभी पदाधिकारियों व युवा साथियों का भावाभिनंदन किया। अंत में **'तेरे पावन चरणों में'** की मधुर स्वरलहरी एवं राम गुरु की जय-जयकार के साथ सभा संपन्न हुई। **–राष्ट्रीय महामंत्री**

सज्झायं

भगवान महावीर की अंतिम शिक्षा पर करें अनुप्रेक्षा

विषय पर आधारित

ओपन बुक परीक्षा

तृतीय चरण-उत्तराध्ययन 10वाँ व 19वाँ सूत्र (अध्ययन सम्मिलित पेज नं. 148 से 160 तक व 286 से 311 तक)

कुल अंक - 100

नाम ..... पिता/पति का नाम .....

जन्म दिनाँक ..... गाँव/शहर .....

जिला ..... राज्य ..... अंचल .....

रोल नं. ..... मोबाइल नं. .....

अंतिम स्वाध्याय सेवा वर्ष ..... स्वाध्याय सेवा शहर का नाम .....

परीक्षा के नियम :

1) सभी प्रश्नों के उत्तर का आधार '**युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म.सा. उत्तराध्ययन सूत्र - 10वाँ व 19वाँ अध्ययन**' ही रहेगा।
2) प्रश्नों के उत्तर में पुस्तक के साथ स्वयं का उपयोग लगाना भी अपेक्षित है।
3) प्रश्न पत्र बनाने में सावधानी रखी गई है, फिर भी त्रुटि होने पर सहयोग प्रदान करें।
4) उत्तर नीली या काली स्याही से ही लिखें।
5) उत्तर साफ-सुथरे अक्षरों में बिना काट-छाँट के लिखें।
6) परीक्षा में केवल वर्तमान स्वाध्यायी और निकट भविष्य में स्वाध्यायी सेवा देने की अभिलाषा रखने वाले श्रावक/श्राविकाएँ ही भाग ले सकते हैं।
7) **प्रश्न पत्र भेजने का पता - श्री गणेश जैन ज्ञान भंडार, समता भवन, नौलाईपुरा, रतलाम, 457001 (मध्य प्रदेश)। हेल्पलाइन नं. 9669010541**

   प्रश्न पत्र भेजने की अंतिम तिथि **20 अक्टूबर 2024** तक निर्धारित स्थान पर पहुँचाना परीक्षार्थी की जिम्मेदारी होगी।

:::: प्रश्न पत्र ::::

प्र.1) गाथाओं के पदों को सही करके लिखिए। 10 × 2 = 20 अंक

(i) सुही गच्छइ य से होइ गोयरं जया तया।

उत्तर .....।

(ii) पुत्तस्स निसम्म महापभावस्स भासियं महाजसस्स मियाइ।

उत्तर .....।

(iii) पुत्ता! पभू न हु सामण्णमणुपालिउं सी तुमं।

उत्तर .....।

(iv) विविहा आयंका अरई फुसन्ति गण्डं विसूइया तं।

उत्तर .....।

(v) अम्मापियरो बहुविहं सो अणुमाणित्ताण एवं।

उत्तर .....।

(vi) धम्मं परं काऊणं एवं जो भवं गच्छइ पि।

उत्तर .....।

(vi) सद्दहणा उत्तमं लद्धूण दुल्लहा सुइं वि पुणरावि।

उत्तर .....।

(vii) चिरकालेण भवे माणुसे सव्वपाणिणं दुल्लहे वि खल।

उत्तर .....।

(ix) मग्गे विसमेवगाहिया जह अबले मा भारवाहए विसमेवगाहिया।

उत्तर .....।

(x) मुणी खिंसएज्जा पविट्ठे जो हीलए एवं गोयरियं वियं नो।

उत्तर .....।

प्र.2) एक/दो शब्द में उत्तर दीजिए। 15 × 1 = 15 अंक

(i) निर्वाण गुणों को प्राप्त कराने वाली किस को धारण करो? .....।

(ii) कौन पानी से लिप्त नहीं होता है? .....।

(iii) मृगापुत्र स्वयंबुद्ध होने के कारण क्या बने थे? .....।

(iv) उत्तम धर्मश्रवण का अवसर किसको नहीं मिलता? .....।

(v) साधु किसका अभिनंदन नहीं करे? .....।

(vi) मृग कैसे होते हैं? .....।

(vii) मनुष्य जन्म पाकर भी किसको पाना दुर्लभ है? .....।

(viii) किसके बिना केवलज्ञान नहीं होता है? .....।

(ix) परीषह सहन किसका हेतु है? ....।

(x) दुःख व क्लेशों का भाजन क्या है? ....।

(xi) क्या स्वाद-रहित है? ....।

(xii) भोगादि की स्पृहा होने पर क्या दुष्कर लगते हैं? ....।

(xiii) यौवन में क्या दुष्कर है? ....।

(xiv) समस्त सिद्धियों में प्रधान सिद्धि क्या है? ....।

(xv) मृगापुत्र ने किसके प्रति असहिष्णुता प्रकट की? ....।

प्र.3) गाथा के प्रत्येक चरण का एक शब्द ABC में से लेकर गाथा पहचानकर लिखें, गाथा संख्या व अध्ययन क्रमांक भी साथ लिखें। 10 × 2 = 20 अंक

A	**गुणावहं**	**आउए**	**उत्तमं**	**पुच्छइ**	**निच्चं**	**पुणो**	**पुण**	**पंच**	**या**	**धुव**
B	**समयं**	**भत्तं**	**वहिएण**	**मिगे**	**बंधं**	**धणं**	**वायए**	**पारं**	**अम्मो**	**दुल्लहा**
C	**हीलए**	**जीवो**	**सि**	**गोयम**	**विवद्धणं**	**मा**	**देई**	**दुक्खं**	**जणे**	**वेयणा**
	1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**

(i) ....।

....।।

(ii) ....।

....।।

(iii) ....।

....।।

(iv) ....।

....।।

(v) ....।

....।।

(vi) ....।

....।।

(vi) ....।

....।।

(vii) ....।

....।।

(ix) ....।

....।।

(x) .....।

.....।।

प्र.4) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में देवें तथा प्रत्येक उत्तर के शब्द में से एक अक्षर लेकर दो शब्दों का एक शीर्षक बनाइए। **7 × 1, 3 × 1 = 10 अंक**

(i) नरकों में क्या नहीं होते? ..... ☐

(ii) मैं कहाँ अनंत बार जलाया गया? ..... ☐

(iii) अग्नि के जीव लगातार कितने काल तक जन्म-मरण करते हैं? ..... ☐

(iv) लौकिक लाभ की आकांक्षा से क्या करना इहलोक निश्रित है? ..... ☐

(v) अकलेवरों की श्रेणी पर आरूढ़ होकर तू क्या प्राप्त करेगा? ..... ☐

(vi) प्रासाद के गवाक्ष में स्थिर होकर मृगापुत्र क्या देख रहा था? ..... ☐

(vii) जब तक सर्व बल विद्यमान है तब तक साधक क्या कर सकता है? ..... ☐

प्र.5) आगे-पीछे हुए अक्षरों को सही करके शब्द लिखिए। **10 × 1 = 10 अंक**

(i) रो ही ण गा वा .....

(ii) मि इ स्ता सा र .....

(iii) त्ति पो वृ का ती .....

(iv) ता प प्रा क - .....

(v) ओ मा भ ग व .....

(vi) हि स वे या पि .....

(vii) को क न शु ल .....

(viii) द्य व न अ - .....

(ix) वि णा क्ख प य .....

(x) मू क्ख ल रू म्मि .....

प्र.6) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए। **10 × 1 = 10 अंक**

(i) साधक को अपने चारित्र मार्ग के प्रति ..... दृष्टि रखनी होती है।

(ii) ..... की तरह बड़े-बड़े महाकाय यंत्रों में पीला गया हूँ।

(iii) ..... एवं ..... होकर शांतिमार्ग को बढ़ाते हुए विचरण करो।

(iv) तुम्हारे और हमारे सब के ..... तीर्थंकर महावीर है।

(v) ..... आहार मिलने या न मिलने पर भी जो ..... में स्थित है।

(vi) ..... ज्ञान होते ही उसने ..... का स्मरण किया।

(vi) संसार की प्रत्येक .....एवं ..... वस्तु नाशवान है।

(vii) साधक ..... में जाकर संयमधन को गँवा देता है।

(ix) ..... यह संसार का विशेषण है।

(x) ..... भगवान नहीं चाहते थे कि कोई उनके प्रति ..... से बद्ध रहे।

प्र.7) सही-गलत बताइए। **15 × 1 = 15 अंक**

(i) मैं भी मृगचर्या का आचरण करने का संकल्प लेता हूँ। .....

(ii) एक दिन अवश्य ही तुम सिद्धि लोक को प्राप्त करोगे। .....

(iii) गौतम स्वामी पदार्थों में अमूर्च्छित नहीं थे। .....

(iv) जीव का अमुक काल तक एक जन्म में जीना भवस्थिति है। .....

(v) देश की सीमा पर रहने वाले ही दस्यु कहलाते हैं। .....

(vi) तुम्हारी आत्मा सब प्रकार से कृश हो रही है। .....

(vi) जो राग तीर्थंकर के प्रति है वही राग स्त्री-पुत्र के प्रति हो तो प्रशस्त है। .....

(vii) मृगापुत्र! देवों का वचन प्रमाण है या तीर्थंकरों का? .....

(ix) महानाग अपनी केंचुली छोड़कर आगे बढ़ जाता है, एक बार ही पीछे मुड़कर देखता है। .....

(x) विषयों में अनुरक्त और संयम में विरक्त मृगापुत्र ने इस प्रकार कहा। .....

(xi) मगरों को पकड़ने के जालों से मृग की तरह बना हुआ मैं अनंत बार बींधा गया। .....

(xii) वह मृग कभी किसी वल्लर में अपने आहार की तलाश के लिए जाता है। .....

(xiii) वह एक ही स्थान में निवास नहीं करता तथा ध्रुव गोचर होता है। .....

(xiv) जिनकी भावना सम्यक् है, वे प्रज्ञादि से संपन्न हैं। .....

(xv) एक दिन तुम भी वैसे ही हो जाओगे जैसे कि कल हम हैं। .....

आयोजक :

समता प्रचार संघ

अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर (राज.)

सुधी पाठकों से निवेदन!

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के मुखपत्र श्रमणोपासक के 62 वर्ष के सफर में अनेक अवसरों पर विविध विषयों पर विशेषांकों का प्रकाशन किया गया है। इन विशेषांकों में विषय संदर्भित सामग्री को प्रमुखता से प्रकाशित करने के साथ-साथ धर्म-ध्यान, तप-त्याग संबंधी विषय सामग्री को भी प्राथमिकता देते हुए प्रकाशित किया गया है। पठनीय, सारगर्भित एवं रुचिकर सामग्री होने से अनेक गणमान्य पाठकों ने इसकी प्रतियाँ संजोकर रखी हैं। चूँकि समय-समय पर संदर्भ के रूप में इन विशेषांकों की आवश्यकता होती है तो बहुत से स्थानों पर इन विशेषांकों की प्रतियाँ भेजी जाती हैं, जिसके कारण केंद्रीय कार्यालय में इनकी बहुत ही अल्प प्रतियाँ संरक्षित हैं। आप सुधी पाठकों से निवेदन है कि यदि आपके पास इन विशेषांकों की प्रतियाँ सुरक्षित रखी हों तो उन्हें केंद्रीय कार्यालय - **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, जैन कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)** को भिजवाने का कष्ट करें। इस विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए आप **संपर्क सूत्र 9799061990** पर संपर्क कर सकते हैं। आपकी जानकारी के लिए विशेषांकों की सूची इस प्रकार हैं।

क्र.सं.	विशेषांक का नाम	प्रकाशन वर्ष
1.	**आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. शताब्दी विशेषांक**	**20 सितंबर 1996**
2.	**समता विशेषांक**	**25 अगस्त 1978**
3.	**बाल विशेषांक**	**1979**
4.	**धर्मपाल विशेषांक**	**10 मार्च 1984**
5.	**रजत जयंती विशेषांक**	**25 सितंबर 1987**
6.	**संयम साधना विशेषांक**	**25 मार्च 1990**
7.	**युवाचार्य विशेषांक**	**10 दिसंबर 1992**
8.	**दीक्षा विशेषांक**	**मार्च 1992**
9.	**गणपतराज जी बोहरा विशेषांक**	**अगस्त 1999**
10.	**आचार्य श्री नानेश स्मृति विशेषांक**	**2000**
11.	**साध्वी श्री इंदर कँवर जी म.सा. विशेषांक**	**20 फरवरी 2012**
12.	**स्वर्ण जयंती विशेषांक**	**20 नवम्बर 2012**
13.	**युवाचार्य पदारोहण विशेषांक**	**20 सितंबर 2017**

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव - महत्तम शिखर

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा महोत्सव का चरम स्वरुप

आचार्य श्री नानेश के 25वें स्मृति दिवस
एवं
आचार्य श्री रामेश के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में

रक्तदान

आओ! बचाएं किसी की जान, करें रक्तदान

रविवार
13 अक्टूबर 2024

Save a life
Give Blood

← विशाल रक्तदान शिविर में रजिस्ट्रेशन करने के लिए
← इस QR CODE को स्कैन करें एवं रक्तदान देने की
← स्वीकृति प्रदान करें।

आयोजक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
निवेदक-महत्तम शिखर आयोजन समिति

Helpline (+91)7020661020 | mahattammahotsav@gmail.com | Mahattam Mahotsav

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'महत्तम आनंद'** व **'स्व-पर आनंद'** विषय पर आधारित रहेगा।

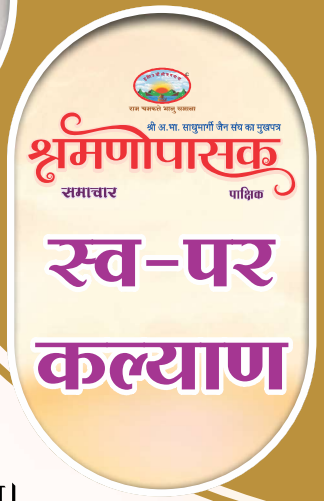

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ – लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो, तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

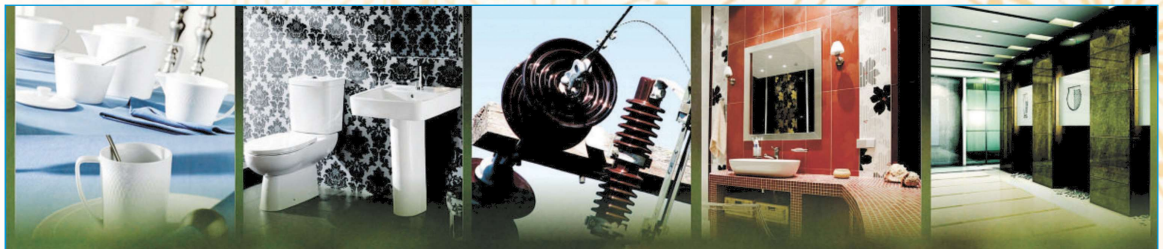

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन

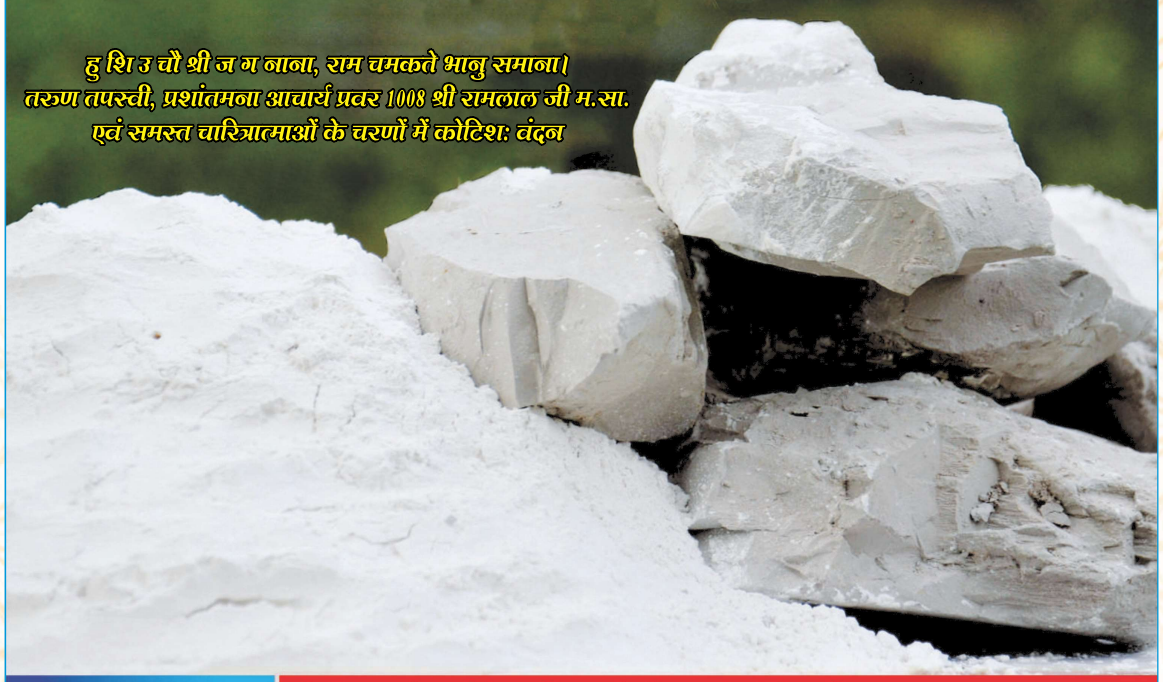

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरूण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	6375633109	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	7976519363	
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	7231933008	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

84 GOLDEN YEARS

डी. पी. ज्वेलर्स पर हर दिन है कलात्मकता का उत्सव

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिश: वंदन!

DP

D.P. Jewellers

A BOND OF TRUST SINCE 1940

A VENTURE OF D.P. ABHUSHAN LIMITED

TOLL FREE No.: 1800 202 0339

www.dpjewellers.com

@absjainsangh

www.facebook.com/HOSadhumargi

✦ रतलाम (07412-408900 ✦ इन्दौर (0731-4099996 ✦ भोपाल (0755-2606500 ✦ उज्जैन (0734-2530786
✦ उदयपुर (0294-2418712/13 ✦ भीलवाड़ा (01482-237999 ✦ कोटा (0744-2500009 ✦ बांसवाड़ा (02962-250007

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261